दावना इत्यादिक बहुत कल्पना मूरख लोग करता है ताका समा
धान के अर्थ यह पुस्तक मुंबई मे पंडित श्रीधर शिवलालजी के
ज्ञानसागर छापखानामें पंडित मन्नालालजी मानपुरवालेनें
छपवाय कर प्रसिद्ध कियाहैं॥ ॥संवत् १९४२ शक १८०७
मिति आश्विन शुक्ल १० रविवार ता॰ १७ अक्टोबर स॰ १८८५
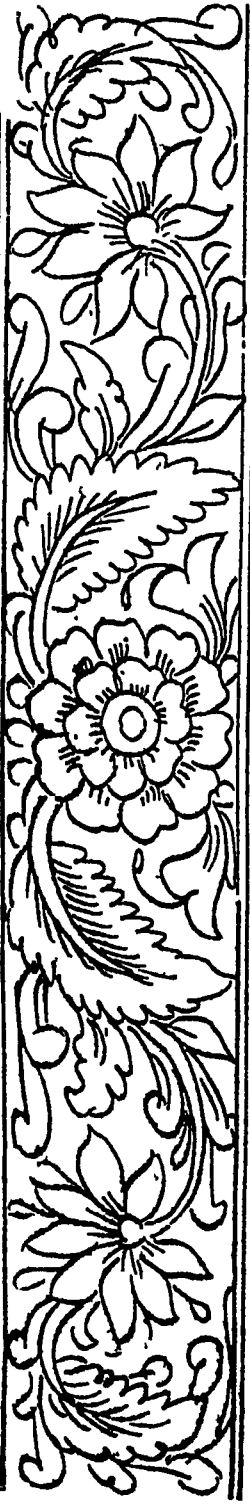
करि कहाजोतीनलोकविषैंजोजो सुखहै सो सर्वपूजाकाफलकरिपावैहै यह निःसंदेहहै॥ ऐसेपूजाकाफलकास्वरूपहै॥ इतिपूजाफलसमाप्तम्॥ ॥ छ॥ ॥ छ॥
॥ ॥ इतिमनोमतिखंडनग्रंथसमाप्तः॥ ॥ ॥

जैनदिगंबर आमनायमे केताक ग्रहस्ती भोगी पाप अपराध विषय भोग तो छोडते नहीं अर भोगी ग्रहस्तीका दर्जामे दीप धूप चंपा चमेली मोगरादिकसे पूजन करना दिगंबर आचार्य उपदेश ग्रंथांमें जैनपुराणमें लिखगये ताकुं मूरखमनोमति नमानतेसंते कहतेहै के जिनमूर्तिकेचरणकुं केशर नहीं लगावणा दही दूधका अभिषेक नहीकरणा हरयाफल फूल नहींच

जससीय ॥ १ ॥ टीका ॥ विजयपताकाध्वजैः नरोसंग्रा
खेषुविजयोभवतिषट्खंडविजयनाथोनिःप्रतिपक्षोयश-
स्वीच ॥ १ ॥ अर्थ ॥ बहुरिप्रभुकेमंदिरविजयपताकाकहि
येध्वजादेवैहैं ताकरि मनुष्यहैसो संग्रामके मुखविषैताकी
विजयहोयहै ॥ बहुरि छहखंडकोविजयनाथजोचक्रवर्ति
पदकुंपावैहै ॥ बहुरि प्रतिपक्षजो शत्रुरहितयशस्वी होयहै
॥ बहुरि औरभी अनेकगुणहोयहैं ॥ गाथा ॥ किंजपिए-
एबहुणातीसविलोएसकिंपिजंसोखं ॥ पूजाफलेणसव्वं
याविज्जइएत्थिसंदेहो ॥ १ ॥ टीका ॥
ष्वपिलोकेषुकिमपियत्सुखंतत्सर्वं पूजाफलेणप्राप्नोति ना-
स्तिसंदेहो ॥ २ ॥ अर्थ ॥ इहांआचार्यकहेहैं ॥ बहुकहिवे

मरदुलेहै सोराजाहोयहै ॥गाथा ॥ अहिसेयफलेणणरो॥ अहिसिंचिज्जइसुदंसणस्सुवरिंखिरोफजलेणसुरिंदयसु हदेवेहिंभतीए ॥१॥ टीका ॥ अभिषेकफलेननरोभिषेकं- प्राप्नोतिसुदर्शनमेरोपरिक्षीरजलेनसुरेंद्रप्रमुखदेवैभक्त्या ॥१॥ अर्थ ॥ बहुरिप्रभुकोजलादि पंचामृतकरिअभिषेक करैताकाफलकरिपुरुषहै ॥ सोसुदर्शनमेरुऊपरिदेवनि काइंद्रआदिदेवाकरिभक्तिपूर्वकक्षीरसागरकाजलकरि- अभिषेककुंपावैहै॥ ऐसाजिनस्नपनकाफलहैं॥ भावा र्थ ॥ तीर्थंकरहोयहै ताकाजन्मसमय इंद्रादिकदेवमेरु परिअभिषेककरैहै ॥ गाथा ॥ विजयपडाएहिंणरोसंगा ममुहे सुविजइउहोइ ॥ छखंडविजयणाहोणिप्पडिवखो

विमाणेसु ॥ १॥ टीका ॥ घंटादिभिः घंटाशब्दाकुलेषु प्रवर
अप्सराणांमध्येसंक्रीडयंतिसुरसंघातसेविनः वरविमानेषु
॥ १॥ अर्थ ॥ जोप्रभुकेमंदिरमैंघंटादेवैहै ताकाफलकरि
घंटाकेशब्दकेंविषैंव्याप्त बहुरिसुंदरअप्सरांकावृंदकेमध्य
मैं॥ बहुरिदेवांकेसमूहकरिसेवितश्रेष्ठविमानकेविषैंक्रीडा
करैहैं॥ गाथा ॥ छत्तेहिएयछत्तंभुंजइपुहविसवत्तपरिही-
णो ॥ चामरदाणेणतहाविज्जिज्जइचमरणिवहेहिं ॥ १॥
टीका ॥ छत्रदानेनैकछत्राधिपत्यं भुंजयतिपृथ्वींशत्रुपरिर-
हितचामरदानेनतथाढोलमानेसतिनृपदेहि॥ १॥ अर्थ ॥
बहुरिछत्रदानकादेवैकरिनृपतिहोयहै॥ १॥ भावार्थ ॥ छत्र
करितोताकेशरीरऊपरिछत्रफिरैहै ॥ अरचमरकरिताकेच-

होयहै ॥ जाकरि सर्वतीनलोकके चरावर पदार्थनिकुंप्र
पदेखेहैं ॥ सोदीपकका पूजबैतैं ऐसा फलहै ॥ गाथा ॥ गि
रेणसिसिरपरधवलाकितिधवलीयजयनउपुरिसोजाइफलो
हिसंपत्तपरअणिव्वाणसोखफलो ॥ १ ॥ टीका ॥ धूपेणसि
सिरतरधवलकीर्तिधवलितजगत्त्रयः पुरुषः जायते फलैः सं
प्राप्त परमनिर्वाणसुखफलं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ प्रभुके आगे धूपकुं
प्रज्वल्य करि पूजैहै ॥ ताकरि चंद्रमासमान अति उज्जल कीर्ति
करि धवलित कीयाहै तीनलोक जानै ऐसा पुरुष होयहै ॥ बहु
रि फलका चढावै करि परमनिर्वाणसुखफलकुं पावैहै ॥ भावा
र्थ ॥ मोक्षपरमसुखकुं पावैहै ॥ गाथा ॥ घंटाहिं घंटसदाऊ
॥ लेसुपवरच्छराणमझम्मि ॥ संकीडइसुरसंघायसोविउवर

नाकासमुद्रकीवेलातरंगसमानशरीरकुंपावैहैं॥
क्त नैवेद्यसूं पूजाकरै ताकैफलहोयहैं॥ गाथा ॥ दिवेहिंदे
वयासेसंजीवदव्वाइतच्चसब्भावोसब्भावजाणियकेवे
वतेएणहोइणरो॥ १॥ टीका ॥ दीपकेदीपितअशेषजी
वद्रव्यादिकानितत्वसद्भावोसद्भावजनीतकेवलप्रदीपतेए
नभवतिनरो॥ १॥ अर्थ ॥ प्रभुकुंदीपकरिपूजेहैताके
स्तदिशाजोदिशोदिशाविषेउद्योतरूपदीपशिधिकाधारै
रीरसंदरहोयहैं॥ बहुरिजीवद्रव्यअररसततत्वनिकाउद्योत
काकारणहोयहै॥ बहुरिशफहस्वभावकरिकेवलज्ञानकुंउ
पायताकरिप्रकाशरूपहोयहैं॥ सोएसापुरुषदीपपूजाके
फलतैंजानना॥ भावार्थ ॥

मायुधद्रशांभवंतु ॥ १॥ अर्थ ॥ प्रभुकीपुष्पांकरि
नाकरिकमलवदनीतरुणीजनकेनेत्ररूपीपुष्पां ।वर
मालाकरिआवृतदेहकाधारीहोयहै ॥ बहुरिकामदेवका
रूपकाधारीहोयहै ॥ भावार्थ ॥ ताकारूपकुंदा
दनीस्त्रीजनताकुंवरैहै ॥ ऐसेपूर्वोक्तफूलतेंपूजाकरेताके
फलहोयहै ॥ गाथा ॥ जायइणिविजदाणेणसतिगोकं
तितेयसंपणो ॥ लावणजलहिवेलातरंगसंपावीयसरी
रो ॥ १ ॥ टीका ॥ जायतेनैवेद्यदानेनशक्तिवंतकांतितेजस्वं
संप्राप्तिलावण्यजलधिवेलातरंगेणपवित्रशरीरो ॥ १ ॥
अर्थ ॥ प्रभुकेआगेनैवेद्यदानकादेवाकरिपुरुषशक्तिवं
तहोयहै ॥ बहुरिकांतिवानतेजस्वीहोयहै ॥ बहुरिलावण्य

अक्खीणलद्धिजुत्तोअक्खयसोक्खंलपावेइ ॥ १॥ टीका ॥
जायतेक्षयनिधिरत्नानांस्वामीकः अक्षतैः अक्षोभः अक्षी-
णलब्धियुक्तोक्षयसौख्यंच माप्नोति ॥ १॥ अर्थ ॥ बहुरि
जोभव्यजिनेंद्रकुं अक्षतकापुंजकरि पूजैहै ॥ सोनवनिधि
चतुर्दशरत्न निकास्वामीहोयहै ॥ भावार्थ ॥ षट्खंड
मींजोचक्रवर्तीहोयहै ॥ बहुरिअक्षोभकहिये निराकुल-
अक्षिणलब्धिकरियुक्त अक्षिणसुखजो मोक्षकै
पावैहै ॥ गाथा ॥ कुसुमहिंकुसेसयेवयण
तापणकुसुमवरमालावलयेणच्चियदेहो ॥ जायइकुसु
उहोच्चेव ॥ २॥ टीका ॥ कुसुमैः कमलवदनी तरुणीजना
नांनयनकुसुमवरमालावलयनिश्चयदेहोजायतेकुसु-

णणरो जायइसोहग्गसंपण्णो ॥२॥ टीका ॥ जल
क्षेपणेनपापमलंशोधनंभवेन्नियमेण चंदनलेपेननरोजा
यतेसौभाग्यसंपन्नो ॥२॥ अर्थ ॥ जोनरजिनेंद्रदेवकेबिंब
केआगेजलकीधारापूजावसरविषेंनिक्षेपेहै तिनिकरिनि·
श्चयकरिताकेपापमलकाशोधनहोयहै ॥ भावार्थ ॥ ता·
केपूर्व तथा वर्तमान पापरूपी मलका ॥
जलकीधाराकरिपूजाकाफलहै ॥
रण कमलयुगलउपरिचंदनकालेप क
करिसंपन्नहोयहै ॥ ऐसैंचदनकाविलेपनकाकरिवैकाफ·
लहै ॥ इनिकाप्रश्नोत्तरपूर्वकियाइहै ॥ बहुरि ॥ गाथा ॥
जायइअस्कपणिहिरयणसाभिऊअरकणहिंअरकोहो ॥

रावे ताका फलकहेहैं ॥ गाथा ॥ जेपुणजिणिंदभवणंसमु
एणयंपरिहितोरणसम्मग्गं ॥ णिम्मावइतस्यफ
लणिऊसयलम् ॥ १ ॥ टीका ॥ यः पुनः जिनेंद्रभवनंसमुत
न्नपरिधीतोरणेनसमग्रंनिर्म्मापयति तस्यफलंकः शक्नो
तिवर्णितुंसकलं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ बहुरिजो भव्यजं
देवकामंदिरकुंशिखरबंध बहुरि परिकमा ॥
संयुक्त करावेहै ॥ ताका संपूर्ण फलकुंकहिवेनेंकोणसम
र्थहै ॥ भावार्थ ॥ ताके महापुण्यफलहोयहै ॥ ताकुं
एंकहिवेकुं केवलीविनाकोनसमर्थनहिहैं ॥ आगेपूजा
का फलकुं पृथक्पृथक्करिकहेहैं ॥ गाथा ॥ जलधारा
णिखवणेण पावमलंसोहणंहवेणियसेण ॥

र्थयपुण्यम् ॥ २॥ टीका ॥

र्थंकरपुण्यं॥२॥ अर्थ ॥जोभव्यजीवकुंदुंबर
असमानजिनमंदिरवणायकरि ताके विषेसरस्युंकादाणा
बराबरिजिनप्रतिमाकुंस्थापन करैहैसो नरतीर्थंकरका
कुं पावैहै॥ भावार्थ ॥तीर्थंकरहोयहै॥इहांकटुंबरकेप-
असमान जिनमंदिर तथासरस्युंसमानजिनबिंबकह्या
सातैंकह्याहै॥
डामंदिर प्रतिमावणिसकैनाहिं॥
भीतीर्थंकरपदपावैहै॥ ऐसेजा सदैवयामैंनिः प्रमादि
रहिणा॥अरुचिनलावना॥ आगेशिखरबंधबडामंदिरक

स्मादहंनिजशक्त्यास्तोकवचनेनकिमापिवक्ष्यामिधर्म्मानुरा
गरक्तोयेनभाविकजनोभवतिफलसर्व्वं ॥२॥ अर्थ ॥
गकापाठीकहिये वाच्यारअंगादिपूर्वोक्तग्यारहअंगकेपाठी
हजारजिव्हाकरि तथास्करेंद्रभी पूजासर्वकाफलकुंकहिवेंअ
शक्तीहैं ॥ यातेंआचार्यकहेहैं ॥ हमारिनिजशक्तिकरि थोरेव
चनकरिके किंचितकहाकहें ॥ यातेंकिंचितकहेहैं ॥ यातें
नुरागाशक्तजोभव्यजनसर्वोहिहोय ॥ भावार्थ ॥
के पाठक तथाइंद्रभी पूजाकेफलकुंहजारजिव्हाकरिसंपू
र्णकहिनाशके ॥ तातेहमकिंचित्थोरे वचनकरिकहेहें ॥
सोपृथक् पृथक् कहेहैं ॥ गाथा ॥ कुंथुभरिदलमेत्तंजिण
भवणंजोठवेइजिणपडिमंसरिसवमेत्तं ।

जा १ भावपूजा १ इनिकुंधर्मानुरागतैंदेशव्रतीश्रावकनि-
त्ययथायोग्यकरै ॥ यथायोग्यजोजैसिश्रापकीव्रतीहोयतै
सिप्रकारकी तथायथावसरकीपूजाकरै ॥ बहुरिधर्मानुराग
मैंआसक्तहोयकरिकरैसोयाकेविषैंअत्यंतप्रीतितैंभक्ति
करिकरैयामैंपरमोदकेदूषणनलागैऐसाहोयकरि ॥ ॥
इतिषड्विधिपूजा ॥ आगेपूजाकाफलकावर्णनकरैहै ॥ गा
था ॥ एषारसांगधारिजीहसहस्सेणस्सरवरिंदोबिपूजाफलं
णसकोणिस्सेसबाणिउज्जह्मा ॥ १ ॥ तह्माहणियसत्तीए ॥ थो
यवयणेणकिंपिबोछामिधम्माणुरायरत्तोभवियज्जणोहो
इजंछलो ॥ २ ॥ टीका ॥ एकादशांगधाजिव्हासहस्त्रेणसुर
रेंद्रोपिपूजाफलंनशक्नोतिनिश्शेषवर्णितंयस्यात् ॥ १ ॥ त-

नहै॥ अथवा आगमनो आगम आदि भेदकुं शास्त्रकै मार्गक-
रि जानकरि देशव्रती श्रावगनै भावपूजा करनी ऐसै रूपातीत-
का स्वरूप कह्या॥ इतिरूपातीत तथा भावार्थ पूजा ॥
पूर्वोक्त छह प्रकारकी पूजा का कथनकुं समुच्चय करि कीं
ताकुं पूर्ण करै हैं॥ गाथा ॥ ऐसा छह विह पूजा णिच्चं
रायरत्तेहिं ॥ जह जोगे कायव्वा सव्वेहिं मि देस विरएहिं॥ १॥
टीका ॥ एष षड्विधि पूजा नित्यं धर्म्मानुरागरक्तैः पुरुषैः
योग्यं कर्त्तव्या सर्वै देशविरतैः॥ १॥ अर्थ ॥ ऐसै यह छह प्र-
कारकी पूजाकुं धर्म्मानुरागमैं आसक्त होय करि नित्य प्रति दे
शव्रती श्रावगनै यथायोग्य करनी॥ भावार्थ ॥ पूर्वोक्त ना-
मपूजा १ स्थापनापूजा १ द्रव्यपूजा १ क्षेत्रपूजा १ कालपू

त्वाभावपूजाकर्त्तव्यादेशाविरतेः॥२॥ अर्थ ॥ वर्णकहिये ने
त्रकाविषैय पांच जेस्वेत १ श्याम १ पीत १ रक्त १ हरितएक
१ इनुपांचूंकरि बहुरिरसकहिये॥ जिह्वाकेविषयजे कटु
क १ मिष्ट १ तिक्त १ आम्ल १ कौसायल इनिपांचकरि॥ बहु
रिगंधकहिये नासिकाकेदोयविधिविषयजे सुगंध दुर्गंध-
करि॥ बहुरिस्पर्शकहिये अष्टप्रकारकेशरीरकाविषयजे-
गुरु १ लघु १ सीत १ उष्ण १ कोमल १ कर्कर्ष १ रुक्ष १ स्निग्ध
१ याकरि १ ऐसेशरीरकेसर्वबीसभेदकरिवर्जितअपनाआ
त्मस्वरूपज्ञानमयीदर्शनमयीकुंजोध्यावै सोरूपातीतना
माध्यानहै॥ भावार्थ ॥ पुद्गलतेंजुदाअपनाआत्मिकस्वरू
पजाणिकरि बहुरिज्ञानदर्शनरूपीध्यावैसोरूपरहितध्या

आदिउच्चारकाशब्दरहितध्यावैहैसोरूपस्थध्यानहैयाकाफल सहस्रगुणाहै॥ ऐसैंअनुक्रमसेंफलजिनसेनादिआचार्यनि नैकह्याहैं॥सोश्लोककरिकहियेहै॥ तदुक्तं॥ श्लोक॥ वाचिकस्त्वेकएवास्यादुपांशुः शतउच्यते॥ सहस्रंमानसंप्रोक्तं जिनसेनादिसूरिभिः॥१॥ आगेरूपातीतनामाध्यानकास्वरूप कहेहैं॥ गाथा॥ वण्णरसगंधफासेहिं॥ बज्जिउणाणदंस-

एवंतंझाणंरूवरहियन्तिः॥१॥

गमणोआगमाइभेणहिकत्तमगोणणाऊणभावपूयघादेसविरणहि॥२॥ टीका॥ वर्णरसगंधस्पर्शैः वर्जितो ज्ञानदर्शनस्वरूपोयत्ध्यायति॥एवंतत्ध्यानंरूपरहितमिते॥१॥ अथवाआगमतोआगमादिभेदैः

कैनहीलिखाउसकाकारणइसमैजंत्रमंत्रकुंआदिलेरवर्णे
नहैइसवास्तेइहांनहीवर्णनकियाहै ॥ इसदोनोकाभावार्थ
॥ पदस्थध्यानमैंअररूपस्थमैइतनाविशेषहै ॥जोपदस्थ-
तोमंत्रकेअक्षरकामुखतेंउच्चारकरिहोयहै ॥ बहुरिरूपस्थमे
ताकामनहिमैंचिंतवनाहोयहै याकाउच्चारनहीहोयहै ॥याते
उच्चारतेंचिंतवनकाफलअधिकहै ॥सोकहियेहै ॥ जोपूर्वोक्त
मंत्रानिकुं मुखथकिउच्चारकरिजपैहै ताके एकगुणाफलहोय
हैं ॥ बहुरिजोमंदस्वरकरिआपकाआपहीकुंजाणपणारहै ऐ
सेजापपढैहै ॥ भावार्थ ॥ मुखहोटबाहिरशब्दनाहिंकढैतैसे
जपैताकेउच्चारफलतेंएकसोगुणाफलहोयहै ॥ बहुरिजोम-
नहिमैवर्णोच्चारकुंशब्दजपैहै चिंतवनकरिध्यावैहै मुखहोठ

ऐसाउत्तमांगजोमस्तककुंजाणै ऐसैंअपनीदेहकुं लोकस्वरू
पंडस्थानामाध्यानजानना॥ भावार्थ॥
यहलोकहैसोअधोमध्यऊर्ध्वभेदकरिसंयुक्तपांवपसारैंखड़ा
मनुष्यआपनीकटिन्यहस्तयुक्तहैसोडोदग्रदंगाकारहैं॥यातें-
अपनाशरीरविषैंकमसुलोकूकास्वरूपजिनागमतेंजाणिकरि
चेंतवनकरिंआपनेभालविषैंसिद्धस्थानककुंध्यावै सो।
ध्यानहैं॥याकाविशेषविस्तारज्ञानार्णवादियोगशास्त्रनितेंजा
नना॥ तथालोककास्वरूपत्रिलोकसारप्रमुखआगमतेंजान
ना॥ इतिपिंडस्थज्ञानम्॥ आगेपदस्थनामादूसराध्यान-
कावर्णन औररूपस्थनामातीसराध्यानकावर्णनज्ञानार्णव
आदिलेरअनेकग्रंथोमैंहैसोवहांसेंजानना यहांविशेषकर

॥४॥ अर्थ ॥ अथवा आपणा शरीरमैं नाभिमंडलकामेरुकी
कल्पनाकुं करि ताके अधोभागकुं छोडि ताकौं निचै अ-
स्वरूपकुं ध्यावै ॥ बहुरि नाभिके बाह्य दोउ तरफ वर्तुलाकार म-
ध्यलोककुं ध्यावै ॥ बहुरि ताके ऊपरि आपना कांधापर्यंत कल्प-
विमान कहिये सौधर्मादि षोडश स्वर्ग करि मंडित स्वर्गलोककुं
ध्यावै ॥ बहुरि ताकै ऊर्ध्व अपनी ग्रीवावा
कुं ध्यावै ॥ बहुरि तिसी ग्रीवाके प्रदेशनिमैं अनुदिशि विमाननि
कुं चिंतवै ॥ बहुरि अपना मुष प्रदेश विषैं ॥ विजय १ वैजयंत १
जयंत १ अपराजित १ सर्वार्थसिद्धि १ इनिका ध्यान करै बहुरि
अपना ललाट कप्रदेश विषैं सिद्धशिला सदृश विकल्पनाकुं स्था
पित करि ताके ऊपरि सिद्धस्थानिक जगत का शिखरकुं जाणैं

खोएकप्पविमाणाणिखंधपरियंतेगोविज्जमयागीवं ॥ अणुदि
संहणुपयसम्मि ॥२॥ विजयंचवैजयंतंजयंतमवराजियंचसवत्थं
॥ झाइज्जसुहयएसोणिलाडदेसम्मिसिद्धसिलाए ॥३॥ तस्सुव-
रिसिद्धणिलयंजयइसीहरजाणुउत्तमांगम्मि ॥एवंजाणियदेहंझा
इज्जइतंपिपिंडस्थं ॥४॥ टीका ॥ अथवानाभिंचविकल्पकृत्वा
मेरुमधःविहायध्यायतेधोलकंपुनः तिरयकलोकंमध्यवर्तिर्हि-
तीयं ॥१॥ ऊर्द्धनृलोकात्कल्पविमानातिस्कंधपर्यंतंग्रीवेंद्रकंग्री
वायाशब्दंसमणुदिशिप्रदेशोस्मिन् ॥२॥ विजयंचवैजयंतंजयं-
तापराजितंचसर्वार्थसिद्धिंध्यायतेमुखप्रदेशेभालप्रदेशोसिद्ध
शिलासहशं ॥३॥ तस्योपरिसिद्धस्थानकंजगतुसिखरंज्ञातव्य-
मुत्तमांगमस्तकमेवंयन्निजदेहंध्यायते तदपिपिंडस्थंज्ञातव्यं

बतीर्थंकरदेवकेकेवलज्ञानकीप्राप्तिहोयतबताकेबाह्यचिन्ह
प्रगटहोयहै॥ अशोकनामवृक्ष १ देवांकरिपुष्पनिकीवृष्टी १
दिव्यध्वनि १ चामरकाढुलना १ सिंहासन १ भामंडलकहिये
ताकेशरीरकीप्रभाकामंडल १ दुंदुभीकहिये नगारेकाशब्द १
छत्र १ ऐसेअष्टप्रातिहार्यहैं॥ तदुक्तंकाव्य ॥ अशोकवृक्ष
स्सुरपुष्पवृष्टीदिव्यध्वनिचामरमासनंच॥ भामंडलंदुंदुभिरात
पत्रंसत्प्रातिहार्य्याणिजिनेश्वराणाम्॥ १॥ सोऐसेप्रातिहा
र्य्यसहितअपनीआत्माकाध्यानकरनासोपिंडस्थनामा
पूजाजानना ॥ आगेइसपिंडस्थकाऔरभांतिभीस्वरूपकहे
हैं॥ गाथा ॥ अहवाणाहिंचवियप्पेऊणमेरुंअहोविहाग्गमि
ज्झाइज्जइअहोलोयंतिरियंम्मितिरिएणवियं॥ १॥ उड्ढम्मिऊण

जाविनिर्दिष्टम् ॥१॥ अर्थ ॥ अथवा पिंडस्थ १ पदस्थ १ रूप
स्थ १ रूपातीत १ ऐसेंयहच्यारूध्यानकुंजोध्यावैहै सोभावना
मापूजाजिनसूत्रमेंदिखाईहैं ॥ आगेइनिच्यारुध्यानकाप्र
थक् २ स्वरूपकहितेसंतेप्रथमपिंडस्थनामाध्यानकास्वरू
॥ गाथा ॥ सियकिरणविस्फुरंतंअठमहापाडिहेरि
पा ॥झाइज्जइझंजिणयरुबंपिंडस्थंजाणतझाणं ॥१
॥ टीका ॥सितकिरणविस्फुरंतमष्टमहाप्रातिहार्यमेघपरिक
रिकंध्यायतेतन्निजरूपंपिंडस्थंज्ञातव्यंतध्यानं ॥१॥ अर्थ ॥
स्वेतकहियेअतिउज्जलकीरणकरिदैदीप्यमानविस्फुरितअ
ष्टमहाप्रातिहार्य्यकरिमंडितआपणास्वरूपकाचिंतवनकरना
सोध्यानकुंपिंडस्थज्ञानजानना ॥इहांअष्टप्रातिहार्यकहिये॥ज

कादित्रिकालकरनासोभावपूजाजानना॥ आगेफेरिविशेषक-
रिकहियेहै॥ गाथा ॥संचणमोंकारयणहिंआहवाजावंकु-
णिज्जसत्तीएअहवाजिणंदथोत्तंवियाणभावच्चणंतंपि॥१॥
टीका॥पंचनमस्कारपदेनाथवाजाप्यंकुर्यात्स्वशक्त्याअथवा
जिनेंद्रस्तोत्रंविजाहीभावार्चनंतमपि॥१॥ भावार्थ॥ अथवापं-
चणमोंकारपदकेजाप्यकुंअपणीशक्तिकरिकरना॥अथवाजि-
नेंद्रकेगुणनिकागद्यपदवाणिकरिस्तोत्रपढनासोभावपूजा
निश्चयकरिजानना॥ आगेफेरिभावपूजाकाविशेषस्वरूपक-
हेहैं॥ गाथा ॥पिंडत्थंचपयत्थंरूवत्थंविवर्-
इज्जइझाणंभावमहंतंविणिदिठं॥१॥ टीका॥पिंडस्थंपद-
स्थंरूपस्थंरूपविवर्जितंअथवायत्ध्यायनेतत्ध्यानंभावपू-

रादिकैअष्टदिनाविषैं तथाअन्यभीउचितधर्म्मपर्व्वीका
दशकारणदशलाक्षणपुष्पांजलिरत्नत्रयदशाम
त्रयआदिदिनाविषैंजोजिनमंदिराविषैंजिनमंहिमाजोप्रभा-
वनाकुंकरैहैसोकालपूजाकहियेहैं ॥ इतिकालपूजा ॥ आगे-
भावपूजाकास्वरूपकहेहैहै ॥ गाथा ॥ काऊणाणंतचउठगुण
कित्तणंसभचीए ॥ जंबंदणंतियालंकीरइभावच्चणंतरवु ॥ १ ॥
टीका ॥ क्रीयतेणंतचतुष्टयानांगुणकीर्तनं
त्रिकालंक्रियतेसाभावार्च्चनायाज्ञातव्या ॥ अर्थ ॥
तचतुष्टयजोअनंतदर्शन अनंतज्ञान अनंतसुख अनंतवीर्य-
कागुणनिकाकीर्तनकुंकरै ॥ बहुरिभक्तिकरिअर्हंतादिककी-
कालवंदनाकुंकरनीसोभावपूजाजानना ॥ भावार्थ ॥

लकै भरे पवित्र विविध प्रकार कै कलशानि करि जिनमूर्त्तिका अ-
भिषेक करना ॥ बहुरि रात्रि विषैं जागरण कुं संगीत नाटका
कहिये भले प्रकार करि रागोच्चार सहित प्रभु के गुणनि कै ग्रा
म की का वर्णन गाय करि प्रगट करना ॥ बहुरि नाटक कहि हाव
भाव कटाक्षादिक नृत्य के गुण करि मंडित प्रभु के
रना ॥ बहुरि आदि शब्द करि तत कहिये
जो वीणादिक का बजावना बहुरि वितत कहिये
दित्र जो मृदंगादिक का बजावना बहुरि घन कहिये ॥ ताल
मंजिरादिक कांस्य के वादित्र का बजावना सुषिर कहिये बांसु
री आदि फुंक के वादित्रनि का बजावना ॥ ऐसैं गीत नृत्य वादित्रा
दि करि जिनमंदिर मैं रात्री विषैं जागरण करना ॥ बहुरि नंदीश्व

यणाइयाइहिंकायव्वं ॥२॥ णंदीसरअठदिवसेसुतहाअणेस
उचियपव्वेसुजंकीरइजीणमाहिमावणेयाकालपूजासा ॥३॥
टीका ॥ गर्भावतारादिजन्मादिने अभिषेकादितपादिने ज्ञाननिर्वा
णादिने यस्मिन्दिनेसंजायतेतस्मिन्नेवदिनेप्रभावनाकुर्यात् ॥१
॥ इक्षुरसघृतदधिदुग्धसुगंधजलपवित्रविविधकलशैः निशि
जागरणंसंगीतनाटकादिकर्तव्यं ॥२॥ नंदीश्वराष्टदिवसेतथा
अन्येषुउचितयत्क्रीयतेजिनमाहिमा वर्णितोकालपूजासा ॥
३॥ अर्थ ॥ तीर्थंकरोंकेगर्भावतारादिकबहुरिजन्मा
दि बहुरितपकल्याण ॥ बहुरिकेवलज्ञाननिर्वाणकल्याणजिसि
दिनमैपूर्वभये तिसिदिनका दिनमैपूर्वोक्तविधिकरिप्रभावनाक
रनी ॥ बहुरिइक्षुरस १ घृत १ दुग्ध १ दधि १ बहुरिसुगंधज

करांकीतपकी भूमिकाकी ॥ बहुरिजिनकुंकेवलज्ञानकी प्राप्ति
कीभूमिकाकी बहुरिनिर्वाणकल्याणकीभूमिकाकीजोपूर्वो
क्तजलादिकनैंजिहांजायकरिपूजन कुंकरणीसोक्षेत्रपूजाहै
॥ भावार्थ ॥ अयोध्यापुरीआदिचतुर्विंशतितीर्थंकरांकिजन्म
॥ तथातैसेहितपोवनकाक्षेत्र बहुरिज्ञानोत्पत्तिकाक्षेत्र त-
था कैलास सम्मेदसिखर गिरनारि चंपापुरी पावापुरी आदि·
सिद्धक्षेत्रनिहांजायताकीपूर्वोक्तविधानकरिपूजाकरनीसोक्षे
त्रपूजाहै ॥ इतिक्षेत्रपूजा ॥ आगेकालपूजाकास्वरूपकहैहै ॥
गाथा ॥ गब्भावयारजम्माहिसेपणीरवणणाणणिब्बाणं ॥ज
ह्मिदिणेसंजाइयंजिणएहबणंतहिणेकुज्जा ॥ १ ॥ इक्खुरसस-
प्पिदहिरवीणगंधजलपुणविविहकलसेहिं णिसिजागरंचसंगी·

सणकरैहैं ॥ गाथा ॥ अहवाआगमणोयागमाइभएणबहुविहं ॥ णाऊणदव्वपूजाकायव्वासुत्तमग्गेण ॥१॥ टीका ॥
आगमणोआगमआदिभेदेनबहु २
सूत्रमार्गेण ॥१॥ अर्थ ॥ अथवाआगम १ नोआगम १ आदि
भेदकरिबहुविधिद्रव्यपूजाकुंजाणिकरिशास्त्रमार्गकरिद्रव्यपू
जाकरणी ॥ इतिद्रव्यपूजा ॥ आगेक्षेत्रपूजाकास्वरूपकहेहै
॥ गाथा ॥ जिणजम्मणाणिक्खवणणाणुपत्तीए ॥मोक्खसं
भिणिसिहिसुक्खेत्तपूजापुव्वविहाणेणकायव्वा ॥१॥ टीका ॥
जिनजन्मकल्याण तपकल्याण ज्ञानोत्पत्तिमोक्षकल्याणकय
स्मिनक्षेत्रेभवंतितास्मिनक्षेत्रेयजनपूर्वविधानेनकर्त्तव्यासाक्षे
त्रपूजा ॥२॥ अर्थ ॥तीर्थंकरांकीजन्मभूमिकाकि बहुरित

स्या॥१॥टीका॥तेषांचशरीराणां
चित्तसापूजायतःपुनःद्वयोःशास्त्रगुरुणांक्रीयतेसाज्ञातव्या-
मिश्रपूजा॥१॥ अर्थ॥ बहुरिसाक्षात्श्रीतीर्थंकरकाशरीरकी
बहुरिताकीबानीकेशास्त्रकीपूजाकरनीसोद्रव्यपू
अचित्तपूजानामभेदहैं॥
अनामाद्रव्यपूजाजाननी॥ भावार्थ॥ साक्षात्श्रीतीर्थंकरकू
जातोचैतन्यताकरियुक्तहैं यातेंचैतन्यपूजाहैं॥ बहुरिताकीमु
क्तीभयेपीछेतोकाशरीरकीपूजाकरियेसोचैतन्यकेअभावकू
जाननी॥ बहुरिशास्त्रकारीसंयुक्तगुरुकुं
पूजियेसोमिश्रपूजाहैं॥यामेशास्त्रतोअचेतन्यहै॥अरगुरुस
चैतन्यहैं यातेंदोनामिश्रपूजाहैं॥ आगेंद्रव्यपूजाकाफेरिविसे

परमात्मानाकीपूजासोद्रव्यपूजाजाणना ॥ बहुरिसोद्रव्यगं
लम्बादिअष्टद्रव्यपूर्वकथितहै ॥ तिसतेपूजैसोद्रव्यपूजाजाणना
॥ आगेइसद्रव्यपूजाकेतीनभेदकहैहै ॥ गाथा ॥ तिविहा
जासचित्ताचित्तामिस्सभेएण ॥ पच्चरकजिणाइणंसचित्तपूजाज
हाजोगं ॥ १ ॥ टीका ॥ त्रिविधाद्रव्यपूजासचित्ताचित्तामिश्रभेदे
नप्रत्यक्षजिनादीनांसचित्तपूजायथायोग्यम् ॥ १ ॥ अर्थ ॥
व्यपूजातीनप्रकारकीहै ॥ एकतोसचित्त १ बहुरिदूजीअचित्त २
बहुरितीजीमिश्र १ ऐसेतीनभेदहै तामैप्रत्यक्षतीर्थंकरकेवली
जिनादिककीयथायोग्यपूजासोसचित्तपूजाहै ॥ आगेदूसरा
तथातीसराभेदकहैहैं ॥ गाथा ॥ तेसिंचशरीराणं
विअचित्तसापूजा ॥ जापुणहोएहकीरइणायव्वगेमिस्सपूजा

समुद्दिष्टास्थापनापूजायाःपंचः अधिकारतेषांमध्येचत्वारि
ना अधुनापंचमोभणिस्यामि॥१॥ अर्थ ॥जोइमनैपहिलै
पनानामपूजाकेपंचअधिकारकह्याहताताम्हैंच्यारअधिकारतो
कह्याहूंअरअबपंचमाअधिकारकहियें॥ भावार्थ ॥ पूर्वस्थाप-
नापूजाकैपंचभेदकह्येथेतामेंकारापक १ इंद्र २ प्रतिमा ३
च्याएक एच्यारतोकह्ये॥ अबपांचमाभेदकहूंहुं॥ऐसेंआचार्य-
कहिकरिआगेकहेहैं॥ गाथा ॥ दब्बेणपदबस्सयजापूजाजा-
णादब्बपूजासा दब्बेणगंधसलिलाइपूब्बभणियेणकायब्बा॥
का ॥ मनोज्ञद्रव्येणषद्द्रव्याणांमध्येसारपरमात्मातस्ययापू-
जासाद्रव्यपूजाज्ञातव्याद्रव्यगंधसलिलादिपूर्वयाभणित्वासा-
एवकर्त्तव्या॥१॥ अर्थ ॥मनोहरद्रव्यकरिषद्द्रव्यनिमेंसारजो

माकुंदर्पणकैविषैलेयकरि बिंब२ प्रतितिलककुंदेषकरिपीछे
प्रतिमाकेविषैमुखवस्त्रकरिआच्छादनदेना ॥बहुरी
छेकरिपीछेदर्पणकैविषैधरिये॥ अथवाअन्यप्रतिमाकेविषै
एताऔरविशेषहैं॥सोपूर्वोक्तविधितैंजानना॥ऐसैविविध प्रका
रकरिचारित्रज्ञानकेकृत्रिमअकृत्रिमप्रा
कुंकरेहै सोनिश्चयकरिस्थापनानामापूजनकुंजानना ॥इहांआ
गारशुद्धि तथातिलक तथामुख वस्त्रआदिविधानकह्यासोसर्व
प्रतिष्ठाशास्त्रतैविशेषेजानना॥ इतिप्रतिष्ठालक्षणविधिः ॥अ
थस्थापनपूजा ॥ आगेस्थापनपूजाकापांचमांअधिकारकहैहै
॥ गाथा ॥जेपुव्वसमुद्दिट्ठवणापूयाएपंचअहियारा
तेषुभणितावसाणेपंचमोभाणिमो॥१॥टीका ॥येमयापूर्व

हितंजाणे ॥ ४ ॥ टीका ॥ एवंचलप्रतिमायाः स्थापनायामणि
नास्थिरप्रतिमाएकमेवएतदेवविशेषः आगारशुद्धिंकुर्यात्
स्थानेस्मिन् ॥ १ ॥ चित्रपटलेपप्रतिमायाः दर्पणेदत्वाप्रति
बिंबतिलकंदत्वाततः मुखवस्त्रेणछाद्यतेप्रतिमायां ॥ २ ॥ आ
गारशुद्धिंकृत्वादर्पणेथवान्यप्रतिमायांतावन्मात्रविशेषय
विधिर्ज्ञायतेपूर्वोक्त ॥ ३ ॥ अमुनाप्रकारेणचारित्रज्ञानस्या-
पिकृत्रिमाकृत्रिमप्रतिमाभ्यांयत्क्रियतेबहुसन्मानंस्थापनापू
जनंतज्जानीहि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ एवंकहियेऐसेपूर्वोक्तप्रकारच
लप्रतिमाकीस्थापनाकाहै बहुरिथिरप्रतिमाकिस्थापनामेंए-
कपूर्वोक्तप्रकारसैंयहाविशेषहै भलेस्थानमेंआगारशुद्धिक
रनी ॥ बहुरिचित्रामकीप्रतिमा तथापटकेविषेंआलोपिप्रति

व्याणिधूपदहनादिलयाजिनपदपूजनार्थेविस्तार्यते ॥१॥
॥ अष्टविधिमंगलद्रव्यकहियेझारी १ कलश १ चामर १ छत्र १
ध्वजा १ नालबीजना १ स्वस्तिक १ दर्प्पण १ बहुरिनानाप्रकारके
पूजाकेउपकरणद्रव्यधूपदानआदिकहिये आरार्तिकथालआ-
भगवानकीपूजाकेअर्थविस्तारना॥ भावार्थ ॥चढ़ावणा ॥
गाथा ॥ एवंचलपडिमाए ॥ठवणाभणिया
समो आगरस्सहिंकुज्जासठाणम्मि ॥१॥ चितपडिलेवपडिमा
एदप्पणदाविऊणपडिर्तिविंतिलपंदाऊणनमुहवछंदिजपडि
माए ॥२॥ आगरसहिंचकरेज्जदप्पणेअहवाअणपा
तियमेत्तविसेसोसविहिंजाणेहिपुब्बाय ॥३॥ एवंचा
पिकादिमाणपडिमाणपडिमाणंजंबीरइवहुमाणंठवणापु

सुरभिः पुनः मिष्टैर्जिनपदपुरुतरर्चनंफलैः कुर्यात्सुपक्कैः ॥२॥
अर्थ ॥ जंभीरीकरिकेलकैफलकहिये केलाकरिदाडिमफलकरि
कपित्थकहिये कैथकरिपनसफलकरि तूतकरि नारेलकरिहिंता-
ल नयानालजातिके वृक्षकै फलांकरि खर्जूरफलकरिकिंदूरीफ
लकरि नारंगीफलकरिचारकरिबहुरिसुपारीकरि निंदूकरि आ
मलाकरि जांबूकरिबिल्वफलआदिनानाप्रकारके सुगंधित बहु
रिमिष्ट भलापक्क फलांकरि श्रीजिनवरकेपदांके आगेपूजाकर-
नी ॥ सोफलपूजाहै ॥ आगैमंगलीकद्रव्यादिकाचढावनेका
स्वरूपकहैहैं ॥ गाथा ॥ अट्ठविहमंगलाणिय बहुविहपुज्जो
वयरणदव्वाणि धूवदहणाइतहाजिणपूयत्थंवितीरिज्जई ॥१
॥ टीका ॥ अष्टविधिमंगलद्रव्याणि बहुविधिपूजोपकरणद्र-

शिखाकरिदिखाइयेहैं स्वर्गमोक्षका मार्ग ऐसी प्रबल धूपकी धूम्रक
रि श्रीजिनेंद्रकेचरणयुगलरूपीकमलकुंधूपितकाहिये धूपकुं
षें मंत्रपूर्वक निक्षेपकरिसुगंधितकरना कैसा है श्रीजिनेंद्रकेपदार
विंद देवनिका इंद्रकरिनमस्कारकरिवेयोग्यहैं ॥ इहां आदिशब्दतैंचंद
नदेवदारुआदिअनेकप्रकारकेशुद्धसुगंधद्रव्यभीजानना॥ इतिधू
पपूजा ॥ आगैंफलपूजाकावर्णनकरेहै ॥ गाथा ॥ जंबीरमोयदा
डिमकवित्थपणसवनालिएरेहिं हिंतालतालखज्जूरबिंबणारंगचारे
हिं ॥ १ ॥ पुइफलतिंदुआमलयजंबूबिल्लाइसुरहिं ॥ मिट्ठेहिं
पुरुउरयणफलेहिंकुज्जासुपबेहिं ॥ २ ॥ टीका ॥ जंबीरकदलीफ
लदाडिमकपित्थपनसतूलफलनारिकेरैभिः ॥ हिंतालगालखज्जूर
किंदूरीनारंगचारेभिः ॥ १ ॥ पूगीफलतिंदूआमलीयजंबूबिल्वादि

केहूककूंकुमादिकतेंरंगेहुवेदीपकनजाननें ॥साक्षात्हीजाननें ॥
आगेधूपपूजाकास्वरूपकहेहैं॥ गाथा ॥ कालायरुणहचंद-
हपुरुक्कसिल्हारसाइदव्वेहिंणिणधूमवत्तीहिंपरिमलापत्तियालं
हिं ॥१॥ उग्गासिहादेसिइए॥ सग्गमोक्खमग्गोहिंवहलधूमेहिं
धूविज्जजिणिंदपायारविंदजुयलस्करिंदणुयं॥ १॥ टीका ॥ का-
लागुरुअवरकर्पूरपुरकसिल्हारसादिद्रव्यादिकैः॥ निष्पन्नव-
र्त्तितैः॥ परिमलपंक्तिभिः॥ १॥ उग्रशिखायैः दर्शितस्वर्गमोक्ष-
मार्गयैः प्रबलधूम्रधूपैः धूपितजिनेंद्रपादारविंदयुगुलंकोहं
शेस्करेंद्रेर्नुतं॥२॥ अर्थ ॥ कालागुरुकहियेअगुरु बहुरिअ-
हु रिकर्पूरप्रमुख बहुरिसिल्हारसादिकद्रव्यकरिउपजीजोधू-
पकीवर्त्तिकरि केसीकिहे धूपवर्त्तिजाकीसुगंधकीपंक्तिकरिउग्र

दीपकैर्निजप्रभाणांसमूहेनातूल्यार्कप्रतापंदधानिकिद्रशैः
मंदानिलवंशेननृत्यंतः सनृत्यर्चनंकुर्वनृद्रवः॥ १॥ घनपटलकर्म
निचयतद्दंधकारमतिशयेनदूरीकृतमेताहृशःदीपैः
कमलपुरुतः करोतिरचनांरूभक्त्या॥२॥ अर्थ ॥बहुरिभगवान
केचरणकमलकेआगेदीपककीरचनाभलीभक्तिकरिकरैसोदी-
पकरिपूजाहैं॥ कैसादीपककरिरचनाकरै सोकहियेहै॥
प्रभाकासमूहकरिकेसूर्यतुल्यप्रतापकुंधारैं॥ बहुरिमंदमंद्पव-
नकैवशिकरिनृत्यकीसमाननृत्यकरतासंताऐसाजोदीपकतेंपूजै
है॥ बहुरिअतिघनाकर्मकेपटलकेसमूहसमान
पणेजोतिकाअतिशयकरिदूरीकरतासंताऐसादीपककीरचनाभ
क्तिकरिप्रभुकेचरणनिकेआगेकरनीसोदीपपूजाहैं॥ इहांगिरी

धपक्कान्नभेदैः॥१॥रौप्यसुवर्णकांस्यादिस्थालेनस्मिन् विविधं
भक्ष्यंस्थाप्यपूजनंविस्तार्यते भक्त्याजिनेंद्रपदपुरतः॥२॥ अ-
र्थ॥ दहिदुग्धघृतकरिमिश्रितामिष्टतंदुलकाभातकरि बहुरिना-
नाप्रकारकीतेवर्साकहिये कर्कटीजोकांकडीआदिकेशागकाव्यंज
नकरि बहुरिनानाभेदकेपक्कान्नकरि सौनारूपाकांसीआदिकेथा
लविषेंविविधभक्ष्यकहिये मोदकादिककुंस्थाप्यकरि श्रीजिनवर
केचरणनिकेआगेभक्तिकरिपूजनकुंविस्तारनीसोनैवेद्यपूजाहै॥
॥ आगेदीपपूजाकास्वरूपकहेहै ॥ गाथा ॥ दीवेहिणियपहो
हामियकनेहिधूमरहिएहिं॥मंदचलमंदाणिलवसेणणिच्चंनअ-
च्चणंकुज्जा॥१॥घणपडलकम्माणिचहु वदूरमवसारियंधयारेहिं
जिणचलणकमलपुरउ कुणिज्जयणरूभत्तीए॥२॥ टीका॥

वानकेंचरणयुगलशोभितकरिपूजे इहांकेलैंकिपुष्पतोकल्या वाकी
केंआदिशब्दतेंसमझिलेना॥ बहुरिसोनारूपाकेपुष्पतथामोतीनि
कीमालाकाचढावनाकल्याहैं॥ सोजिनमंदिरमैं बहुद्रव्योपार्जनकें
अर्थ बहुरिअतिशोभाकेअर्थ तथाप्रभावनाकीवृद्धिकेअर्थ तथा
उत्कर्षभावकीवृद्धिकेअर्थ तथाबहुधनत्यागकेअर्थ कृपणाईहरिवे
केअर्थ तथाअतिउपमाकेअर्थहै॥ ऐसैपूर्वोक्तप्रकारपुष्पपूजास्व
रूपहैं॥ आगेचरुपूजाकास्वरूपकहैहैं ॥ गाथा ॥ दहिदुधसप्पि
मिस्सेहिं कमलमत्तेहिं बहुपयारेहिं तेवट्ठिवंजिएहिय बहुविह
पक्कण्णभेएहिं॥१॥ रोप्पयसुवण्णकंसाइथालणिहिएहिविविहभर
केहिंपुज्जंवित्थारिज्जाभत्तियजिणिंदपयपुरुउ॥२॥ टीका ॥ दधिदु
ग्धघृतेनमिश्रितंमिष्टोदनंतथाबहुप्रकारैः तेवषींव्यंजनादिबहुवि

॥३॥ अर्थ॥ मालतीकेपुष्पकरि कदंबकेपुष्पकरि सूर्यगुलके
पुष्पकरि आशापालाकेपुष्पकरि वोल सिरीकेपुष्पकरि तिल-
कजानिके वृक्षकेपुष्पकरि मंदारनामापुष्पकरि नागचंपाकेपुष्प
करि नीलस्वेतारक्तकमलकेपुष्पकरि निर्गुंडीकेपुष्पकरि तथाकं
डीरकेपुष्पकरि मल्लिकानामपुष्पकरि कचनारकेपुष्पकरि मचकुं
दकेपुष्पकरि किंकरपुष्पआदिपुष्पनकरि कल्पवृक्षकेपुष्पकरि जू
हीनामापुष्पकरि पारिजातिकपुष्पकरि जासवणडगरादिपुष्पाक
रि सोनेरूपेकेपुष्पकरि मोतीनिकीमालाआदिनानापुष्पनिकीमा
लाआदिकेविकल्पकरि जिनकेचरणयुगलशोभितकरिपूजे केसा
है श्रीजिनवरकेचरणयुगलदेवनिकाइंद्र तथाअपिशब्दात् चक्रवर्ती
आदिकरिपूजनीकहै॥ भावार्थ ॥पूर्वोक्तप्रकारपुष्पनिकरिभग-

जिनेंद्रके पदयुगलकुं पूजयेत् ॥ ऐसे अक्षितपूजाकरनी ॥ ॥
पुष्पपूजाकावर्णनकरेहै ॥ गाथा ॥ मालियकयंवकणयारियं प
यासोयबउलतिलएहिं मंदारणायचंपयपउमुप्पलसिंदुवारेहिं ॥
१ ॥ कणवीरमल्लियाइकंचणारमकुंदकिंकराणहिं सुरवणजजु
हियापारिजासवणटगरेहिं ॥ २ ॥ सोवणरूपमोहियमुत्तादामेहि
बहुवियप्पेहि ॥ जिणपयसकयजुयलं पुज्जिज्जसुरिंदसयमहि-
लं ॥ ३ ॥ टीका ॥ मालतीकदंबसूर्यमुखीअशोकबकुलश्रीतिल
पुष्पमंदारनागचंपकउत्पलानिर्गुंडीपुष्पैः ॥ १ ॥ कणवीरमल्लिका-
कचनार मचकुंद किंकराकल्पवृक्षाणांपुष्पैः ॥ सुरवनजूहीपारि-
जातिकजासवनडगरेभिः ॥ २ ॥ सोवर्णरौप्यमयपुष्पैः मुक्तादामा
दिबहुविकल्पकैः ॥ जिनपदसंस्कृतयुगुलपूजितसुरेंद्रैरपिपूजितं

हिंव ॥१॥ वरकलमसालितंदुलचाणिहसकछंडियदीहसयलेहिं॥
मणुयसुरासुरमहियं पुज्जिजजिणिंदपयजुयलं॥२॥टीका॥
चंद्रकांतिसदृशाखंडितविमलैः जलेनधौतानिसुगंधैः तैरक्षतैः
जिनप्रतिमांअर्च्यते कीदृशाविशुद्धपुण्यांकुराइव॥१॥श्रा
ष्टशालितंदुलसमूहैः
सुरासुरेणमहितंअर्च्यतेजिनेंद्रपदयुगलं॥२॥ अर्थ ॥ चंद्रकांति
कहिये चंद्रमाकीचांदनीसमान अतिउज्जलअखंडितविमलजोनि-
र्मल बहुरिअतिसुगंधकरियुक्त ऐसाअक्षितनकुंजलविषैंधोयकरि
जिनप्रतिमाकुं पूजनी कैसेकीयेहैंपूर्वोक्तलंदुलमानुपुण्यकेअंकुरही
हैं॥ ऐसाअतिमिष्टजोशालिकेतंदुलकेसमूहकुं
सलनैरखंडकारदीर्घऐसातंदुलकरिमनुष्यसुरअसुरकेस्वामीजोश्री

त्ताली मुरवरीकृतेनेन्सुरमुकुटेन घृष्टिचरण भक्त्यास्पर्शतेजिनं॥
२॥ अर्थ॥ कर्पूरकेशरअगुरु मलियागिरचंदनकाद्रवकरिमिश्रि
त ऐसाजोगंधबहुरिघासिवेतें
शाकेसमूहताकरि बहुरिनिसगंधद्रव्यके अनुमार्गकरि मदोन्मत्त
भ्रमरनिकीपंक्तिकरिवाचालिकृत ऐसाजोगंधताकरि सुरकहियेदे
वकेशिरकेमुकुटकरि घृष्टितजोजिनवरकेचरणताकुं भक्तिकरिस्पर्श
येत्॥ भावार्थ॥ पूर्वोक्तगुणनिकरिमंडितसारगंधद्रव्यकुंजलतेंघ
सिकरिश्रीजिनवरकेप्रतिमाकेदोयचरणनिकेविलेपनकरिलगावना
याकाप्रश्नोत्तरपूर्वकह्याहीहैं॥ ऐसेगंधपूजाहैं॥ ॥आगेअक्षित
पूजाकास्वरूपकहैहैं॥ ॥गाथा॥ सासिकंतखंडविमलेहीविमल
जलेसित्तअइसुयंधेहिं॥जिणपडिमपइट्ठए जियविसुद्धपुणंकुरे

सीकहैझारी जाकाजलकानालमरकतमणिकरिजटितसुवर्ण
करि तथाऔरसुंदरमणिनिकरिखचितहैसुंदरकंठजाका बहुर्
सूत्रोक्तपुष्पकमलादिकीरजकरिपीतहोयरह्याहैं॥ अतिसुगं-
धजो निर्म्मलजलतिसीका ऐसीझारीकेनालिकरि श्रीजिनकेच-
मलकेआगेंतीनधारदीजेंनिक्षेपजे ऐसेजलपूजाकरनी॥
॥ ॥आगेंगंधपूजाकुंकहेहैं॥ ॥गाथा ॥ कप्पूरकुंकु
रुक्कमिसेणचंदणरसेणवरवहलपरिमला
॥१॥ वासाणुमग्गसंपत्तामयमत्ताि
घडिचलणं भत्तिएसमलहिज्जाजिणं॥२॥ टीका ॥ कर्पूरकुंकुमा
गरुमलयागिरिमिश्रतेनचंदनरसेनवरघृष्टेसतिप्रचुरपरिमलामो
देनवासितानिदिशासमूहेन॥१॥सुगंधद्रव्यानुमार्गेणसमदस

वक्ष्यमाणविधिकहिये आगैंविधिकहैंगा तिसरीतिसुंजिनकै चर्णनिकीपूजादिककरना सोविधिकहैहै॥ गाथा॥ गहिउण ससिकरकिरणणिअरधवलरयणभिंगारं मोत्तिपवालमरगयसु वण्णमणिरवचियवरकंठं॥१॥ सुयवत्तकुसुमकुवलयरज्जपिंजर सुरहिविमलजलभरियं॥ जिणचलणकमलपुरउखिविज्जउत्तिण धाराउ॥२॥ टीका॥ गृहीत्वाचंद्राकरकिरणनिकरतद्वलधवलर त्नभृंगारैः पुनःकीदृशाजलस्यप्रवालनामाप्रनालिकामरकतिमणि नाजटितसुवर्णेनरवचितवरकंठं॥१॥ सूत्रोक्तकुसुमकुवलयानार जेनापिंजरसुरभिः विमलजलभरितमेनादृशंभृंगारं तेनजिनच रणकमलपुरतःक्षिप्यतेतिस्त्रधारा॥२॥ अर्थ॥ चंद्रमाकीकिरण

 जटितभृंगारकहियेझारीहैगृहणकरि बहुरिके

त् दिनरात्रीसंध्यायां जिनपूजा नेत्रोन्मीलन अतिहर्षेण जिनपूज
नं चतुर्थे दिनावसाने पुनः न्हवणं कुर्यात् ॥ २ ॥ अर्थ ॥ ऐसे पूर्वोक्त
प्रकार चारि दिना पर्यंत करै बहुरि चतुर्दिन की रात्री की संध्या २ विषें
नेत्र मन करि प्रफुल्लित अति हर्ष करि जिन पूजन कूं करै बहुरि चौथा
दिन के अंत जिनाभिषेक कुं करै ॥ भावार्थ ॥ चारि दिन तांई पूर्वोक्त
विधि करै बहुरि त्रिकाल जिनपूजा करै बहुरि पीछै चौथा दिन के
अंत फेरि प्रभु को न्हवण करै ॥ गाथा ॥ एवं एन्हवणं काऊण सत्थ
मग्गेण संघमज्झम्मि तो वरकमाण विहिणा जिणपयपूजाइ काय
व्वा ॥ १ ॥ टीका ॥ अमुना प्रकारेण न्हवणं कृत्वा शास्त्रमार्गेण सं
घमध्ये नत्वद्समाण विधिना जिनपदपूजा कर्त्तव्या ॥ २ ॥ अर्थ ॥
ऐसै पूर्वोक्त प्रकार करि शास्त्र मार्ग करि न्हवण कुं करि संघ के मध्य

रात्रीकैविषैंतिह्वांजिनमूर्तिकैपास जागरणकरणा बहुरिनरेस-
ठिशिलाकापुरुषांकीभलीकथाकरिरात्रीव्यतीतकरिपीछैसंघ-
करिसहितप्रभातकालपूजनकीविधिकुंकरना ॥ भावार्थ ॥रा-
त्रीविषैगीतनृत्यवादित्रकरिजागरणकरै॥ बहुरि-
पुरुषकहिये॥श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकर २४ बहु-
रादिद्वादशचक्री १२ बहुरित्रिपृष्ठ्यादिनवनारायण ९ बहुरिअश्व
ग्रीवादिनवप्रतिनारायण बहुरिविजयआदिनवबलिभद्र आदि
पुन्याधिकारीपुरुषनिकाचरित्रकीभलीकथाकरिरात्रीव्यतीते
हुरिप्रभातमैसंघसहितपूजाकरै॥ गाथा ॥ एवंचत्तारिदिणा-
णि जावकुज्जातिसंऊजिणपूज्यं एोत्तुम्मिलणपूज्जं चउत्थए
हिवणंनउकुज्जा॥१॥ टीका ॥ एवंचत्वारिदिनानिपर्यंता

पीछेभीमान्याजायहै ॥ गाथा ॥ वलिवत्तिएहिंजुवारेहियसिद्ध-
त्थपएरुरकेहिं पुवत्तुवयरणेहियरइज्जपुज्जसविहवेण ॥ १ ॥ टी
का ॥ बलिवर्तैयलतः यावारकस्यहरितांकुरैः सहितसर्षपतथाप-
त्रवृक्षाणांपूर्वोक्तउपकरणैः सहितःरचेत् पूजनंसविभवेन ॥ २ ॥
अर्थ ॥ बहुरिवलिवर्तकहिये वलिहारीअथवावारनाकरि बहुरि
जुवाराकेहरितअंकुरासहितसरस्यू तथासरस्यूंकेपत्रकरिसहि-
त तथापूर्वोक्तउपकरणकरिअपणाविभवप्रमाणजिनप्रतिमाकी
पूजनकुंकरनी ॥ गाथा ॥ रतिंजगिज्जपुणोतिसट्ठिसलायपुरुस
सकहाहिंसंघेणसमंपूज्जं पुणोविकुज्जापहायम्मि ॥ १ ॥ टीका
॥ सत्रौजागरणंकुर्य्यात् पुनः त्रिषष्ठीसलाकापुरुषाणांसकथाभि
चतुर्विधसंघेनसमंपूजनंपुनःकुर्यात् प्रभातकालेविधं ॥ २ ॥ अर्थ

बिंबकीपूजाकरनी ॥गाथा ॥दाऊणमुहपडंधवलवत्थजुयलेण
मयणफलसहियं अरकयचरुदीवाधूवेहिंफलेहिंविविहेही॥ २
टीका॥ दत्वामुखपटंधवलवस्त्रयुगलेन मदनफलसहि
तनैवेद्यदीपादिकैः धूपैः फलैः विविधप्रकारैः॥२॥अर्थ॥ अपणा
मुखकुंवस्त्राछादनकरिधवलजोउज्जलयुग्मकहियेधोवतीदुपटा
कुंसधारणकरिमयणफलकहियेमींडलासहितअक्षतनैवेद्यदी
कतथाआदिशब्दकरिजलचंदनपुष्पकरि धूपकरिफलकरि
कारकरिइहांमयणफलकाप्रसंगकर
है॥ नाकाउत्तर ॥यहमयणफलमंगलीकहै॥जेसें
वरकन्याहस्तेलोहलासासरस्यु हरिद्रादिवस्तुदेवेहै तेरे
फलहैं॥ ऐसेपरंपरायकरिवृद्धपुरुषानेजोअंगीकारकी

तिमाकेविषैंचंदनकातिलककरै॥ गाथा ॥सव्वावयवेसुपुणोमं
तरणासंकुणज्जपडिमाए विविहंचणंचकुज्जाकुसुमेहिंबहुपया
रेहिं॥१॥टीका॥सर्वांगस्त्रवयवेषुपुनः मंत्रन्यासंकुर्यात् प्रतिमा
यांततः विविधार्च्चनंकुर्यात् कुसुमैः बहुप्रकारैः॥२॥ अर्थ॥बहु
रिश्रीजिनप्रतिमाकेसर्वअंगकेविषैमंत्रन्यासकहियेमंत्रनिकी·
स्थापनाकरै बहुरिपीछैबहुप्रकारकेपुष्पनिकरिनानाप्रकारकरिपू
जाकरनी॥ भावार्थ॥प्रथमगाथामैंतिलककह्योसोचंदनआदिका
द्रवकुंजिनप्रतिमाकेसर्वांगशरीरमैंविलेपकरिपीछैप्रतिष्ठाशास्त्रो
क्तमंत्रकेअक्षरनिकुंडांभआदितैंयथायोग्यस्थानमैंलिखै बहुरि·
पीछैनानाप्रकारकहियेअनेकजातिकेपुष्पजोचमेलीआदिअति·
मनोज्ञसुगंधमईसुंदरशोभायमानकरिनानाप्रकारकरितिसजिन

क्षिणां जिनग्रहस्य विधिना स्थाप्यते पूर्वोक्तवेदिकायां मध्यपीठ
स्थाने ॥२॥ अर्थ ॥ बहुरि तिस प्रतिमाकुं अपने मस्तकऊ
रोपणकरि पीछे श्रीजिनमंदिरकी प्रदक्षिणा देय बहुरि पूर्वोक्त
वेदीकै मध्य सिंहासनके विषैं विधानकरि तिस मूर्तिकुं स्थापन क
रै ॥ गाथा ॥ चिट्ठेज्ज जिणगुणारोवणं कुणंतो जिणंद पडिबिंबे इ
ट्ठविलग्गस्सुदए इ चंदणतिलयं तउ दिज्जइ ॥ १॥ टीका ॥ प्रवरतनु
सन् जिनेंद्रस्य गुणारोपणं कुर्वन् सन् जिनेंद्रप्रा
द्द्योसति चंदनतिलकं ततः दीयते ॥२॥ अर्थ ॥ अरश्रीजिनेंद्रकागु
णका आरोपण करता संता प्रवर्तै श्रीजिनेंद्रकी प्रतिमामें बहुरि इष्ट
लग्नका उदय विषैं जिनप्रतिमाकै चंदनका तिलक देवै ॥ भावार्थ ॥ श्री
जिनेंद्रका गुण जिनप्रतिमामैं आरोपणकरि भलामुहूर्तमें निसप्र

अकरि बहुरि मंगलशब्दकैसैंकडांशब्दकै
धर्म्मानुरागरतचतुर्वर्णजोचतुर्संघ ॥ गाथा ॥ भत्तिएपिछमाण
स्स तउउच्चाइऊणजिणपडिमं उसियसियायवत्तंसियचामरधु-
वमाणसव्वंगो ॥१॥ टीका ॥ भक्त्याप्रेक्षमाणस्यततः उत्तिष्ठाप्य
जिनप्रतिमायामुपरिप्रसारितासितातपत्रं सितचामरदोलिमा-
नसर्वांगं ॥२॥ अर्थ ॥ सोभक्तिकरिदेखैहैं प्रतिष्ठाकाउत्सव ए
सैंविक्षमाणपूर्वक श्रीजिनबिंबकुं उठायकरि कैसीकिहै प्रतिमा
फिरैहै रूपेतछत्र ताकेउपरिबहुरि दुलैहैस्वेतचमरताके
परि ऐसीशोभाकरियुक्तश्रीजिनप्रतिमाकुंउठायकरि ॥ गाथा ॥
रोविऊणसीसे काऊणययाहिणंजिणगेहस्सविहिणाठविज्जपु-
वुत्तवेइमज्झपीठम्मि ॥१॥ टीका ॥ प्रतिमामारोप्यशीर्षेकृत्वाप्रद-

॥ बहुहावभावविब्भमि ॥ विलासकरचरणनणुवियारेहिं ॥ णिंच्चि
तणवरसभिणणाडएहिंचविविहेहिं ॥ १ ॥ टीका ॥ बहुहावभाव
भ्रमविलाशकरचरणनत्नुविकारैः नृत्यंतनवरसाः भिन्ननाट्य
कैः विविधःप्रकारैः ॥ २ ॥ अर्थ ॥ बहुतहावकाहिये घनीमुखकीप्रस
न्नताकरि अरभावकहियेचित्तकीप्रसन्नताकरि ॥ बहुरिविभ्रमक
हिये हर्षपूर्वकभ्रूकाक्षेपकरि विलासकहियेनेत्रनिकाप्रफुल्लता ब
हुरिअपने हस्तपादअरशरीरकानवरसकेविकारकरिविविधिप्रका
रकीनृत्यकीनाचैहै जुदीजुदीतिहां ॥ गाथा ॥ थोत्तेहिंमंगलेहिय
उच्चारसएहिं महुरवयणस्स धम्माणुरायरत्तस्सः ॥ चाउवण्णस्स
संघस्सः ॥ २ ॥ टीका ॥ स्तोत्रैः पुनः मंगलशब्दैः उच्चारशतेनमधु
रवचनस्यधर्म्मानुरागरक्तस्य चतुर्वर्णसंघस्य ॥ २ ॥ अर्थ ॥ स्तो

गुलगुलेतिशब्दं ॥ तवलवादित्राणांकंशतालानांझमझमेतिश-
ब्द घुमंतपटहमद्दलादिमुरवेहिविविधवादित्रे ॥ १ ॥ अर्थ ॥ गु
लगुलशब्दहोयहै ॥ तिहांतवलजातिकेवादित्रनिका ॥ अरकं
शतालकाहोयहै ॥ झमझमशब्दऐसाबहुरिपटहककहियेढोल
अरमद्दलकहियेमृदंगताकेमुरवकारिवाजेहै ॥ बहुरिऔरभं
नाप्रकारकेबाजेबाजेहै ॥ गाथा ॥ गज्जंतिसंधिवंधाइएहिं ॥ गेए-
हिबहुपयारेहिं ॥ वीणावंसेहिआणयसद्देहिरस्सेहिं ॥ २ ॥ टीका
॥ गर्जंतिसंधिवंधादिकेमृदंगसंबंधिभिरंगे ॥ बहुप्रकारैः वीणा-
वांसरीनथानकशब्दैः रमणीयकै ॥ २ ॥ अर्थ ॥ गज्जेहैतिहांमृदं-
गसमंधिकेसवंधिबंधादिकः ॥ बहुरिबहुतप्रकारकरिवीणवांसु-
रीतथाआनककहियेढोलकेहोयहैरमनीकशब्दतिनकरि ॥ गाथा

ग्रोक्त मार्गकरिकैस्थापनशब्दकुंकरनी। सोस्थापनशब्दकास्व-
रूपप्रतिष्ठापाठविषैंकह्याहै तिहांतैंजानिलेना ॥गाथा।
ऊणरऊरवुहियसमुद्दोवगज्जमाणेहिं॥ वरभेरिकरडकाहल ॥
यघंटासंखवाणिवेहोहि॥१॥ टीका ॥
कीदृशंशब्दोक्षुभितसमुद्रोपगर्ज्जमानोयेनश्रेष्ठभेरीझाल्लरि
नफरीजयघंटाशंखवादिवादित्रसमूहे॥१॥ अर्थ॥ ऐसेपूर्वोक्त-
प्रकारशब्दकरि बहुरिकैसाकिशब्दहै॥ क्षोभकुंप्राप्तिभयाजोस
मुद्रताकिउपमाकरिकेजोश्रेष्ठ॥ भेरी १ झालरि १ झांझ १
रे १ करड १ काहल १ जयघंटा १ शंखआदिवादित्रनिकेसमू
हकेशब्दकरि॥ गाथा ॥ गुलुगुलंतिनिविले
ऊमंतेहिंधुमंतफडहमद्दलहुडकमुखेहिंविविहेहिं॥ १॥ टीका ॥

णविहिंचमंगलवेणाकुज्जातऊकम्मासो ॥१॥ टीका ॥ वस्त्रादि
केनसन्मानंकर्त्तव्यंभवतिनस्यशक्त्यानुसारेणनृत्यविधिपेष
णविधिनाचमंगलशब्देनकुर्यात्तदाक्रमसः ॥२॥ अर्थ ॥ ब-
हुरितिससूत्रधारकूंवस्त्रादिकजोवस्त्रआदिआभर्णद्रव्यक
रिकेंअपनीशक्तिहोयजिसमाफकताकोसन्मानकुंकरना ॥ ब-
हुरिसंगीतशास्त्रोक्तक्रमसुंनित्यकीविधिकुंमंगलशब्दकुंकरि
केकरना ॥ गाथा ॥ तप्पाउगुवयरणं ॥ अप्पसमीवणिवेसऊण
तऊआगारा ॥ सुद्धिंकुज्जापइट्ठसत्थत्तमग्गेण ॥१॥ टीका ॥ न-
तःप्रतिष्ठाउचितोपकरणमात्मानंसमीपंनिवेश्यततः ॥ स्थानक
शुद्धिंकुर्यात्प्रतिष्ठाशास्त्रोक्तमार्गेण ॥२॥ बहुरिताकेपीछेप्रति
ष्ठाकेयोग्यउपकरणनिकुंअपनेनिकटधरिकरिपीछेप्रतिष्ठापा-

त्वातनः ईशानदिशायांवेदिकायांदिव्यंरचयित्वान्हवनपीठंत-
स्यमध्येस्थाप्यते ॥१॥ अर्थ ॥ ऐसेपूर्वोक्तप्रकारमंडपवेदी
डलआदिकीरचनाकरि ॥ बहुरिपीछेतिसवेदिकाकीईशानदि-
शाविषैदिव्यस्नानपीठकुंरचिबहुरितिसस्नानका
मध्यस्थापियेसोकहेहै ॥ गाथा ॥

ठाविऊणतस्सुवरिं ॥ धूलीकलसाहिसइये करा

॥१॥ टीका ॥ अरिहंतादीनाप्रतिमाविधिनास्थापयित्वातस्यो
परिधूलिकलशाभिषेकंकराप्यतेप्रतिष्ठाचार्येन ॥२॥ अर्थ ॥
पूर्वोक्तस्नानपीठकेविषैंअर्हंतआदिकीप्रतिमाकुंविधानतैंस्था-
रबहुरिताकैप्रथमहीप्रतिमाकुंघडनेवालाकास्नानकराव
ना ॥ गाथा ॥ वत्थादियसम्मार्णकायव्वंहोइतस्ससत्तीए पेरव-

लक्ष्म्यादिकेतौकिदलकीप्रतिकीर्णिकायुक्तकमलकूंमांडै इहां
प्रतिष्ठाशास्त्रोक्तविधानकरिमंडलमांडनाताकीजोरीति
तिसमाफिकमांडना ॥ गाथा ॥ रंगावल्लिंचमज्झेठविज्जासियव
त्थपरिउडपीढंउच्चदेसतहपइट्ठोवयरणदव्वचट्ठाणेस्स ॥ २ ॥
टीका ॥ रंगावल्लिंचमध्येस्थियतेसितवस्त्रेनआच्छादितंपीठं
॥ तथाचउदेशेस्थानेप्रतिष्ठोपकरणादिद्रव्यंस्थाप्यते ॥ २ ॥ अर्थ ॥ बहुरितिसरंगावलीकेमध्यतिहांस्वेतवस्त्र
करिकेआच्छादितचौंतरास्थापिकरि बहुरितिसचौंतराकेयथोचितउच्चस्थानमेंप्रतिष्ठाकेउपकरणआदिद्रव्यकुंयथायोग्य
स्थापै ॥ गाथा ॥ एवंकाऊणतउईसाणदिसाएवेइयं ॥ दिबंरइउणएहवणपीठनस्सयमज्झम्मिठावेज्जा ॥ ३ ॥ टीका ॥ एवंकृ

त्रकीभूमिकाकेविषैंप्रवेशकरैआपकूंपूर्वोक्तप्रकारइंद्रवत्मान
तोथकोप्रतिष्ठाकेमंडपमैंजावै॥ भावार्थ ॥ प्रतिष्ठाचार्यप्रवेश
करै ॥ गाथा ॥ पुव्वुत्तवेइयमज्झेलिहिज्जचूएणपंचवण्णेणपिहुक
ण्णियपइठाकलावविहिणारुकंदुट्ठं॥१॥ टीका ॥ पूर्वोक्तवेदि
कामध्येलिखित्वाचूर्णेनपंचवर्णेनपृथुवि स्तीर्णकर्णिकाप्रकी
र्णिकावाप्रतिष्ठाकल्पशास्त्रोक्तविधिनारुकर्दमजास्थितमंड
लमध्ये॥२॥ अर्थ ॥ पूर्वोक्तप्रकारजोप्रतिष्ठाकीवेदिकाकेम
ध्यविषैं पंचवर्णकाचूर्णकरिकेप्रतिष्ठापाठनामाशास्त्रोक्तकी
विधिकरिमंडलकुंविस्तारै बहुरिताकेमध्यकर्णिकातथाप्रक
र्णिकाकाविस्तारसंयुक्ततिहांकमलकीस्थितिकरै॥ भावार्थ ॥
मंडलकेमध्यआठदलकीकर्णिकातथाताकेबाह्यषोडशद-

गो॥१॥ टीका ॥ उपवासेनसहितं पुनः प्रोसधंविधिनागृहीत्वागुरु समीपे॥ नूतनधवलांबरेणभूषितश्रीखंडेनविलिप्तसर्वांगो ॥२॥ अर्थ॥ उपवासकरिकैसहित बहुरिप्रोषधकीविधिकुंग्रहणकरि गुरुकेनिकटनवीनपवित्रस्वेतअतिउज्जलवस्त्रकरिमंडितहोय॥ बहुरिश्रीखंडकरिहियेचंदनकरिअपनासर्वांगकुंलिप्तकरि॥ गाथा॥ आहरणवासियाहिंभूसियगोसंगबुद्धीएसक्कोहमाविय्यप्पयेहिवि सेज्जजागावणिंददो॥१॥ टीका॥ आभरणवासितस्रगंधादिभिः भूषितांगोपुनः उत्साहयुक्तेनबुद्धिशक्रोहमितिविकल्पबुद्धेः प्र-विशत्याज्ञावनौसइंद्रवसन्॥२॥ अर्थ॥ बहुरिभूषणकरिअर स्रगंधद्रव्यकरिआभूषितअपनाअंगकुंकरि बहुरिउत्साहयुक्त करिकैअपनीबुद्धिकरिआपकुंइंद्रसमानविकल्पबुद्धीकरिमानय

डैः वेदिकाचतुष्कोणेषु ॥२॥ अर्थ ॥ ऐसे पूर्वोक्तप्रकारकी रचनाकुं करि बहुरि ताकै पीछे अभ्यंतर कहिये ताकै भीतर नानाप्रकारके मृत्तिकाके आसणकी वेदिकाकी चतुर्कोणविषैं रचनाकुं करि ॥ गाथा ॥ इंदो तह दायारो पासुयसलिलेण धारणादियहं परकाादेहि पच्छा भोत्तूण महुरण्णं ॥ १॥ टीका ॥ इंद्रः तथा दातार प्राशुकजलेन धारणादिवसे प्रक्षाल्य शरीरं पश्चात् भुक्त्वा मधुरान्नं ॥२॥ अर्थ ॥ इंद्र कहिये प्रतिष्ठाचार्य ॥ बहुरि तैसा ही दातार कहिये प्रारंभक ॥ यह दोन्यूं हि उपवासकै पहिले दिवस जो धारणाको दिन विषै प्राशुक जलकरि अपना शरीरकुं प्रक्षाल्य कहिये स्नानकुं करि पीछे मधुरान्नका भोजन करि ॥ गाथा ॥ वहिणा गहिऊण गुरुसयासम्मि ॥ णवधवलवत्थ

रिशोभितजोपूर्वोक्तचंद्रोपककरिकैश्रेष्ठसरलजोलंबायमानमो-
तीनकीमालाकरिबहुरितथाक्षुद्रघंटिकाकीपंक्तिनानाप्रकारकी-
निनिकरि ॥ गाथा ॥ छत्तेहिंयचमरेहिंये दप्पणभंगारतालवट्टेहिंक
लसेहीपुहप्पवडीलिय रुवइहियदीवणिवहेहिं ॥१॥ टीका ॥
छत्रैश्चामरैःचदर्प्पणभृंगारतालस्यविजनैः॥ कलशैःपुष्पवर्
प्रतिकस्तुदीपकविविधेहि॥२॥ अर्थ ॥ बहुरि छत्रकरि १ चामर
करि १ दर्प्पनकरि १ भृंगारकहियेझारीकरि १ तालवृक्षके
विजनकरि १ कलशाकरि १ पुष्पमालकरि १ स्वस्तिककरि १ बहु
रिभिन्नभिन्नदीपानिकीपंक्तिकरि ॥ गाथा ॥ एवंरयणकाऊणतऊ
अब्भंतरम्मिरइउणाविविहिंबहुभंडेहिंवेइयंचऊरुकोणेसु ॥१॥
टीका ॥ एवंरचनांकृत्वाततोभ्यंतरेपिरचनाकृत्वाबहुविधैःपुनः भा-

वेदिकाकीचतुर्विदिशाकैविषैतोरणकीपंक्तिकरिमंडितहै द्वारजा-
के बहुरिछत्रसमानगोलाकारकरिमनोज्ञकुणादिषैरचिकरि॥
॥ पडिवीणणेत्तपट्टांवराहिंवत्थेहिंबहुविहेहिंतहा॥उल्लोविऊणउव
रिंचंदोवयमाणिविहाहि॥१॥ टीका ॥ मनोज्ञपट्टांबरादिवस्त्रैः बहु
विधंतथाक्षुद्रघंटकेनऊर्द्धंपरिचंद्रोपकंमणिमाणिकादिजटितैः॥
२॥ अर्थ ॥ भलेमनोहरपट्टांबरकाहियेरसमीवस्त्रआदिभले॰॰॰
करि बहुरिबहुविधिक्षुद्रघंटिकाकरिकैनाकेऊपरिमणिमाणिकादि
नैंजटितचंद्रोपककुंबांधिकरि॥ बहुरिगाथा ॥संभूसीउणचंदउ
पयेणवरासलाइहिमुत्तादामेहिंतहाकिंकिणीजालेहिविविंणहिं॥
२॥टीका ॥ संभूषितेनचंद्रोपकेनअेषासरलामुक्ताफलदामादिभिः
तथाक्षुद्रघंटिकापंक्तिभिःनानाप्रकारैः॥ २॥ अर्थ ॥भलेप्रकारक

कीमालाजिहां बहुरिवंदनमालाकरिशोभायमानहैजाकेद्वारकी-
भूमिकाजिहां॥ बहुरितिसद्वारकेऊपरि
हैरमणीकजिहां॥ गाथा ॥ तस्सबहुमज्झदेसेपइट्ठसत्थम्मिपुत्त
माणेण॥समचउरंसंपीढ्ठसवत्थसमंचकाउण॥१॥ टीका ॥ तत्र
मंडपस्यमध्यदेशेप्रतिष्ठाशास्त्रोक्तमानेन समचतुरस्रंसम
वस्त्रसमंचकृत्वातंपीठं॥२॥ अर्थ ॥तिसमंडपकेविचलेप्रदेशविषै
प्रतिष्ठाशास्त्रोक्तप्रमाणकरिकेसमचतुरस्रकहिये समचतुष्कोणतरा
केस्याकारवेदिकाचोकूंठीकरनी॥गाथा ॥चउरसुविदिसासुतोर
णमालोववेददाराणि॥छत्तावत्ताणितहांदिट्ठाणिरईऊणकोणेसु
॥१॥टीका॥चतुर्षुविदिशासुतोरणपत्क्तोपेतद्वाराणि॥तथाछ
त्रावर्ताणिमनोज्ञानिरचयित्वाकोणेषु॥२॥ अर्थ ॥बहुरि

चउतोरणचउदारो वसोहिंउविविहवत्थकयभूसोधुवंतधयवडाउ-
णाणापुहप्फोवहारड्ढो ॥१॥ टीका ॥ चतुःतोरणचतुर्द्वारेणपशो-
भितः विविधवस्त्रेणकृतभूषाधुवंतध्वजपताकास्फुरिताध्वजानाना
प्रकारेणपुष्पानांसमुहानापूर्णा ॥१॥ अर्थ ॥ तिसमंडपकी भूमि
काचतुर्तोरणकरिशोभितचतुर्द्वारकरिशोभायमानहैजिहां ॥ बहु-
रिनानाप्रकारकेवस्त्रकरिशृंगारितफुरकेहैध्वजातथापताकातिहां
बहुरिनानाप्रकारकेपुष्पांकेसमूहकरिपूर्णहैशोभाजिहां ॥ बहुरि
गाथा ॥ लंबंतकुसमदामोवंदणमालाहिभूसियदुवारोदारुवरि
उभयकोणेसुपुणकलसेहिरमणीउ ॥२॥ टीका ॥ लंबितपुष्पमाला
पुनः वंदनमालाभिः भूषितःद्वारोयस्यांभूम्यांद्वारोपरिउभयकोणेसं
पूर्णाकलसैःरमणीकः ॥२॥ अर्थ ॥ बहुरिलंबायमानहैपुष्पनि-

होयतोताकेअभावऊपरिजिनागमकुंपुस्तकविषैंलिखायकरिशुभ तिथिशुभलग्नशुभमुहूर्तमेंआरंभहोयसोकरना॥ भावार्थ॥श्रुतदेवीकीमूर्तिकेअभावऊपरिश्रीजिनागमकहियेजिनसिद्धांतादिकशास्त्रकुंहीशुभतिथिआदिविषैंप्रथमस्थापिकरिप्रतिष्ठाकोआरंभकरनो॥ गाथा ॥ अट्ठदसहत्थमत्तं भूमिंसंसोहिऊणजइणाणतस्सुवरिमंडउपुणकायव्वोतप्पमाणेण॥१॥ टीका ॥ अष्टादशहस्तमात्रेभूमिसंशोधियित्वायत्नात्॥तस्योपरिमंडपोकर्त्तव्यः पुनकर्त्तव्यतत्प्रमाणेन॥अर्थ॥ अष्टादशकहियेअठारहहातप्रमाणभूमिकासम्यक्प्रकारयत्नाचर्णयकीसोधिकरि बहुरितिसभूमिकाऊपरिमंडपकरना॥बहुरितिसभूमिकाप्रमाणकरिऔररचनातिहांकरनीसोगाथाकरिकहैहै॥ गाथा

। ॥१॥ अहवाजिणागमपुत्थएसुसम्मालिहाविऊणनऊसु
हतिहिलग्गमुहुत्ते ॥ आरंभोहोयकायव्वो ॥२॥ टीका ॥ द्वादश
गानितेषामंगोयसांगदर्शनरेवतिलकचार्रा

द्रशाश्रुतदेवीप्रतिष्ठास्थाप्यते ॥३॥ टीका ॥
अथवाजिनागमपुस्तकेषुसम्यक्प्रकारेणलिखापयित्वाशुभे
लग्नशुभमुहूर्त्तेआरंभोभवतिकर्त्तव्यतां ॥४॥ अर्थ ॥ प्रथमप्रति
ष्ठाकाआरंभकेविषे द्वादशांगरूपहै ॥ अंगकाहियेशरीरजाकाअ
दर्शनरूपहैतिलकजाके बहुरिचारित्ररूपीहिहैं वस्त्रका
धारणजाके ॥ बहुरिचतुर्दशपूर्वकाहैआभरणजाके ऐसीश्रुतदे
वीकहिये सरस्वतीताकूं प्रथमप्रतिष्ठाविषैवडाविभवकहिये ॥उ
वतैस्थापनकरनी ॥ ॥ अथवापूर्वोक्तप्रकारसरस्वतीकीमूर्त्तिन-

सूरीणांपाठकानांचसाधूनांचयथागमं ॥ ८ ॥ वामेचयक्षींबि-
दक्षिणेयक्षमुत्तमं ॥ नवग्रहानधोभागेमध्येचक्षेत्रपालकं ॥ ९ ॥
यक्षाणांदेवतानांचसर्वालंकारभूषिता ॥ स्ववाहनाफलोपेतंकुर्य
त्सर्वांगसुंदरं ॥ १० ॥ इत्यादिकवर्णनकरिसंयुक्तप्रतिमाकरनी ॥
वृहद्दरिइनितेंभीविशेषवर्णन प्रतिष्ठापाठ नथाशिल्पशास्त्र्में
हैतिहांतेंजानना ॥ इहांकोईकहे ॥ लोहकीप्रतिमाऊपरलिखें
सोकहांकहिहे ॥ ताकाउत्तर ॥ प्रबोधसारग्रंथमेंकहीहे ॥
॥ श्लोक ॥ तन्नामस्थापनाद्रव्यभावादितिविभेदतः ॥ रत्नधातु
शिलालोहलेपादौन्यासस्संभवः ॥ १ ॥ इतिप्रतिमालक्षणं ॥ ॥
आगेंप्रतिष्ठालक्षणविधिकहेहैं ॥ गाथा ॥ बारहअंगगिज्जा-
दंसणातिलयाचरित्तवत्थहराचोदहपूब्वाहरणाठवेयवायस्स-

कैलक्षणकाकिंचित्वर्णनकेश्लोकअन्यशास्त्रनितेंलिखियेहैं॥ उ
क्तंच ॥ श्लोक॥ सुमुहूर्ते सुनक्षत्रेबांधवैभवसंयुतः॥ प्र
शेषुनदीनगवनेषुच॥१॥ स्निग्धांकठिनांसीतांस्वादांसुस्वरां
शिलां॥ समानीयजिनेंद्रस्यबिंबंकार्य्यंसुशिल्पिभिः॥२॥ कृषादिरो
महीनांगश्मश्रुरेषाविवर्ज्जितम्॥ स्थितंप्रलंबितहस्तंश्रीवत्साढ्यंदि
गंबरं॥३॥ पल्यंकासनवाकुर्याच्छिल्पिशास्त्रानुसारतः॥
चनिःस्त्रीकंभ्रूक्षेपादिविवर्ज्जितं॥४॥ निराभरणकंचैवप्रफुल्लवऋ
दनासिकं॥ सौवर्णंराजतंवापिपैत्तलंकांस्यजंतथा॥५॥
त्तिकंचैववैडूर्यादिसुरत्नजं॥ चित्रजंचतथालेप्यंक्वचिच्चंदनजंमतं
॥६॥ प्रातिहार्याष्टकोपेतंसंपूर्णावयवंशुभं॥ भावरूपानुविद्धांगं
कारयेद्विंबमर्हतं॥७॥ प्रातिहार्य्यैर्विनाशुद्धंसिद्धबिंबमपीदृशं॥

पाषाणैः॥प्रतिमालक्षणविधिनाजिनादिकाराध्यते॥२॥ अर्थ ॥
मणिकहियेहीराआदिनवरत्नकी॥बहुरिकांचनकहिये सुवर्णकी
बहुरिरूपाकी बहुरिपीतलकी बहुरिमोतीकी बहुरिअन्यश्रेष्ठपा
षाणकी तथाआदिशब्दतेलोहआदिधातुकी तथाचित्रलेपादिक
कीप्रतिमाकैलक्षणकी विधियुक्तजिनादिकहिये श्रीतीर्थंकरआ
दिजिनलिंगकीप्रतिमाकरावणी॥ भावार्थ ॥जोशिल्पिशास्त्रोक्त
प्रतिमाकेलक्षणहै ताकरिसंयुक्त तथाप्रतिष्ठापाठोक्तप्रतिमापू
र्वोक्तप्रकारकीहीराआदिकहिये वज्रमाणिक इंद्रनीलमणी गोमे
द लहसणिया पुष्पराज मुंगा मोतीआदिरत्ननिकी तथासोनारू
पाकी तथापैतलतथा लोह ताम्रआदिधातूकी अरपाषाणकीप्र
तिमातीर्थंकरादिकीकरनी सोप्रतिमाकेलक्षणहैं॥इहांप्रतिमा

नाहिहै ॥ बहुरि प्रथमानुयोगशास्त्र का वेत्ता न होय तो प्र[illegible] नके
जानपना विना कैसे करै ॥ बहुरि जिनबिंब के प्रतिष्ठा के शास्त्र कै
का यथोक्त वेत्ता न होय ना की विधि की कर्तव्यता [illegible] ताकूं या
यतो प्रतिष्ठा कैसै करै ॥ बहुरि [illegible]
लातो इहां योग्य है ई नाहिं ॥ बहुरि उपाशकाध्ययनागादि श्रावकाचा
र विषै थिर बुद्धि न होय तो इहां अन्यमत के नाना शास्त्रनि के पढिवे तें
कहा प्रयोजन सधै है ॥ यातै पूर्वोक्त गुणनि करि मंडित पुरुष ही प्रतिष्ठा
के करिवे विषै योग्य है ॥ अन्य योग्य नाहिहै ॥ इति इंद्रलक्षणम् ॥
आगै प्रतिमा का लक्षण कहिहै ॥ ॥गाथा ॥ मणिकणयरयणरुप्पमयं
तलमुत्ताहलोवलाइहि ॥ पडिमालक्खणविहिणा जिणाइपडिमंध
॥१॥ टीका ॥ मणिकांचनरौप्यमय पैतलमुक्ताफलोपला

यतनामाअंगजामैं एकनिःकेवलश्रावगधर्मकावर्णनहै॥ताकैवि
षैंनथाताकेंअनुसारश्रावगाचारशास्त्रवर्णेहैतामैंथिरवुद्धीहोय
॥ऐसेपूर्वोक्तप्रकारगुणनिकरिमंडितपुरुषहैसोजिनशासनविषै
प्रतिष्ठाचार्यकह्याहैं॥ भावार्थ ॥यहपूर्वोक्तलक्षणकरियुक्तपुरु
षहीप्रतिष्ठाचार्यजिनशासनमेंकह्याहैं॥इनिविनाअन्यनकह्याहै
॥यातैंजाकाअनार्यदेशकानथाहीणकुलका॥वहुरिशूद्रजातिका
जन्महोयसोप्रतिष्ठाकरिवैयोग्यनाहिंहै॥वहुरिआर्यदेशउत्तम
कुलत्रिवर्णकीजातिकाउपज्याहोय अरकीयाव्रणकरिसहि
तोवहभीयोग्यनाहिंहै॥वहुरिजाकाशरीरकुरूपीहोयसोभीइसू
महानकार्यविषैंनशोभे॥यातैंऐसाविडरूपीनहोय॥वहुरि
निरतीचारसम्यक्तनहोयतौमिथ्यादृष्टीपुरुषनिकरिप्रतिष्ठाहोय

रूपमागोविशुद्धसम्यक्त्वप्रथमानुयोगः कुशलः पुनःप्र
र्णविधिंवेत्ता ॥३॥ श्रावकगुणैः उपेतः
खलुर्इ्इअमुनाप्रकारेणप्रतिष्ठाचार्योजिनशासनेकथितः ॥४॥
र्थ ॥ इहांकहियेप्रतिष्ठाचार्यकेलक्षणकहैहैं ॥ प्रतिष्ठाकरनेवालाआ
चार्यप्रथमतोदेशकारिकुलकारिआदिशब्दतेंक्रीयाचरणकरिशुद्धहो
य ॥ बहुरिउपमारहितरूपवानशरीरकरिसंयुक्तहोय ॥ बहुरिविशु
द्धसम्यक्तकहियेनिरतिचारसम्यक्तकरिसंयुक्तहोय ॥ बहु
नुयोगकहिये त्रीषष्ठीसलाकेपुरुषोद्भवतथाएक२
षोद्भवजोपौराणग्रंथकाज्ञाणवैमैकुशलहोय ॥ बहुरिजिनप्र
कर्मीप्रतिष्ठाकीविधिकेशास्त्रताकरिउक्तजोविधिकावेत्ताहोय ॥
॥ बहुरिश्रावककैगुणनिकरिसहितहोय ॥ बहुरिसातमाउपाशकाध्य

कलहकरवैकरै तबक्रोधहोवैनैं कार्य्यकाविनाशहोय ॥ बहुरिश-
केवान् नहोयतोयहमाहानकार्य्यद्रव्यविनाकैसैकरै ॥ तथासत्यवा-
दीनहोयतोऊठेंकूंयहकार्य्यशोभहीनहीं ॥ अरुवणैभीनाहीं ॥ ब
हुरिमार्दवगुणजोकोमलभावनहोयतोअभिमानीकठोरभावकीये
यहकार्य्यवणैहीनाहिं ॥ यातैंपूर्वोक्तगुणनिकरियुक्तहीकारापक-
कहिये जिनबिंबकाकरावनैवालाश्रेष्ठहैं ॥ ऐसैकारापककावर्ननकी
या ॥ इतिकारापकलक्षणम् ॥ आगेंइहांकहिये प्रतिष्ठाचार्यका
लक्षणकहैहैं ॥ गाथा ॥ देसकुलजायरूवोणिरूवमांगोविसुद्धस
मतोपढमाणिऊसकुसलोपयट्ठलक्खणविहिविदाणू ॥ १ ॥ सावय
गुणाववेहोउववासयऊयणसत्थथिरबुद्धीएवगुणोपइट्ठाइरिऊजि
णसासणेभणिउ ॥ २ ॥ टीका ॥ देशकुलजात्यादिकेनशुद्धः ॥ नि

तः॥२॥ अर्थ ॥श्रीजिनबिंबकाकरावनैवालाप्रथमतो
य॥१॥ बहुरिवात्सल्यअंगकाधारीहोय १ अरप्रभावनागुणका-
रीहोय १ बहुरिक्षमावानहोय १ अरशक्तिवान्होय १ तथादूस-
रेपाठमैंसत्यव्रतीकाभीपदआयाहैं॥सोसत्यवादीहोयहै १ बहु-
रिमार्दवनामागुणकरिमंडितहोय १ बहुरिश्रीजिनशासनकाअर
गुरुकाभक्तिवंतहोय॥२॥ ऐसेगुणनिकरिसंयुक्तपुरुषशास्त्रविषैं
कारापककह्याहैं॥ भावार्थ ॥यहपूर्वोक्तकारापककेलक्षणकहे
सोयाविनाकारापकनशोभैहैं॥यातैंभाग्यवंतविनाकहाकरिशकै॥
बहुरिवात्सल्यांगनहोयतोजिनमूर्तिकाकरावनाहीनवणैसदेवकू
रभावरहै॥बहुरिप्रभावनाभावनहोयतोयामैंप्रभावनाकैसेकरै॥
बहुरिक्षमावाननहोयतोक्रोधकेवशिहोयनिसकार्यविषेजन२ सूं

नवणायतनाकीपूजाकरी ॥ अरमृगध्वजकेवलीकीमूर्तिवणायका
मदेवसेठनेपूजी ॥ ऐसावर्णनबृहद्धरिवंशमेंलिखाहै ॥ औरश्रीपंच
ग्रमनिमाकुंभीश्रीगोमट्टसारकेजीवकांडकेआदिविषेसं-
काकारनेनमस्कारकीयाहै ॥ तदुक्तं ॥ तत्रनाममंगलार्हन्
सिद्धाचार्योपाध्यायसाधूनांनामस्थापनामंगलकृत्रिमाकृत्रिमजि
नांप्रतिबिंबं इत्यादिवर्णनहै ॥ यातेंश्रीजिनलिंगसर्वत्रपूज्यहै
॥ आगेपूर्वोक्तकारापकादिपंचभेदनिकेपृथक् २ भेदनिकुंकहिते
कास्वरूपकहैहै ॥ गाथा ॥ भाग
खमासच्चमद्दवोवेदाजिणसासणगुरुभत्तो ॥ सूतेकारावउ
भणिउ ॥ १ ॥ टीका ॥ भाग्यवंतोवात्सल्यप्रभावनाक्षमाशक्तिमार्द
वोपेतः ॥ जिनशासनगुरुभक्तोभवतिशास्त्रेकारापकः

॥ टीका ॥ कारापकेंद्रप्रतिमाप्रतिष्ठालक्षणविधिफलंचएवएतेपंचा
धिकाराः ॥ ज्ञातव्याप्रथमस्थापनायाः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ कारापककहिये
प्रतिमाकाकरावनेवालापुरुष १ इंद्रकहिये प्रतिष्ठाकाकरावनेवाल
१ प्रतिमाकहियेऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरआदि
कीप्रतिमा १ अरप्रतिष्ठाकालक्षिणिकीविधि १ बहुरिनाकाफल १
ऐसेसद्भावनामापहिलीस्थापनाकेयहपंचभेदजानना ॥ इहांकोईक
है ॥ श्रीतीर्थंकरकीप्रतिमातोप्रसिद्धहीहैं ॥ परंतुऔरइनिसिवाईको
नकीहैं यातेंतीर्थंकरआदिकीप्रतिमाकही ॥ ताकाउत्तर ॥ बाहुबलीआदिअन्य
केवलीकीभीहोयहैं ॥ सोबाहुबलीकीप्रतिमातोकर्नाटिकदेशविषेंप्रसि
वेराजेहैं ॥ ताकुंगोमट्टस्वामिकहैहैं ॥ बहुरिअन्यजिनमंदिरविषेंभीहो
यहैं ॥ औरसंजयनस्वामीकीप्रतिमाधरणेंद्रकीआज्ञातेंविद्याधरों

तीयास्थापनानभवतिकर्तव्यताकस्माल्लोकेकुलिंगेमतमोर्यदाभवतितस्मान्निःसंदेहो॥१॥ अर्थ॥ अवारइसहुंडावसर्पिणीकालमेंयहपूर्वोक्त

यहैं॥यातैंनकरनीकिसतैंनकरनीसोकहैहैं॥अवारलोकमैंकुलिंगीविषैंजोमनिमोहितहोयजायतातैंनकरनीयहनिःसंदेहहै॥

भावार्थ॥अन्यमतविषैंभीअसद्भावस्थापनाकरैहै॥सोउनिकैएकरीतिदीखनैलगिजाय॥लोकनिमैंभ्रमरूपप्रवर्तनाहोयजाय॥यातैंसद्भावस्थापनाहीकरनी॥अरअसद्भावस्थापनानकरनी॥यहआचार्यनिकीआज्ञाहै॥ आगैपूर्वकथितजोपहिलपनाताकास्वरूपकुंविशेषकरिकहैहै॥ गाथा॥कारावगिंदपडिमाहंफणंचेवणएपंचअहियाराणायव्वापढमठवणाए

लकेफलकालिखासोकैसेहै॥ ताकाउत्तर ॥वराटककाअर्थकौडी
कातोप्रसिद्धहीहै॥सोइहांपूजनमेंसंभवैनाहिं॥अयोग्यहै ॥स्प
र्शयोग्यभीनाहिंहै॥यहतोदोयइंद्रीजीवकाकलेवरकाहाडहै॥
इहांयहअर्थवनैनाहिं इहांतोकेवलबीजकाहीअर्थवनेहै॥
कोषनिमेंलिखाहै॥ तदुक्तं ॥हेमिनाममालायां ॥ कमलकीकर
णिकानाम बीजकोषोवराटकः॥ तथाचोक्तं॥ अमरकोशेप्रथमकां
हैं ॥यातेंवराटकशब्दकाइहांकमलके
हीकाग्रहणकरना कौडीनलेना ऐसेअसद्भावस्थापनाकास्वरूप
॥ आगेइसअसद्भावस्थापनाकाकरनाअवारवर्जेहै॥ गा
था ॥हुंडावसप्पिणीएविइयाठवणाणहोइकायव्वा ॥१
गमयमोहियंजदाहोयसंदेहो॥ टीका ॥हुंडावसर्प्पिणीकालविषै

नुष्यकीहैं ॥ अरसंतमस्कवर्णसमानरंगहैं ॥ अरनाकीप्रतिमाकहिं
तो एकांगुलकीहैं ॥ अरस्यामवर्णकीतथास्वेतअरक्तपीतहरितआ
दिरंगकीहैं ॥ अरकहीं हस्तविलस्तिआदिनानाप्रकारकीउच्चताते-
लीयांविराजैहैं ॥ औरजाके कर्णस्कंधकैसम्मिलितआदिअन्यरूप
दीखैहैं ॥ तथाऐसैहीअन्यतीर्थंकरादिकीमूर्तिसाक्षात्तीर्थंकरके
आकारतेंनिकृतीरूपदीखैहैं ॥ तिसतेंजिनमूर्तिअतदाकारहैं ॥ अर
साक्षात्जिनतदाकारहैं ॥ ऐसेंअपनेंमनहीतैंपूर्वोक्तमानैंहैं ॥ सोऐ
सामाननामिथ्याहैं ॥ शास्त्रविरुद्धहैं ॥ यातेंमन्यमान्यभावछोरिशा
स्त्रोक्तमाननाभलाहैं ॥ ऐसेदोयप्रकारकीस्थापनाकास्वरूपश्रीजि
नेंद्रकरिकह्याहैं ॥ बहुरिइहांकोईपूछे ॥ वराटकपदकानामतोक
पर्द्दीकाकहियेकोडीकानामहैं ॥ अरउपरिवराटकनामकाअर्थकम

टकाकहियेकमलकेफलनिकूंअपनीबुद्धितैंसंकल्पकरितांका-
वचनतैंनामकाउच्चारकरै ॥ जोयहफलानातीर्थंकरआदिदेवन-
थाशास्त्रवागुरुहै ॥ ऐसानामलेयअक्षता
पिकरिपूजे सोदूसरीअसद्भावनामास्थापनाकहीहै ॥ भावार्थ
॥ अक्षततथाकमलगटे अथवापुष्पआदिकुंमंत्रपूर्वकतीर्थं-
करादिदेवतानिकानामलेयताकुंउचास्थापिकरिताकुंपूजनासो
असद्भावनामास्थापनाकहीहै ॥ याकानामनिराकार तथाअत-
दाकारभीहैं ॥ बहुरिकेतेंकिसद्भावअरअसद्भावकुंऐसेंकहेहै ॥
जोसाक्षात्तीर्थंकरकेवलीसमोसरणमेंतिष्ठेहैसोतोतदाकारहै
॥ अरताकीप्रतिमाअतदाकारहै अरताकीपूजाभीतदाकारअ-
तदाकारहै ॥ यातैंजैसैंश्रीऋषभनाथकीदेहकीउच्चतातोपंचसैध-

श्रीजिनेंद्रकारिकहिहैं॥सोतामेसाकारवंतपदार्थजोस्वर्णआदि-
विषैंजाकैगुणनिकाआरोपणकरियेसोसद्भावनामाप्रथमस्थाप
नाहै॥ भावार्थ ॥स्थापनाकेदोयभेदश्रीजिनेंद्रकारिकत्याहैसो-
ताकैविषेजोअर्हंतादिककेगुणनिकाआरोपणस्रुवर्णआदिपदा
र्थजोस्रुवर्णरोप्यरत्न पाषाण तथापैनलआदिधातुविषेंकारता
कीमूर्तिकरियेसोप्रथमसद्भावनामास्थापनाहै॥याहीकानाम
कारहै तथातदाकारहै॥ आगेअसद्भावनामादूसरीस्थापनाका-
स्वरूपकहेहैं॥ गाथा ॥अरकयवराडऊवा अमुगोएसनिणिय
बुद्धिए॥ संकप्पिउणवयणं॥एसाविणेयाअसद्भावा॥१॥ टीका॥
अक्षतत्वावराटकाएषसएवइतिर्निा
र्यते॥एषावर्न्निनाअसद्भावाःद्वितीया॥२॥ अर्थ ॥अक्षतअरवरा

पुष्पाणियत्क्षेपयतिसावर्णितानामपूजा ॥२॥ अर्थ ॥
तादिकैनामोच्चारकुंकरिनिर्म्मलक्षेत्र्‌मे
मपूजाकहिहैं॥ भावार्थ ॥निर्मलभूमिविषेअर्ह
न्ततें सिद्ध १ आचार्य १ उपाध्याय १ सर्वसाधु १ तथासरस्वती १
दिकानामलेयकरिपुष्पांजलिक्षेपणकरैसोनामपूजाकहीहैं ॥जा
कानामलेयपुष्पचढाइदे ताकीनामपूजाहैं॥ इतिनामपूजा ॥
स्थापनपूजाकादोयप्रकारकास्वरूपकहेहैं ॥ गाथा ॥
आवादुविहाइवणाजिणेहं
॥१॥टीका ॥सद्भावासद्भावाद्विविधास्थापनाजिनेनम
॥२॥अर्थ॥सद्भाव १ बहुरिअसद्भाव १

विधानकास्वरूपजानना॥ ॥इतिपूजनविधानम्॥ ॥आगेष
ट्प्रकारकापूजाकास्वरूपकहैहै॥ गाथा ॥णामठ्ठवणादव्वखि
त्तेकालेवियाणभावेय॥ छव्विहपूयाभणियासमासउजिणवरि
देहिं॥१॥टीका॥नामस्थापनाद्रव्यक्षेत्रकालज्ञायतेभावपूजाष
ट्प्रकारपूजाभणितासंक्षेपतः॥जिनवरेंद्रैः कथिता॥२॥ अर्थ॥
नामपूजा १ स्थापनापूजा १ द्रव्यपूजा १ क्षेत्रपूजा १ कालपूजा १
भावपूजा १ ऐसेंश्रीजिनवरेंद्रकरिकेकथितपूजासंक्षेपतेंकहीहै
॥सोछहप्रकारकीजानना॥ आगेयाकापृथक्२स्वरूपकहितस
तेनामपूजाकूंकहैहैं॥ गाथा ॥उच्चारिउणणामंअरुहाइणविसु
द्धदेसम्मि पुप्फाणिजंखिविज्जंतिविणियाणामपूयासा॥१॥ टी-
का॥उच्चारंकीयतेयत्नामानंअर्हनादीनांविशुद्धक्षेत्रेपवित्रस्थाने

है ॥ वस्त्रनिकेचमरनसकनैतोगायनीकेभीनोनलिखेहैं ॥ ताकुंकहि-
येहै ॥ भगवज्जिनसेनाचार्यनेश्रीत्रादिपुराणविषेलिखेहैं ॥ तदु
क्तं ॥ श्लोक ॥ बिंदुज्योतिगणेनैवराजकेनाबिराजतम् ॥स्वकीर्तिनि
र्मलैर्बीज्जमानंचांरमजन्मभिः॥१॥ तथाऔरभीशास्त्रनिमेंलिखा
हैं ॥यातेंशास्त्रोक्तहीश्रद्धानकरनायोग्यहैं॥बहुरि
सभेदपूजाकेकत्थेसोहीयामेंतेकेतोकपाठांतरकारिपुन्योपार्जनके
कारणजिनमंदिरमें भव्यजीवनिकेपुन्यकाकारणश्रीपद्मनंदीस्वा-
मिनेभीपद्मनंदीपंचविंशतिकाविषेकत्थाहे॥ तदुक्तंकाव्य ॥
भिःस्नपनैमहोत्सवशतैःपूजाभिरुल्लोचकैः नैवेद्यैर्वलिभिर्ध्वजश्च कु-
लशैस्तूर्यत्रिकेजागरैः॥ घंटाचामरदर्पणादिभिरपिप्रस्तार्य
परांभव्याःपुण्यमुपार्जयंतिसततंसत्यत्रचैत्यालये॥ १॥ ऐसेपूजन

कैसैंकीयाहै॥बहुरियहभीनमानियेतो श्रीमूलसंघविषैंभ
यूरपीछिकामुनिजनश्रपनेहस्तविषैराखैहैं॥सोभीकेशहीहैं।
ताकुंश्रीजिनमंदिरविषैवंदनासमयप्रतिलेखना
है॥ताकेहस्तवारुंवारलगैहै सोभीवारुंवारधोवनाहिहैंतो
नकैसैहै॥बहुरिऐसैमकेवस्त्रआदिकेशास्त्रनिकेबंधनाआदिहो
यहैं॥अरजिनमूर्तिकेनिकटचंद्रोपकपडदाआदिहोयहैं॥तथा
पूजाकेविषैसरस्वतीकीपूजाविषैचहोडनालिखाहै॥बहुरिता
कीमालाणमोकारजपनेकेअर्थिकहीहै॥तोचमरकहाअलीनहै
बहुरिचामरपदकाअर्थभीचमरीगायनिकेकेशाकाहीहोयहै॥अर
जहांतहांशास्त्रनिमैस्वेतहीचमरकह्याहै॥
रंगकेचमरस्कनेनाहिंहै॥यातैंपूर्वोक्तहीयोग्यहै॥इहांफेरिकोईक

तनामापूजाहै ॥ बहुरिप्रभुकेआगेनिर्विकारभावनितैंनृत्यकरिये
सोनृत्यपूजाहै॥ बहुरिप्रभुकेआगेताकेपंचकल्याणआ
रकेमंडलकीरचनामांडिकरिताकीपूजाकरियेसोस्वा
जाहै॥ बहुरिप्रभुकेभंडारविषैयथाशक्तिद्रव्यधा
है बहुरिप्रभुकेआगेहारितदोबधरियेसोदोबपूजाहै याकीभ
ननी ऐसेइकवीसभेदकरितथाइनिशिवायअपनै
दनकरिश्रीजिनराजकीपूजाकीविधिकरनी ऐसेश्रीउमास्वामिनेकही
सुरहगऊनिकेपूंछिकेबालकेचमरनकेकोईसदेहकरै ॥ ताकूंकहियेहै ॥
याकीआस्थिदूरकरिकेवलवालनिकुंधोयगूंथिकरिचम
षहै॥ बहुरिजोबालनिकाभीदोषमानियेतोजेनमतविषेदूसराका
ष्टसघभयाहै॥ ताकैगोपूंछिकीपीछिकाकानिरूपणकीयाहै॥ सो

नादिचरुधरियेसोनैवेद्यपूजाहैं॥याकाविशेषवर्णनषट्कर्म्मोपदे
शरत्नमालादिकजिनशास्त्रनितैंजानना॥बहुरिजिनेंद्रकैआगेभृं
गारनालोद्भवजलकीलीनधारादीजिये सोजलपूजाहैं॥ तदुक्तं॥
काव्य॥ धारात्रियंददतुजन्मजरायुहानी ॥बहुरिप्रभुकेध्वजाचं
द्रोपकआदिकार्यविषैं तथाताकाशरीरकेपूंछिवेविषैंनानाप्रका
रकेवस्त्रदीजियेसोवस्त्रपूजाहैं॥बहुरिउज्जलरूपेतचमरीकेच
मरप्रभुकेउपरिढुलावैसोचामरपूजाहै॥ बहुरिप्रभुकेशिरऊपरि
स्वेतछत्रधरिये सोछत्रपूजाहै॥बहुरिप्रभुकेआगेनानाप्रकारके
वंशुरीतालमृदंगभेरीढोलदमामावीणआदिवादित्रनिकुंबजाइये
अथवाजिनमंदिरमेंवणायकरिधरियेसोवादित्रपूजाहै॥बहुरिप्र
भुकेआगेताकेगुणानिकावर्णनरागोच्चारतैंगायकरिकरियेसोगी

जावसरे॥भाषा॥श्रीफलसुपारीशेवदारिमाविदामभेवसी-
ताफलसंगनारासरुधसदाफलहैं॥विहीनासपतिअौविजो
राअामृअमृतसेनारंगीजंभीरकरुणाफलजेरुमलहैं॥ऐसैफल
शुद्धआनिपूजियेजिनेंद्रजानितिहुंलोकमांहिजेमहा
कोयलहैं॥फलसेंनिपूजेंशुद्धमोक्षफलप्राप्तिहोइ॥द्रव्यभाव
पूजेसुखसंपत्तिअचलहैं॥१॥बहुरिप्रभुकेआगेअक्षतका-
पुंजकरियेसोअक्षतपूजाहै॥बहुरिप्रभुकेआगेनागवल्लि
अधरियेसोपत्रपूजाहै॥याकीचर्चाभीपुष्पवत्जाननी॥ब
प्रभुकेआगेपूगीफलजोकेवलसुपारीधरिये
॥बहुरिप्रभुकेआगेयथाविभवनाना
दालिभातबहुरिव्यंजनादिसुरससुस्वादुमहातृप्तिकारीभोज-

हा ॥ पावकदहैसुगंधकुं धूपकहावतसोय ॥ खेवतधूपजिनेशकुं
ष्टकर्मक्षयहोय ॥ १ ॥ तथाचोक्तं ॥ देवश्रुतगुरुसमुच्चयपूजायां ॥
व्य ॥ दुष्टाष्टकर्मेधनपुष्टजालसंधूपनेभासुरधूम्रकेतून ॥
तानिसुगंधगंधैर्जिनेंद्रसिद्धांतियतीन्यजेहं ॥ १ ॥ इत्यादिकसर्वंगे
रधूपकुंअग्निविषेखेवणाईलिखाहैसोहीकरना ॥ अरमंडपआदि
विषैधायकारिक्षेपणानाहिं ॥ बहुरिऐसैनकरिये ॥
यकरिचढाइयेतोखेवणाकाहियेकूंबोलिये ॥ तथासुगंधदशमीआ·
दिकैदिनभीअग्निविषैनडारिये ॥ उहांभीधायकरिआगेधरिये ॥
तैंआम्नायपूर्वककर्तव्यताहीफलिनहोयहैं ॥ बहुरिनानाप्रकारकैसु
स्वादिष्टसुगंधितमनोज्ञफलकुंप्रभुकेआगेधरियेसोफलपूजाहै ॥
तदुक्तं ॥ भव्याभगवानदासकृतब्रह्मविलासकेकवितछंदनफलपू

माननातोनाकूंबहुरिकहाधर्म्मोपदेशदेना॥यातैंभोभ्रात
कहैहैं॥इहांतुमकूंहिसमझनायोग्यहै॥ऐसेंऔरभीजिनागममैंठो
र२गंधविलेपनपुष्पदीपआदिकावर्णनपूर्वोक्तप्रकारकीयाहै सोथो·
रीबुद्धिवालाकहांतकलिखै॥विवेकीतोथोराहीमैंघणांजाणलेयहैं
॥स्थालीस्तंदुलन्यायेन॥ बहुरिप्रभुकेवामांगधूपखेवनासोधूप·
पूजाहैं॥इहांधूपकूंधोयकरिपूजाकीथालआदिमंडपपैंगेरनानाहिं
कह्याहै धूपकूंतोअग्निविषैंहीडारनायोग्यहैं॥बहुरि
धूपपूजाकुंनपावैहै॥यातैंनानाप्रकारकेबावनचंदनादिसुगंधद्रव्य·
काचूर्णकीधूपखेवनासोधूपपूजाहै॥ तदुक्तं॥ काव्य॥ श्रीखंडादि
द्रव्यसद्व्यगर्भैरुद्यद्धूमामोदितस्वर्गवर्गैः॥धूपैर्पापव्यापद्युच्छेदहंता
नांर्हिनहंत्स्वामिनांधूपयामि॥१॥ तथैवोक्तं॥वर्णार्शिदासेन॥ दो

१॥ यानैंजानैंआचार्यकाअविनयकीया॥

विनयकीया॥ काहितेंजाकेंश्रीजिनवानीकाअधयनहुनासोजिसतैं जिसकाअविनयभया॥ बहुरिजोजिनकूंआचार्यकेंरिकल्यानमानै हैसोअन्यशास्त्रनिमेंपापीऐसाकह्याहै॥ ताकाविशेषऐसेंजोजिन- वचनकाएकअक्षरकुं तथाचारअक्षरकुंअथवाअष्टाक्षरकाएकपद कुं अपनेंगुरुजनतेंलयकरिताकाउपकारकुंनमानैं ताकागुणकुंभू लिजाय॥ तिसपापीकुंफेरिधर्मोपदेशदेनाकिसकेंअर्थिहै॥ भावा र्थ॥ नदेना॥ तदुक्तं॥ बृहद्धरिवंशे॥ श्लोक॥ अक्षरस्यापिचैकस्य पदार्थस्यपदस्यवा॥ दातारंविस्मरत्पापीकिंपुनर्धर्मदेशनं॥ १॥ उ क्तंच॥ एकाक्षरपरदातारायोगुरुंनैवमन्यते॥ स्वानयोनिशतंगत्वा चांडालसोपिजायते॥ १॥ यानैंजाकेंशास्त्रकेंअक्षरकाहीगुणन-

कीमेटिनैवालीऔषधिपूर्वविधनोनैंभीरचीनाहिहैंतोहमतैंक हामानेगा ॥ तदुक्तं ॥ मूर्खस्यनास्त्यौषधं ॥ बहुरिआचार्यके नहीनमाननातोआचार्य्यकीभीमान्यनभई ॥ बहुरिमान्यकेअ- भावकारिबडाअविनयभया ॥ यातैंअन्यसिद्धांतकेविषैंऐसालि- खाहै ॥ जोश्रीजिनवानीकापाठकअवारपंचमकालमें सोसाक्षात्केवलीकातोअवारअभावहै ॥ यातैंअवारपंचमका- लमें जोजिनवचनकेअध्यापककुंपूजेहै सोतानैसाक्षात्केवली ज्ञानीहीकुंपूजेजानना ॥ तदुक्तं ॥ पद्मनंदीपंचविंशतिकायांमूल ॥ काव्यछंद ॥ संप्रत्यस्तिनकेवलीकिलकलौत्रैलोक्यचूडामणिस्तद्वा- चः परमासतेत्रभरतक्षेत्रेजगद्योतिकाः ॥ सद्रत्नत्रयधारिणोयतिवरा स्तासांसमालंबनंतत्पूजाजिनवाचिपूजनमतःसाक्षाज्जिनंपूजितः ॥

क्त ॥ ६ ॥ याभांतिपूर्वोक्तवर्णनिकुंजानिकरिदीपकजोयप्रभुकी
आरतिसन्मुखउतारिकरिताकेदक्षांगधरना ॥ अरप्रभुकेवामांग
कीउरधूपदानधरना ॥ तदुक्तं ॥ श्रीउमास्वामीविरचितश्रावगाचा-
रे ॥ श्लोक ॥ मध्यान्हेकुशमैपूजासंध्यायांदीपधूपयुक् ॥ वामांगे-
धूपदाहस्यदीपंकुर्याच्चसन्मुखी ॥ १ ॥ अर्हतोदक्षिणेभागेदीपस्य-
चनिवेशनं ॥ इतिवचनात् ॥ बहुरिएतेपूर्वोक्तप्रकारकथनकुंस्रुणिक
रिकोईकऐसैभीकहैहैं ॥ जोतुमनेएतापरिश्रमकरिकहाकीया ॥ ह
मतोइसीपूर्वोक्तकथनमैंनोएकभीनमानैं २ हमारैभावहोयगासो-
करैंगे ताकुंकहियेरेभोलेतुमनमानैसोहमनेतेरैमनावनेऊपरिए-
तापरिश्रमनकीयाहैं ॥ हमनेतोआज्ञाप्रधानपुरुषकेसमुझिवेके-
अर्थिकीयाहैं ॥ अरतूंआपकेअर्थिसमझासोतेरेस्वभावकास्वरूप

चतुर्थमासकैर्विहीनतां विश्वचतुरष्टशेकरे॥सकार्तिके स्वातिषु कृष्ण
भूतसुप्रभातसंध्यासमये स्वभावतः॥१॥अघातिकर्म्माणिनिरु
द्धयोगकौविधूयघातींधनवद्विबंधनः॥विबंधनस्थानमवापसंक
रोनिरंतरायोरुसुखानुबंधनं॥२॥सपंचकल्याणमहामहेश्वरःप्र
सिद्धनिर्वाणमहेचतुर्विधैः॥शरीरपूजाविधिनाविधानतःसुरैःस
मभ्यर्च्यतसिद्धशासनः॥३॥

रैर्दीपितयाप्रदीप्तया॥तदास्यपावानगरीसमंततःप्रदीपिताकाशत
लाप्रकाशते॥४॥ततोऽथवैश्रेणिकपूर्वभूभुजप्रकृत्यकल्याणम
हंसमप्रजा॥प्रजग्मुरिंद्राश्चसुरैर्यथायथंप्रयाचमानाजिनबोधम
ः॥५॥ततस्तुलोकःप्रतिवर्षमादरात्प्रसिद्धदीपालिकयात्र
भारते॥समुद्यतंपूजयितुंजिनेश्वरंजिनेंद्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभा

फलस्यकारणंपुण्यंफलंपुण्यविनाशकः॥
तदुक्तं॥ श्लोक॥ फलस्यकारणंपुण्यंफलंपुण्यविनाशकः॥ धर्म्मस्यकारणंपुन्यंध-
स्यकारणंपापंपुण्यंपापविनाशकः॥१॥ धर्म्मस्यकारणंपुन्यंधर्म्मंमोक्षस्यसाधनं।
र्म्मंपुण्यविनाशकः॥ मोक्षस्यकारणंधर्म्मंधर्म्मंमोक्षस्यसाधनं पूर्वोक्तकथनकाश्रद्धा-
२॥ ऐसेंअनुक्रमतेंमोक्षकाकारणजानिपूर्वोक्तकथनकाश्रद्धा
नकरना बहुरिदीपकजोवनाहींनिषेधहै ताश्रीवर्द्धमानस्वामी-
कीजिसदिनमुक्तिभई तिसदिनकीरात्रिमेंपावापुरीमेंआदरतें
सर्वलोकांनैंभक्तिकरिघरि२दीपकजोयकरिउत्सवमहोत्सवकी
यासोधर्म्मकार्यकाउत्सवविषेंश्रौररीतिनथी॥ यातेंदीपोत्सवकी
या बहुरितिसदिनतेंहीप्रतिवर्षनीर्वाणपूजापूर्वकदीपमालि-
काभरतमेंप्रगटीसोअद्यापिलोककरेहै॥ऐसेंश्रीजिनसेनाचार्य
प्रणीतबृहद्धरिवंशमेंलिखाहै॥ तदुक्तं॥ काव्य॥चतुर्थकालेर्द्ध

पीहै॥सोअघातूनामसूक्ष्मकाहै
हिंसाकाहीत्यागनेंहोयहै॥ ॥
तिसतेग्रहस्तकेधर्मकार्यमेंकिंचित्हींसाभीहोयताकापापहै
कारणहै॥जैसेपुष्पहैसोफलकेकारणहै बहुरिसोपुन्यहैसो पापका
हरिवेवालाहै॥ बहुरिफलहैसोपुष्पकेबिनाशकहै॥तैसेंहीपुन्य
काकारणपापहै बहुरिसोपुन्यहैसोधर्म्मकाकारणहै॥
हैसोपुन्यकाविधानकहै॥ बहुरिसोधर्म्महैसोमोक्षकाकारणहैं
अरमोक्षकासाधकहैं॥ऐसेपरस्परकारणहैं यातेंकोईकपापका
फलपुन्यफलरूपीलगेहैं॥ सोहीइसग्रंथमें पूर्वअहिंसानुव्रतके
वर्णनमेंपुरुषार्थसिद्ध्युपायग्रंथोक्तआचार्यातेंकह्याहैसो बिचार
लेना॥ऐसेपूर्वोक्तपरस्परकारणकानिरूपणश्लोकर्

मानिनासैंअरुचिकरनातोग्रहस्तकैपापरूपीषट्कर्म्मजनितपाप
देवपूजादिकषट्कर्मविनाकैसैंमिटै॥यातैंअरुचिनकरना॥बहुरि
याकाआरंभविषैंछहकायकेजीवनिकीहिंसाकादोषमानियेतोन
वीनमंदिरकाकरावनातथाप्रतिमाकावणावना॥प्रतिष्ठाकरावना
संघकुंभोजनदेनातीर्थयात्राकरनारथयात्राकरना महाभिषेकादि
पूजाकाकरनाआदिसर्वकार्यनिविषैंकह्याहिंसाकाआरंभनहोयहै
यातैंयामैंदोषमानियेतोकरनाभीयोग्यनाहिंहै॥दूंढ्यामतिहीहो
नायोग्यहै॥तथाकाहूग्रहस्तआदिकीयथाविभवआरातिमालिले
यतामैंहीप्रभुकीविनाप्रतिष्ठितशिल्पिकारतैंमूर्तिमोललेयनाकूपथ
रावनाभलाहैतामैंसर्वारंभमिटैहै॥बहुरिश्रीजिनमतएकांतपक्षीहै
नाहिं अनेकांतपक्षीहै॥यातैंग्रहस्तकाधर्म्मएकोदेशीअणुव्रतरू

गुदाधोई ॥ अरहरितदूर्वादिककुंथुंदीसोकहिनाकरनाअोर २
भया ॥ बहुरिवैष्णवभीकहहैसोकथाकेवेगणतोकहिनेकेहै अर-
खानेकेअन्यहै ॥ ऐसानुमाराकहिनाहैं ॥ यानैरेवतीरानीवत्वचनिकी
दृढतारारिवजिनशास्त्रोक्तविधिकरियथाशक्तिआचर्णकरनायोग्यहै
॥ मनोक्तकरिवेमैंअपनाअकल्यानहैं ॥ भावार्थ ॥ धर्म्मविषैविघ्न-
करनासोअकल्याणहीहैं ॥ बहुरिसम्यक्दर्शनभीश्रीजिनवचनकेश्र
द्धानतेंहीहोयहैं ॥ अरसम्यक्ज्ञानभीताकाजाणपणातें होयहै अ
रसम्यक्चारित्रभीताकाआचर्णतेंहोयहैं ॥ यामैंशंकाकीये ॥ तीनु
हीकानाशहोयहैं ॥ बहुरिनाशभयेमिथ्यात्वहीकासद्भावहोयहैं ॥ या-
तैंश्रीजिनागमकथितवचनकीश्रद्धाहीयोग्यपरमार्थरूपीहै ॥ श्रद्धा
नविनाघनापढिवैतैंतथासहलीतैंकहासाध्यहैं ॥ अोरपूजाविषैंपाप

नाहिहैं॥ देखोकहांतोअमोलिकरत्नअरकहांकाचखंडसमानगि-
रिकादूकडायातैंपूर्वहद्दछोरियलपूर्वकदीपककेढकणेआदियत्न
करिदीपकहीजोवनायोग्यहैं॥ बहुरिइहांकोईकहै ॥केशरकालगा
वना पुष्पतथापुष्पमाल्यकाचढ़ाोडिना अरदीपककाजोवनाशास्त्र-
निमें तथापूजापाठमेंलिखाहै सोतोहमभीजानेहैं वाचेहैंवापढे
हैं परंतुकरनानाहिं॥ शास्त्रकीबातऔर अरहमारीबातऔर॥ शा
स्त्रनिमेंलिखीसोतोशास्त्रनिमेंहै॥ हमारेकरिवेकीहममेंहै॥ ताका
उत्तर॥ भोबडेबडेश्रद्धानीहो यहतुमाराकहिनाअभव्यसेनवत्है॥
सोउपदेशतोशास्त्रोक्तदेना॥ अरचलनविकृतीरूपचलना देखोजिना
गममें एकबूंदजलकीमैंअसंख्यातजीवकह्येसोऐसीजानताभी-
अभव्यसेननेंछलकपटमायामयीतलावमेंजायकरिनिसजलतैं

॥१॥ तथैवोक्तं ॥ दशलक्षिणीकपूजायां ॥ दीपैर्विनाशिततमोत्-
करुद्धनासैः कर्पूरवर्तिज्वलितोज्वलभाजनस्थैः ॥१॥ तथैवोक्तं ॥
अनंतव्रतपूजायां ॥ छंद ॥ दीपोज्वलजालंरत्नविसालंघृतकर्पूर
॥१॥ इतिच ॥ तथाचोक्तं ॥ देवपूजायां ॥ काव्य ॥ ध्वस्तो
ध्रीकृतविश्वविम्भमोहांधकारप्रतिघातदीपान् ॥ दीपैर्कनत्कां-
चनपात्रसंस्थैर्जिनेंद्रसिद्धांतियतीन्यजेहं ॥१॥ इत्यादिकअनेकठा
रिदीपकजोवनैकावर्णनहै सोकेसैनिषेद्धकरना ॥ बहुरियामैंहिं-
सादिकदोषकुंदेखिगिरिरगकारिचहोइनासोकही भीशास्त्रनिमें
कहीनाहिहै ॥ यहमनोकरीतिहै ॥ सोपूर्वाचार्यनिकेवचनिकुंउत्था-
पनीनवीनपद्धतीकीप्रवर्तनाकेअर्थहै ॥ सोयहचलनआज्ञा
बाह्यहै ॥ बहुरिलोकनिकुंरत्नकेही दीपकवतावनासोभीकरतेर्द

थैवोक्तं॥दीपककीजोतिप्रकाश॥बहुरिभैय्याभगवतिदासकृत॰
ब्रह्मविलासविषैंभीदीपकतैंपूजिवेकाफलजुदा२वर्णायकरिक॰
वित्तमेंकह्याहै॥ तदुक्तं॥ब्रह्मविलासकेषु॥कवित्तभाषाछंद॥
दीपकअनायेवहुंगतिमेंनआवेकहुं वर्तिकेवनायेकर्मवा
है॥आरतिउतारतहीआरतसबटरजाय पापादिगधरैंपापपंका
हरतुहै॥वीतरागदेवजुकीकीजेदीपकसौंचित्तलायदे
वगाभीयोंभनतुहै॥२॥ऐसेजुदाजुदाफलकह्याहै॥बहुरिऔर
घनीहीपूजाविषेंघृतकर्पूरादिकेदीपकजोवनाकह्याहै॥सोकिंचि
तलिखियेहै॥तदुक्तं॥श्रीपार्श्वनाथपूजायां॥छंद॥
लज्योतिरसालकर्पूरादिकजोयधरं॥इतिच॥तथैवोक्तं॥षोडश॰
कारणपूजायां॥मरत्नध्वांतहरैरुदारैर्दीपैलसत्केवललब्धिहेतोः

गग्रेदीपान्प्रद्योतयाम्यहम् ॥ १ ॥ बहुरि पूजासारग्रंथविषैंभीदी
पपूजाविषैंयेही श्लोकहैं ॥ तथान्यअन्यभीलिखाहै ॥ तदुक्तं ॥ पूजा-
सारे ॥ काव्य ॥ कनकरजतपात्रेस्थापितं हारिसारं हविरमृतमिवाच्चै
रर्च्चिय ॥ मोजिनाय ॥ मसृणधवलदीर्घस्थूलकर्पूरयाशिज्वालितविम-
लदीप्तिर्व्याप्तदीपैःप्रदीपैः ॥ इत्यादिजानना ॥ बहुरिषट्कर्मोपदेश
रत्नमालाविषैंदीपकहीजोवनालिखाहै ॥ तदुक्तं ॥ दशमपरिच्छेदे
॥ श्लोक ॥ त्रिकालंवरकर्पूरघृतरत्नादिसंभवं ॥ प्रदीपैः पूजयन्भव्यो
भवेद्भाभारभाजनं ॥ १ ॥ बहुरिद्यानतरायकृतपूजाविषैंभीदीपकी
जोतिभीलिखीहै ॥ तदुक्तं ॥ दीपकजोतितिमरक्षयकार ॥ इत्यादि ॥
तथाच ॥ बानकपूरसुधारदीपकजोतिसुहावनी ॥ भवातापनिवार
दशलाक्षिनपूजोसदा ॥ तथैवोक्तं ॥ नमहरउज्जलजोतिजगाय ॥ त

बहुरिअर्हदासश्रेष्ठीनै ॥ अष्टान्हिकाकीकार्तिकशुक्लपूर्णवासे
कीरात्रीविषैंअपनेमस्तकजिनमंदिरविषेंआठूहीस्त्रीजनसहित
श्रीजिनबिंबकीपूजाकरिपीछेंसम्यक्तकीउत्पत्तिकीजुदी२कथाकरी
है ॥ तदुक्तं ॥सम्यक्तकौमुद्यां॥ श्लोक ॥ इतितासांवचः
चैत्यालयेगमत् ॥ मंगलद्रव्यसंयुक्तोवसुपूजोविचक्षण ॥ १॥
त्वानुपुष्पाद्यैःधवलानांगायनेपर ॥ परमेश्वरस्यविधिवन्वसुपूजा
कृतानदा ॥ २॥ इनिमैंभीरात्रीकाहीप्रसंगआयाहैं ॥ ऐसेंपूजाकीं
वेदीपकजोयचढावणाआदिरात्रीपूजाकावर्णनठौर२लिखाहै ॥
बहुरिजिनसंहिताविषैंजिनप्रतिमाकेविराजवेकी
गंदीपकनिकाप्रद्योतनपूजकपुरुषनैंकियालिखाहै ॥ तदुक्तं ॥श्लो
क ॥ ॐ केवल्याववोधाकोंद्योतयत्यखिलंजगत् ॥यस्यतन्पादपी

पूर्वकजिनमंदिरमैंजायतिसौसमयरात्रीमैंजिनदेवकीपूजाक-
रिसोभगवज्जिनसेनाचार्यनैंमहापुराणमैंकहीहै॥ तदुक्तं।
॥ अथापरेद्युरुद्यावमुद्योतयितुमुद्यमी॥
पूतंययौवरः॥१॥ प्रयानमनुजातिस्मश्रीमतीतंमहाद्युतिं॥
तमिवरुद्धाधतमसभास्कराप्रभा॥२॥ पूजाविभूतिमहर्त
त्यंजिनालयम्॥ प्रापदुत्तुंगकूटाग्रसस्कमेरुमिवोच्छ्रितं॥३॥
सतंप्रदक्षिणीकुर्वन्सतानिबिबभोनृपः॥ मेरुमर्कद्रवःश्रीमान्
महादीप्तपरिस्कृतः॥४॥ कृतेर्याशुद्धिरन्तर्हि प्रविश्यजिनमं-
दिरम्॥ तत्रापश्यदृषीन्दीप्ततपसःकृतवंदनः॥५॥ततोगंध-
कुटीमध्येजिनेंद्रार्चांहिरण्मयीं॥ पूजयामासगंधाद्यैरभिषेक
पुरःसरं॥६॥ कृतार्चनस्ततस्तोतुप्रारेभेसौमहामती॥ इत्यादि

पकजोयकारिपूजालिखीहैं॥ तदुक्तं॥ काव्य ॥ दीपैप्रदीपितजग-
त्त्रयरश्मितेजैर्दूरीकरोमितममोहविनाशनाय॥ तीर्थंकरायजिनां
शवहीरमानं॥ इत्यादिकहे॥ बहुरित्रीकालपूजाविषैंजोअष्टद्र-
व्यकरिपूजाकरे ताकेसंध्यासमयपूजाविषैंएकदोयघटिकारात्री
अवश्यआवैहै॥ तबदीपकविनापूजाकेसेहोय॥ यातैंदोयकाल-
तोपूजाकहिनाहिंहै॥ बहुरिचांदनषष्ठीव्रत दुग्धद्वादशी आकाश-
पंचमी अनंतचतुर्दशी आदिघणेहीव्रतनिकीपूजारात्रीविषैंहोय
हैं॥ भावार्थ ॥रात्रीविषैहीकरनीकहीहै तोदीपककीकहावातहै
॥ तबकोईकहै ॥ रात्रीपूजाकहांकहाकहीहै॥ ताकाउत्तर ॥सर्वत्र
तकथाकोषमेंकहीहै॥ तहांजुदी२कथामेंदेषिलेणा॥ बहुरिवज्र
संघश्रीमतीनैंविवाहकेपीछैरात्रीविषैंश्रीभर्त्तारदीपकनिकेउद्योत-

भूमिषु ॥ १ ॥ कार्तिकेमासिनक्षत्रे कृत्तिकाख्ये निशामुखे ॥ प्रदीप-
जगतामेकं दीपावलिभिरर्चयेत् ॥ २ ॥ प्रभूतचरुकेणापि पूजयेऽ-
गद्गुरुं ॥ स्थापयेत्स्तूपिकाग्रेपि दीपं दीपितदिग्मुखं ॥ ३ ॥ मंडपे गोपुर
द्वारे परिवारगृहेष्वपि ॥ प्राकारतट देशेपि दीपमालां निधापयेत् ॥ ४
जिनेंद्रार्चाविधौ दीपाः सर्पिषामोदशालिना ॥ कर्पूररसंयुताभिश्च-
वर्तिभिः कल्पिताः शुभाः ॥ ५ ॥ एवमास्फ निशास्फ जिनेंद्रं यः समर्चय-
तितीडितदीपैः स्यात्सनम्रनरेश्वरचूडारत्नसमर्चितपादः ॥ ६ ॥
सैंकडे हजारे दीपक रात्रीमें जोवना कह्या तो एक दीय आदि दीपकका
जोवना पूजा आदि विषैं कैसे निषेध्य हैं ॥ बहुरि तिसफल करि चक्रव
र्ति आदि करि पुजित चर्ण जाका ऐसा तीर्थंकर पद पावे हैं ॥ याते यह उ
त्तम कार्य हैं ॥ बहुरि विदेह क्षेत्रस्थित सीमंधरादिकी पूजा विषैं भी दी-

दीपैर्कर्पूरनिवातैर्धूनकाग्रविनिर्घृतैः॥ पूज्ययामिगुरुभक्त्यागोतमं
गणनायकम्॥१॥ बहुरिजिनसंहिताविषैंकार्तिकमासमेंकृत्तिका
नक्षत्रकेदिनकीसंध्यासमयविषैंकार्तिकोत्सव श्रीजिनमंदिरमेंकर
नालिखाहैं॥ तिहांविधोक्तअभिषेकपूजनविषैं प्रचुरनानाप्रकारकी
बहुतनैवेद्यजिनाग्रेधरनी॥ बहुरिपूजाकीठौरआदिकेतीकजाय-
गातोघृतपूरितकर्पूरकीवृत्तिकादिकेदीपकजोवना॥ अशेषजिन-
मंदिरकेसर्वत्रक्षेत्रजामंडपमेंगोपुरद्वारपरिवारग्रहप्राकारतटतोर
णआदिअधोईआदिविषैंतैलादिपूरितदीपकजायधरनाऐसालि-
खाहैं॥ तदुक्तं॥ भगवद्देकसंधिकृतजिनसंहितायांश्लोकचतुर्दश
मपरिच्छेदे॥ श्रेणिकाग्रेगौतमस्वाम्युवाच॥ श्लोक॥ अथपार्थिववृ
क्ष्यामि दीपार्च्चांकार्तिकीश्टणु॥ यथास्यात्पृथिवीनाथप्रकाशःसर्व

यातैंदीपकजोयकरिचढ़ोडनैवालाका मोहकर्मभीनष्टहोयहै॥
हुरिश्रीपद्मनंदिआचार्यनैपद्मनंदिपच्चीसीविषैंदीपकनिकीश्रेणी
जोयकरिप्रभुकीआरतीउतारनीकहिहै॥ भावार्थ ॥घणैंदीपक
निकुंसंजोयकरिआरतीकरनी॥ तदुक्तं ॥काव्य॥आरा
र्त्रिकसिखाविभातिस्वच्छेजिनस्यवपुषिप्रतिबिंबितंयत् ॥ध्यानान
लोमृगयनइवावासिष्टंदग्धुपरिभ्रमतिकर्म्मचयप्रचंडं॥१॥बहुरि
देवपूजाविषैंभीऐसाहीबहुदीपककीवर्तिनिकीजालकुंजोयकरि
आरतीकरनीकहीहै॥ तदुक्तं ॥ॐलोकानामर्हतांभूर्भुवःस्व
र्लोकानेंकिंकुर्वतांज्ञानधाम्नादीपैर्ज्ञातेप्रज्वलत्किलजालेपादां
भोजद्वंद्वमुद्योतयामि॥१॥बहुरिगुरुपूजामैंभीकर्पूरआदिवर्तिका
तथाघृतकादीपकजोयकरिचढ़ावनालिखाहै॥ तदुक्तं ॥श्लोक॥

तथाअपनेगृहस्थनिकेगृहआदिविषैभीकेशरचर्चितगिरीधरीक रिपूर्वोक्तकार्यकरनायुक्तहै॥ केवलपूजाहीतैंधर्म्महोयतोयहभी सत्यहै॥ धर्म्मकेअंगतोबहुतहै॥ बहुरिदीपककाजोवनेमेंपापहै तोमंदिरआदिप्रभुकेनिकटभीदीपकनकरना॥ बहुरिजोपापहीहै ऐसादृढश्रद्धानमानिकरिशास्त्रोक्तनमानना॥ तोशास्त्रनिमैंतो दीपकसंजोवनाकह्याहै सोकैसेमिथ्याकह्येजाय॥ बहुरिशास्त्र लखाहैं॥ जोश्रीजिनेंद्रकुंदीपकसंयोजनकरेहै ताके रोहिणीनामाव्रतकाउपवासकाफलहोयहै॥ सोरोहिणीव्रतकास्व रूप पूर्ववर्णनकीयाहैतिहांतैंजानना॥ तदुक्तं॥ श्रीयोगींद्रदेवेन श्रावगाचारेप्राकृतः॥ दोधकछंद॥ दिवंदइदिणइजिणवरहं मोह हंहोइणठाइ॥ अहउववासरोहिणीहि मोहविपलयहंजाइ॥ १॥

श्रीजिनकीपूजाअनेकजन्मकेपापकूं हरैहैं ॥ ताएकजन्मकातथा पूजाकेआरंभकापापतोसहजहीहरेहै ॥ येहीनिःसंदेहहै ॥ तदुक्तं ॥ ऐसोपंचणमोकारो सवपापपणासणो ॥ बहुरिजाकैयामैंसंदेहहै सोजैनीनाहिंहै ॥ द्रव्यलिंगीसाधसमान द्रव्यलिंगीश्रावकहै बहुरितेपूजाभीकरेहै ॥ सोलोकविषैंअपनीप्रसंसाकेअर्थकरेहै ॥ परमार्थतोहैनाहिं ॥ ॥ आगेपांचमाभेदकहेहै ॥ ॥ प्रभूकेआगैघृतकर्पूरादिकादीपकसंजोयकरिधरना सोदीपनामापूजाहै ॥ इहांकोईकहै ॥ दीपककेजोवनेमेंतोमाछरपतंगादिजीवनिकानिपातनप्रत्यक्षहोतदीखैहै यातैंइनिकेअभावरूपरिहमकेशरच्चितनारेलकीगिरिचहोडनाकरेहै ॥ ताकाउत्तर ॥ दीपकमौंहिंसाहैतोरात्रीकेविषैभीशास्त्रनिकेवांचिनेमें तथाप्रभुकेदर्शनकार्य्यमे

हितधर्मकापालिनातोप्रमाणमेंहैं ॥ अरताकीआज्ञाबाह्यआहैं
साधर्मपालिनाअप्रमाणमेंहै इंद्रियामनवत् ॥ यातैंआज्ञाबाह्य
केसर्वक्रियाचरणअधर्म्महीहै ॥ धर्मतोजबकाहिये ॥ आज्ञाविच
यधर्म्मध्यानकापहिलाभेदकुंपालेनबधर्म्महैं ॥ अन्यथाअधर्म्म
हीहै ॥ बहुरिपूजाकेसमयस्नानादिककरितथाअष्टद्रव्यकीशुद्धि
जलादिकतैंधोवनेकरितथाजलादिकगंधपुष्पाक्षतनैवेद्यदीपधूप
फलादिवस्तुसचेतअचेतकरिजोकिंचित्‌हिंसारंभहोयताकापाप
जाणिनासुंअरुचिकरनासोयहश्रद्धानतोढूंढ्यादिकतैंमिलतहैं ॥
जैनीकानाहिहै ॥ बहुरिपूजातैंपूजाकाआरंभकाहीपापनकटैतोघने
जन्मकेपापपूजाकरनेवालेकेकैसेकटै ॥ अरनकटैतोपूजाविषैबहुत
धनलगायउलटापापकिसअर्थबांधना ॥ यहभीबडीभूलहै ॥ यातैं

योग्यहैं॥बहुरिआज्ञालोपकरिअपनैमनोक्त भावनितैंसिवाय २
भीधर्म्मपालिनासोधर्म्मनाहिंहै॥उलटाअधर्महीहैं॥जैसैंएक-
साहुकारकेदोयगुमासनेदेशांतरजायतानैंसेठकेअर्थिविणज-
कीया सोएकननेतो सेठकाहुकुममाफिक वस्तुलीनी वावेचीता
मैं दैवयोगकरिद्रव्यटूटा अरबहुधननमिला॥अरदूसरेनैसेठ-
कीआज्ञालोपकरिवस्तुकाक्रियाविक्रयअपनैमनोक्तविधितैंस-
मयदेखिकरिकीया तामैंबहुधनकीवृद्धिभई॥बहुरितबदोहुका
हिसाबदेखिसेठनैंविचारीसोहुकुममाननेवालाकुंअपनैघररा
रव्या॥अरविनाआज्ञावालाकुंबहुतधनसहितछोरिदीया॥ भा
वार्थ ॥आज्ञाबाह्यकुंलोभकरिरारवैतो किसीदिनसेठकाघरिकुं-
खोयदेयहैं॥यानैंजिनागमकीआज्ञायुक्तकार्यमैंकिंचित्

यहैं ऐसाकहिकरिमौनपकडिरहिना सोश्रीजिनमतमैंअनेकन
यहैं सोवस्तुकेस्वरूपकासाधनकेनिमित्तहैं॥अरताकास्वरूपकूं
नानाद्रव्यगुणपर्यायकरिस्वचतुष्टयपरचतुष्टयआदिकरि
कास्वरूपग्रहणकीयाहैं॥यातेंनयनिक्षेपास्वरूपकेग्रहणकेअ
र्थकह्येहैं॥त्यागवैकेअर्थतोनाहिंकह्येहैं॥सोतुमअनेकनयकुं
कहिकरिउलटावस्तुकास्वरूपतज्या सोविपरीततांहैं॥यातेंशा
स्त्रोक्तश्रद्धानकरनायोग्यहैं॥मनोक्तकरनायोग्यनाहिहैं॥ऐसेपु
ष्पपूजाकास्वरूपकह्या॥बहुरियामेंहिंसाहीमानिये
कीबूंदविषेअसंख्यातेजीवसर्वज्ञनेश्रीजिनागममेंकह्याहैं॥
रिजिनबिंबकाअभिषेकतथाप्रक्षाल्यकाभीकरनेमेंपापहोयगा॰
सोमीनबनेगा॥यातेंशास्त्रकेवचनकाश्रद्धानकीआज्ञाहीमानना-

व्रतकथाकोश तथा आराधनाकथाकोश तथा षट्कर्मोपदेशरत्न
माला तथा अन्यजैनकेसर्वागममैंविस्तारकरिवर्णनकीयाहै।
तैंजानिलेना ॥ यातैंइहछोरि पूर्वोक्तश्रद्धानकरनायुक्तहै॥ बहुरि-
फेरिकोईकहै ॥ पूर्वोक्तवर्णनशास्त्रनिकीसाखिदेयकरिकह्यासो
सत्यहै तोभीहमतौनकरै आचार्यनिकीजुदी २ नयहैं॥कहा
नेकौनसीनयतैंकह्याहै ॥ श्रीजिनमतमेंअनेकनयहैं॥
नमानेंधनाहीकह्याहैताकहाकरै॥ ताकाउत्तर ॥ भोश्रद्धानी-
भाईहो ऐसाकहिनातोश्रद्धानीकानाहिंहै॥यहतोअन्यमतीका
कहिनाहै॥जैसेंस्वेतांबरीतोअछेडाकानामलेयकरिमौनग्रहेहैं॥
अरवैष्णवपरमेश्वरकीअपारमायाकहैहैं॥तैसेंहीतुमाराकहिना
हैं॥सोआचार्यनिकीजुदी २ नयहैं ॥ अरश्रीजिनमतमेंअनेकन-

अरुजोकरैहैसोपूर्वोक्तप्रकारकाजीवहै॥

अनेकप्रकारकेजपतपव्रतनियमयमतथास्वाध्यायत
पूजाआदितथानानाप्रकारकीक्रियाकूंसाधैहैसोभीताकेविफ
लहैं॥ताकुंमोक्षनमिलैहै॥संसारकाहीबीजहै॥बहुरिएकस·
म्यक्दर्शनविशुद्धिपुरुषहैसोमोक्षकापात्रहै॥दर्शनभ्रष्टकूंनि
र्वाणपदनाहिहै॥अरचारित्रभ्रष्टकुंतोमोक्षहै॥ तदुक्तं ॥श्री
दकुंदाचार्यप्रणीतदर्शनप्राभृते॥ गाथा ॥दंसणभट्टाभट्टादंस
णभट्ठाणत्थिणिव्वाणं॥ सिझंतिचरियभट्ठा दंसणभट्ठाणसिझं
ति॥१॥ यातैंजिनागमोक्तश्रद्धानकरिकर्तव्यताकरनीयुक्तहै॥
रपुष्पनिकरिजानैजिनराजकीपूजाकरीहै॥ताकाफलस्वर्गलोक
आदिकमतैंमोक्षपदपायेहैं॥ताकीकथायुक्तपुण्याश्रवतथा·

काव्य ॥ जिनाभिषेके जिनवैप्रतिष्ठा जिनालये जैनसुयात्रयायां ॥
सावद्यलेसो वदते स पापी स निंदको दर्शनघातकस्य ॥ १ ॥ बहुरि
तदुक्तं ॥ आराधनाकथाकोशे ॥ श्लोक ॥ श्रीमज्जिनेंद्रचंद्राणां
म् ॥ स्वर्गमोक्षप्रदा प्रोक्ता प्रत्यक्षं परमागमे ॥
१ ॥ यः करोति सुधीर्भक्त्या पवित्रो धर्म्महेतवे ॥ स एक दर्शने शुद्धो म-
: ॥ २ ॥ यस्तस्या निंदकः पापी स निंदो जगति ध्रुवम्
॥ दुःखदारिद्र्यरोगादिदुर्गतिं भाजनं भवेत् ॥ ३ ॥ इत्यादिक घने ही
जिनागममें लिखा है ॥ यातैं निषेधनेवाला दर्शनका घातक तथा
सम्यक्‌दर्शनतैं भ्रष्ट कह्या है ॥ ऐसो पापी दुर्गतिका धारी होय है
॥ यातैं जिनाभिषेक अर जिनप्रतिष्ठा और जिनमंदिर जिनयात्रा आ
दिपूजाके विषैं हिंसारंभ पापकुं कहि करि ताका निषेधन करना ॥

ढावणाहीपापकारीहैं॥यामैंबडीहिंसाहोयहैं॥अरधर्मअहिं
सारूपीहैं यातैंअभिषेकविषैंअरपुष्पआदिकेचढावनेविषैंघ
नासावद्यआरंभहोयहैं यातेंहमनकरैहैं॥ ताकाउत्तर ॥श्री
नाभिषेकविषैंअरपुष्पादितैंजिनपूजाकरैताकेविषैं तथाआरती
र्थयात्रा जिनबिंब तथा प्रतिष्ठा आदिकार्य्यकेविषैंजोआरंभक
हैहैं अरसावद्ययोगकहैहैं॥बहुरिहिंसारंभभणैंहैं॥सोमिथ्या
दृष्टिहैं॥दर्शनभ्रष्टहैं॥बहुरिपापीहैं॥अरसम्यक्दर्शनकाघाती
कहैं॥बहुरिश्रीजिनधर्म्मकाद्रोहीहैं॥ऐसेंजिनागममेंपूर्वाचार्य्य
मुनिनेकह्याहैं॥ तदुक्तं ॥श्रीयोगींद्रदेवेनश्रावगाचारेप्राकृतदो
धक॥ आरंभेजिणएहावियए जोसावज्जभणंति॥दंसणतेणं
मइमलियो॥इछुणकांइउभंति॥१॥ बहुरितदुक्तं ॥सारसंग्रहे॥

इत्यादिक घनेहीं जैनके पुराण तथा पूजा आदि विषैं पुष्पचरननी कै हीं धरना कह्या है॥ बहुरि भय्या भगवतीदासकृत ब्रह्मविलासवि षैं भी नाना पुष्प चढ़ोदना कह्या है॥ तदुक्तं ॥ कवित्त ॥
चतिन्हे जीतिकैं गुमानि भयो ऐसो कामदेव एक जोधायो कहायो है॥ ताके सरजानीयन फूलनिके हंद बहु केतकी कमल कूंद केवरा सुहा ॥ मालती महासुगंध वेलकी अनेक जाति चंपक गुलाब जिनच रनन चढायो है॥ तेरी ही सरन जिन जोरन वसाय याको सुमन सु पू जौं तोहि मोहि ऐसो भायो है॥ इत्यादिक कही है सो यातैं अतियोग्य ॥ बहुरि अयोग्य नाहिं है॥ बहुरि पुष्पतो पीछे चढे है॥
शरीरहीं सर्वांगस्नानसमय जलादिकनैं मग्न करिये है॥ तो पुष्पकै धरिवे मैं कहां अयोग्य है॥ बहुरि जो तुम कहोगे पुष्पजाति तो च-

तभई जो पूजा की पुष्पमाला कुं पूजा किये पीछे लेय अपना पिता कुं पापकी हानि के अर्थ सभा विषैं दीनी ॥ तब पिता नैं आनि विनय करि अपनै हस्त तें लीनी ॥ अर पुत्री कूं उपवास का परिश्रम करि खिन्न देखि पारणा के अर्थ ताका विसर्जन कीया ॥ तदुक्तं ॥ श्रीअजितनाथपुराणे ॥ श्लोक ॥ जयसेनापि सद्धर्मं तत्रादौ एकदा मुदः ॥ पर्वोपवासपरिम्लानं तनुरभ्यर्च्य साऽर्हतः ॥ १ ॥ तत्पादपंकजाश्लेषापवित्रां पापहानये ॥ पित्रां पित्रे दित द्वाभ्यां हस्ताभ्यां विनयेन च ॥ २ ॥ तामादाय महीनाथो भक्त्या पश्य जयाभिधां ॥ उपवासपरिश्रांता पारयंती विसर्जितं ॥ ३ ॥ इहां भी पुष्पमाला प्रभु के चरन के ही न्वहो ई कही है बहुरि सुलोचना नैं ऐसे ही गंधोदक अर पुष्पमाला अपनै पिता अकंपन नामा राजा कुं दीन्ही सो कथन श्रीआदिपुराण में लिखे हैं ॥

स्तुकिमिच्छत्यहो ॥ देवस्यार्चनसारवस्तुनिचयान् गंधांबुपुष्पत्रय-
ग्राह्यंशेषमशेषवस्त्वनुचितंग्राह्योन्निरत्नत्रयं ॥ १ ॥ यातेंप्रभुकेंचर
ननिकास्पर्शितगंधगंधोदक अर पुष्पमाल्यादिअंगीकारकरना ॥
सोह्रीमदनसुंदरीनेंश्रीसिद्धचक्रकीपूजाकागंधोदक
रचंदनअंगरक्षककूंदेयातेंसतेंताकाशरीरनिरामयकीया ॥ सोय
ह गुणजलचंदनपुष्पमेंतोहैनाहिं ॥ प्रभुकेंचरणकमलमेंहैं ॥ तदु
क्तंश्रीपालचरित्रे ॥ श्लोक ॥ इतिद्व्यर्द्धिकमेणैषासिद्धान्प्रपूज्य
भक्तितः ॥ ददौभक्तेंगरक्षेभ्यः तत्पुष्पोदकचंदनात् ॥ १ ॥
कैंचरननकैंगंधलगावना ॥ अरताकेंचरननकेंऊपरिपुष्पधरनाद्र
ढभया ॥ बहुरिअजितनाथ तीर्थंकरकीमाताजयसेनाकुमारअव
स्थामें अष्टान्हिकीपूजाकूंकरि श्रीजिनप्रतिमाकेंचरनकीस्पर्शी

व्यैजलैकर्पूरचंदनैः ॥१॥ अक्षतैश्चपकाद्यैश्च पक्वान्नैवरदीपकैः ॥ धूपैः सुगंधिभिर्भव्यानारिकेलादिसत्फलैः ॥२॥ तद्विलेपनगंधांबुपुष्पाणिस्मादद्दौमुदा ॥ श्रीपालयागरक्षेभ्यः पाणिभ्यांकम्विहानये ॥ ३॥ औरसिद्धचक्रकेमंत्रकेजाप्यकेसमय भीपुष्पयंत्रउपरिहीधरनाकह्याहैं॥ तदुक्तं ॥ श्रीपालचरित्रे ॥ श्लोक ॥ यत्रस्योपरिदातव्याअष्टोत्तरशतप्रमा ॥ जाप्याएकाग्रचित्तेनजातिपुष्पेणधीधनैः ॥१॥ औरदेवपूजनकीआशिकाभीतीनहीवस्तुकीकहीहैं ॥ सोभीजिनमूर्तिकीअंगकीस्पर्शितलेणहैं ॥ अन्यलेणनाहीहैं ॥ बहुरिजोगंधगंधोदकअरपुष्पमाल्ययाविनाअन्यवस्तुपूजाकीअंगीकारकरै ॥ ताकोरत्नत्रयक्षयहोयहैं ॥ तदुक्तं ॥ काव्यछंदः ॥ नाडीपश्यतिहस्तमामयपरिक्षार्थंगृहीत्वाभिषकुस्पृष्ठाराजपा

॥ तदुक्तं ॥ व्रतकथाकोषे ॥ श्लोक ॥ तस्मात्त्वं

तमाहभद्रेशृणुब्रुवे ॥ व्रतंतेदुर्लभंयेनेहापून्नप्राप्यतेस्फुटं

॥ १ ॥ शुक्लश्रावणमासस्यसप्तमीदिवसेर्हतां ॥ स्नापनंपूजनंकृ-

त्वाभक्त्याष्टविधमूर्जितम् ॥ २ ॥ मध्यतेमुकुटंमूर्धिरचितंकुसुमोत्क

॥ कंठेश्रीवृषभेशस्यपुष्पमालाचधीयते ॥ ३ ॥ ऐसेसेठपुत्रीनेमा-

र्क सोयाकाविशेषवर्णनकथासहितव्रतकथाकोषमे

॥ नसुंदरीनेअष्टान्हिके वर्षेसि

। ॥ औरसातसैसुभटकेशोच्यातातेंकुष्टव्याधीग

ई ॥ सोगंधपुष्पताकैलगावनाहीसत्यहैं ॥ तदुक्तं ॥ श्रीपालचरित्रे ॥

श्लोक ॥ तत्रनंदीश्वराष्टम्यांसिद्धचक्रस्यपूजनं ॥ चक्रेसाविधिनाता

वसानसमयबहुमोलदेयकरिभव्यजीवानेंअपनाकंठमेंपहिरनी
सोमालाचरननिकेंस्पर्श्येविनाकेसेगुणयुक्तहोयहै॥केवलदूं
तेतोअतिशययुक्तनहोयहै॥ ॥तदुक्तम्॥ ॥श्रीजि
ज्ञकल्पप्रतिष्ठाशास्त्रे॥ ॥संस्कृतधारा॥ ॥श्रीजिनेश्वर
चरणस्पर्शादनर्घ्यापूजाजातासा माला महार्घ
बहुधनेनग्राह्या भव्यश्रावकेनेति॥इहांभव्यश्रावकनिकुं
उपदेशहैं॥अभव्यकुंअरमिथ्यातीकुंधारणकरनानकह्याहै॥
रिव्रतकथाकोषविषें॥मुकुटसप्तमीकेव्रतकीविधिविषें॥सेठकीपुत्री
नेंआर्यकाजीकेवचनानतें श्रावणशुक्लसप्तमीकाउपवासकेदिनअ
भिषेकपूजाकरिपीछेंपुष्पमालातोजिनमूर्तिकेकंठमेंपहिराई।
रपुष्पकामुकटप्रभूकेशिरधरा॥पीछेंऔरविधिहैं॥सोअयोगहो

ओपरिक्षिप्त्वाकृपंकजं ॥गतोमुग्धजनानांच भवेत्सत्कर्मशर्म्मदं ॥
२॥ ऐसेंइहांभीचरनउपरिधरनालिख्याहैं॥ बहुरिदेवताभीपुष्पवृ
ष्टिउपरिहिकरैहैं॥बहुरिदेवपूजाविषैं ऐसें प्रथम प्रतज्ञाकै अर्थतो
जिनप्रतिमायेंपरिपुष्पांजलीक्षिपतुहैं॥अरताकैआगैजिनप्रति
माकैउपरिपुष्पांजालिक्षेपणाकह्याहै॥ तदुक्तं ॥ ऊँविधियज्ञप्र
तिज्ञायजिनप्रतिमोपरिपुष्पांजलीक्षिपेत् ॥ बहुरिश्रीगोमट्टस्वा
मीकीप्रतिमाकैउपरिदेवताकेशरकुस मनिकीवृष्टीकरैहैं॥सोनि
र्वाणकांडविषैंकह्योहै॥ तदुक्तं ॥गाथा ॥गोमट्टदेववंदामिपंचश
॥देवाकुणंतिवीठीकेशरकुसमाणितस्सउवर
॥१॥बहुरिजिनयज्ञकल्पविधानविषैंकह्योहैं॥जोजिनमूर्तिकी
पूजाकेसमयताकीचरननकीस्पर्शितपुष्पमालामहाभिषेककेअ

योग्यहैं॥सोजिनपदउपरिधरैंविनापुष्पमालानाकीस्पर्शितहो-
यनाहिं॥यातैंउपरिहिधरनासिद्धभया॥ तदुक्तं॥श्रीआदिपुरा
णे॥ श्लोक ॥यथाहिकुलपुत्राणांमाल्यंगुरुशिरोधृतं॥मान्य
मिवजिनेंद्रांघ्रिस्पर्शात्माल्यांगभूषितं॥१॥ बहुरिआराधनाक-
थाकोषविषैं॥ करकंडूकाचरित्रमें गुवालअरसेठअरराजा॥ती-
नुहिनैंमिलिकरिहजारदलकाकमलकाएकपुष्पमुनिकेकहेतैं
श्रीजिनमंदिरमैंजायजिनबिंबकेआगेताकीस्तुतिकरि॥पीछेगुवा
लनैंश्रीभगवानकुंसर्वोत्कृष्टपदकेधारिजाणिनाकेचरणकेउपरि
कमलकापुष्पधरा ऐसैलिखाहैं॥ तदुक्तं॥ आराधनाकथाकोषेक
रकंडूचरिते॥ श्लोक ॥ तदागोपालकःसोपिस्थित्वाश्रीमज्जिनाग्रतः
॥भोसर्वोत्कृष्टतेपद्मंगृहाणेदमितिस्फुटं॥१॥उक्काजिनेंद्रपादा

तीनलोककेउपरिअनुग्रहकरिवेयोग्यहोय ॥ अरयामालास्वर्गलो-
ककीलक्ष्मीकीप्राप्तिकरिवेकूंदूतीहैं ॥ यातैं ऐसीजिनपदस्पर्शित
पुष्पकीश्रेष्ठमालाकुंआशिकाकैअर्थिअपनेसिरपैधारनी ॥ सो जि-
नपदकास्पर्शिवातोताकेऊपरिधरैहीहोयहै ॥ २
हिहै ॥ अरगुणभीजामैजबहीआवैहै ॥ ३
कायोग्यनाहिहै ॥ तदुक्तं ॥ प्रतिष्ठापाठे ॥ श्लोक ॥ जिनांघ्रिस्प-
र्शमात्रेणत्रैलोक्यानुग्रहक्षमा ॥ इमास्वर्गरमादूतं
स्रजं ॥ १ ॥ बहुरिश्रीआदिपुराणमैंभीभगवज्जिनसेनाचार्यनैऐ-
सैहीकहीहै ॥ जेजगमैंकुलकेउपजेपुत्रहैं ॥ भावार्थ ॥
लकेमनुष्यहैताकूंजैसेगुरुजनकीमाल्यअपनाशिरपैंधरैहैं ॥
सैहीजानेजिनपदस्पर्शितपुष्पकीमालाअपनैशिरऊपरिधरिवे

विधैर्मंत्रप्रयोगैर्विषसर्वस्यौषधमस्तिशास्त्रविहितंमूर्खस्यनास्त्यौषधं ॥१॥ इत्यादिकवर्णनहै ॥ यातैंविलेपनहीलगावनाजानना ॥ बहुरिसुवासकेपुष्पताकेचर्णनिऊपरिधारियेसोपुष्पपूजा ६ ॥ इहांकोईकहै ॥ आगेधारियेसोतोयोग्यहैं ॥ अरताकेचर्णनउपरिधरनाकहांलिखाहै ॥ यहतोअयोग्यहै ॥ ताकाउत्तर ॥ अष्टप्रकारीपूजाविषैंऐसेलिखाहै ॥ पादारविंदद्वयमर्चयामि ॥ यातैंचर्णनकेंहीचढावणासंभवेहै ॥ बहुरिश्रीवर्णाचारमैंभीऐसेहीलिखाहै ॥ जोजिनकेचर्णनकीस्पर्शितिमालाआपकेकंठमेंधारनकरनी सोउपरिधरैंविनाकैसैंस्पर्शितहोय ॥ तदुक्तं ॥ श्लोक जिनांघ्रिस्पर्शितामालांनिर्मलेकंठदेशके इत्यादि ॥ बहुरिप्रतिष्ठापाठमैंभीऐसेहीकरनालिखाहै ॥ जोजिनपदस्पर्शितपुष्पमाला

क्षप्रकारकथनउपरिभीश्रद्धानकुंनोनकरना॥अरक्रोधकरना॥१
बहुरिदुर्वचनबोलना॥१॥बहुरिहठनछोरना॥१॥
टेककेअर्थिहठहोयवादकरना॥१॥अरशास्त्रोक्तादिपरवचन-
कुंनमानना॥१॥यहपंचचिन्हकरिसदैवप्रवर्त्तनासोमूर्खपनाहै
॥ भावार्थ ॥यहमूर्खकेपंचचिन्हहै सोयाकरिमूर्खकीपिछा-
निपरैहैं॥ तदुक्तं ॥ श्लोक ॥मूर्खस्यपंचचिन्हानिक्रोधीदुर्वच
नीतथा॥हठीचहठवादीचपरोक्तंनैवमन्यते॥१॥बहुरिमूर्खके
स्वभावकीऊषधिभीनाहिहै॥ भावार्थ ॥ओर२स्वभावकीता
दैवनेऊषधिरचीहै॥परंतुमूरखकीनरचीहैं॥ तदुक्तं ॥ काव्य-
छंद ॥शक्योवारयितुंजलेनहुतभुकछत्रेणसूर्यातपं॥नागेंद्रं
निशितांकुशेनसमदंदंडेनगोगर्दभौ॥व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्चवि

हिरण्मयीजिनेंद्रार्चास्तेषांबुधप्रतिष्ठिताः॥ देवेंद्रापूजयंतस्मै-
क्षीरोदांभोभिषेचनैः॥ १॥ ऐसैजानीपूर्वोक्तश्रद्धानकरना॥ बहु-
रिफेरिकोईकहै ॥पूर्वचतुर्थाकालमैंप्रतिमाकैगंधविलेपनकौन
नैकीयासोकहो॥ ताकूंकहियेहै ॥षट्कर्मोपदेशरत्नमालाग्रंथ-
मैंऐसालिखाहै मदनावलिनैंजिनबिंबकैगंधविलेपनकिया॥ब
हुरितिसफलतैंताकाशरीरकीदुर्गंधगई अरमरिकरिताकाफलक
रिपंचमस्वर्गमैंगई॥ तदुक्तं॥ षट्कर्मोपदेशरत्नमालायां॥ श्लो-
क॥ इतीमंनिश्चयंकृत्वादिनानांसप्तकंसती॥ श्रीजिनप्रतिबिंबा
नांस्नपनंसमकारयेत्॥ चंदनागरुकर्पूरैस्सुगंधैश्चविलेपनं॥सा
१.२ ॥विदधेप्रीत्याजिनेंद्राणांत्रिसंध्यकम्॥ १॥ इत्यादिकबहुत-
शास्त्रनिमैंबर्णनहै॥यातैमनोक्तश्रद्धाननकरना॥ बहुरिएतेपूर्वो

गुलआदिबडीहै॥ बहुरिपूजाविषैंभी ताकीपूजाजुदी २ नहोय है॥ बहुरिसाक्षात्केवलज्ञानीकेमस्तकऊपरिसर्पफणानाहिं॥ अरश्रीपार्श्वनाथकेसर्प्पफणाहै॥ इत्यादिकअनेकफरकहै या तेंसाक्षात्केवलीकीपूजामैंअरताकीपूजामेंबहुतफरकजानना॥ तिसतेंपूर्वाचार्यकेवचनीकाश्रद्धानकरिनायोग्यहै॥ बहुरिएकओ रस्कनिहु॥ साक्षात्केवलीसमवशरणमैंविराजै तिहांइंद्रादिकता की पूजातोपूर्वोक्तकहीकरेहैं॥ अरतिहांकेमानस्तंभसंबंधिजिनप्र तिमाहै ताकीपूजाअभिषेककहीकरेहै॥ इहांभीकेवलीकीअरप्र तिमाकीपूजाविषैं फरकहै समोसरणविषैंसाक्षात्विद्यमानके वलीकेहोतेंभीपूजाअन्यरूपहैं॥ तोप्रतिमाकितोअन्यरूपहै हि सोहिश्रीजिनसेनाचार्यनैआदिपुराणमैंकहिहै॥ तदुक्तं॥ श्लोक

नमें अरवस्त्रकैलगावनैंमैं तथाताकेमुखमैंजलप्रवेशकरै तामैं
मूलगुणघटेनाहिं ऐसामानिनाभीवडाअंधेरहै॥
केवलीकीरीतिप्रतिमामेंकैसैंहोय वहतोअंतरिक्षहै॥
करिअस्पर्श्यहै॥स्नानविलेपनरहितहै॥अरचेतन्यहै॥बहुरि
तीसअतिशयकरिमंडित अरअष्टप्रातिहार्यअनंतचतुष्टयक-
रिसंयुक्तबहुरिविहारकरियुक्तहै॥सोजिनमूर्त्तिविषैंएकभीन-
पाईये॥बहुरिकेवलीपरस्परमिलेनाहिं॥अरताकीप्रतिमाएक
आदिचोवीसीलोंअधोर्द्धहै॥अरसैकड्यांतथाहज्जारांप्रतिमा
एकत्रविराजेहैं॥बहुरि ताकूंसर्वकूंएकहिजलकेपात्रस्थलतैंस्ना
नकरावैहैं॥अरएकहिवस्त्रतैंताकाजलसूकावैहै॥सोदोहुकी
एकरीतिहैनाहिं॥ बहुरिकोईकीतोमूर्त्तियवमात्रहै

रिकल्पतरुकेदेवोपुनीतत्र्प्रादिपुष्प॥ बहुरि सुधांमृतरूपीचरु पिंडरत्ननिकेदीपदिव्यामोदिकधूपकल्पवृक्षकेफलइत्यादि इंद्रादिकपूजेहै ॥बहुरिसुरतरुकेपुष्पनिकानिक्षेपणइत्यादिक होयहैसोरी।तिजिनबिंबमेंसर्वकहा यातेंजिनप्रतिमाकी पूर्वप्रतिष्ठाहोयपीछेअभिषेकपूर्वकपूजाहोयहैं॥ बहुरिगंः गावनातोपीछेहै॥प्रथमजिनमूर्तिकास्नानहोयहै सोकेवलीकी पूजाविनस्नानतेहै तोयाकूंकेसेंस्नाननित्यकरावना॥ अष्टविंशः तिमूलगुणनिमेंस्नानकात्यागहै॥बहुरिवस्त्रकात्यागहै॥तथाज लपानकेवलीकेहैनाहिं॥सोतुमभीप्रक्षाल्यसमयताकेशरीरकेज लवस्त्रलगावोहो तथाताकेमुखकेछिद्रमेंजलजायहै तिहांभीतु मकूंऐसाकारनाकेसेंहै॥ सोगंधा

रूभक्त्याइत्यादिकहे ॥ यातेवृथाहठतेंअपनेकार्यकाविनाशहै ॥ बहु-
रिजोतुमकहोगें समवशरणमैसाक्षातीर्थंकरकेवलीविराजेहै ताकै
भीकेशरआदिकाविलेपनलगावनानांहीतोताकीप्रतिमाकैकैसेलगाव
नासंभवे ॥ ताकूंकहियेहे ॥ साक्षात्तीर्थंकरकीपूजाकिविधिविषैअ
रताकीप्रतिमाकीपूजाकीविधिविषैनानाप्रकारकाभेदअन्यरूपहै ॥
यातेंदोहुकीपूजाकिसमानता सर्वादेशीनांहीहै ॥ याकाउदाहरलिखिये
है ॥ प्रथमतोसाक्षात्केवलीकीपूजाकरे सोतिहांकेवलीकाअभिषे-
कनाहिं ॥ बहुरिताकेगंधविलेपनभीनांहिं ॥ बहुरिइंद्रादिकपदवीधर
भीताकूंस्पर्शैंनाहिं ॥ बहुरिदूरिहितेंपूजें ॥ बहुरिगंगाजलआदि
क्षीरोदधिकाजलरत्नजटितभृंगाराश्रितकरिताकीनालितेंजल
धारादेय बहुरिदेवोपुनीतगंधअरमुक्ताफलोपमअखंडअक्षत ॥ बहु

स्यकेडारिवेतैंतोग्रपूज्य प्रसिद्ध हीहैं यातेंतुमकूं वस्त्रडारिनासो-
भीवडाग्रनर्थकामूलहै॥ बहुरिमुनिनैंजडीलगाइसोतोउपजीकारि-
शरीरकेसुखकेग्रर्थिलगाईसोमुनिकरिवंदिवेयोग्यनाहिं।। बहुरिबां
दरनैंपूर्वेबंधकाभवकाजातिस्मरणतेंमुनिकाहृदयविदारया।। बहु
रिताकीशांतलादेषिताकेवनौषधिपीसिकरिहृदयविषैंलगाईनिर्ह्र-
णकेग्रर्थसोकेताकिदिनताईताकेउषद्धिकालेपरत्या सोमु
वंदिवेयोग्यहैं।। वहकथाग्राराधनीकथाकोशमैंलिषीहैं।। बहुरि मु
निकीपूजामैंताकेचरणनिकेगंधलगावनामानियेतोनवधाभक्तिविषैं
पादार्चनपदकाकहाग्रर्थकरोगे॥ तथाग्राठहिभक्तिकहिनाबनेगा।।
अरजोपूजाकहोगेतोपूजाकागंधकेश्लोकमैंतोचर्चिवेकाहिग्रर्थलि-
खाहै॥ तदुक्तं ॥श्रीखंडागरुकर्पूरमिश्रियागंधचर्चया॥

नहोयगा ॥ तबदोयपुराणवांचनाफननाभीनबनैगा ॥ याते स्तुया
हृदकरनाअकल्याणकाहिमूलहै ॥ तथाआगमतेप्रमाणनयादिक
कीसिद्धिभईकहोगेतोआगमभीआचार्यनिकेंहिकियेहै ॥ यातेइ-
हाभीतुमारानाजुबाबहै ॥ बहुरितुमकहोगेअकलंकनिकलंकदो
हुभाइप्रतिमाकेउपरिसूत्रकाडूकगेरिकरिताकूंउलंघ्यगये ॥ और
मुनिनैंभीपांवकेंअंगुष्टकेंजडिलगाई ॥ ताकूंप्रतिवंदनानकरि ॥ औ
रमुनिकीपूजामेंभीकेसरताकेंनलगावना इत्यादिप्रसिद्धहे ॥ तोकेस
रचर्चिनाकेंसेमानेताकूंकहियेहैं जैसेंअकलंकनैंनिकलंकनैं एकसूत्रडोरि
करिकार्यकीयातोइहातुमप्रतिमाकाप्रक्षाल्यसमयताऊपरिहु-
स्तविलस्तमात्रआदिवस्त्रडारोहो सोउसिसमयप्रतिमाकूंनवंदि
तैहोगे ॥ यातेंसोकहोकिंचित्सूत्रकेंनिमित्ततेंतोअपूजभईतोव

केवचनमानेभीहै॥अरअमिलतकूंनैंभीमानैहै॥ताकूंकहियेहै॥
शास्त्रनिमैकाहूनैअन्य२मिथ्यावचनधरे नाकानिश्चयतुमकूंके
सेभया॥हमनजानैंतुमसेप्रत्यक्षकेवलज्ञानीमिले॥तथातुमकूं
हिकेवलज्ञानभया यातेऐसैसत्यकहोहो॥बहुरिप्रमाणनय
स्याद्वादतैंमिलनैवचनकाभीनिश्चयसाक्षात्केवलीतथाश्रुतकेव
लीविना तथाआपकूंकेवलज्ञानउपजेविनातुमकूंकेसेभया सो
हमकूंभीनोकहो॥बहुरिआचार्यकेवचनकेशास्त्रनेकहोगेनोउ
कयेशास्त्रभीप्रमाणकारिनैंलगेंगे॥बहुरिअपनेमनतैंसिद्धि
कीयाकहोगेतौतुमकूंकहांसर्वज्ञपदहै॥अर
ज्ञानहै॥बहुरिप्रथमानुयोगकीकथापाठांतरतैंहै॥
रनमानोगेतोएकहिशास्त्रप्रमाणहोयगा दोयकाश्रद्धानकरना

रकाश्रद्धायुक्तपढनासोहीकार्यकारीहै ॥ बहुरि फेरितुमकहोगे पूर्वोक्तप्रकारशास्त्रतथा पूजा पाठकह्येसोवचनसर्वभेषिकेहैं ॥ यातैंहममानैंनाहि ॥ ताकाउत्तर ॥ भेषीकी प्रतिष्ठा प्रतिमाकातो पूजा नमन दर्शन आदिकरिमानना ॥ अरताके वाक्यनमाननायह भीबडीभोलपहैं ॥ यातैंनवीनप्रतिष्ठापाठनैंनवीनप्रतिष्ठाकरिनवीनप्रतिमाथापिकरिपूजादिककरनायोग्यहैं ॥ बहुरिशास्त्रकेवचन पूर्वाचार्यप्रणितनमानना तो तुमारोनवीनवचनगृहस्तनिकेकौंयेभ कौनमानैंगे ॥ बहुरिजोकहोगेशास्त्रतोहममानेहै ॥ परंतुइनिमेंका हुअन्यनेंवीचिरमेंऔरर अमिलितवचनधरदीये ॥ यातेंप्रथमानुयोगविषेंबहुतअमिलितकथानहोयगया ॥ यातेंप्रमाणनवस्या हाद नयतैंमिलेवचनिकूंहममानेहैं ॥ यहसर्वज्ञकामतहै ॥ आचार्यनि-

मैभी ऐसेइभयेहैं ॥ जाकीविद्याआगैंअन्यसामान्यमुनिभावलिं
गीबाह्यलघुपदपावै ॥ अरजाकाउपदेशतैंअन्यकीमुक्तिहोय ॥
अरजाकूंएकभीअक्षरोच्चारकाज्ञाननाहिंऐसैभावलिंगीसौंधू-
भीमुनिभये सोइनि दोउनिमें सिधितोभावलिंगीअपठितकीभई ॥
देखोअभव्यसेनबहुतपढ्याअर एकभीवचनकाजाकेंश्रद्धानभया
तोबहुतजनकरिनिंदापायानिंदगतिपाई ॥ अरशिवभूतिनामामुनि
एकभीअक्षर पढ्यानाहिं तोभीतुषमासभिन्नपदउपरिश्रद्धानकरि
ताकुंरट्या तोकेवलीहोय मोक्षगया ॥ यानेबहुतपढ्याअरताका-
श्रद्धाननकिया तोकहाभया ॥ तदुक्तं ॥ श्रीकुंदकुंदाचार्यदर्श
शनप्राभृते ॥ गाथा ॥ सम्मत्तरयणभट्ठाजाणंताबहु
॥ आराहणाविरहियाभमंतितत्थेवतत्थेव ॥ १ ॥ यातेंएकहिंअस

मूलसंघेमुनिजनविमलेसेननंदीचसंघौस्यातांसिंहाख्यसंघोभव-
द्लमहिमादेवसंघश्चतुर्थः॥१॥चतुर्संघनरोयस्तुकुरुतेभेदभाव-
नाम्॥सम्यक्दर्शनातीतसंसारेसंचरत्परम्॥१॥यातेंश्रीमूलसं
घकुंदकुंदाचार्यकीआम्नायसरस्वतीगच्छबलात्कारगणहिमानि
पूर्वोक्तश्रद्धानिकरिनायोग्यहै।।इनिमैंभेदभावनकरनाइनिसिवाइ
ग्रहस्तनिकीकारिआम्नायकछूसिद्धिकारिनाहिंहै॥बहुरिजोंकहो
हमारिआम्नायविषैंआगेबडे२विद्यावान्पंडितअध्यात्मीआ-
दिबुद्धिवानश्रावकभयेहैं अरसामर्थ्यवानभयेहैं॥
म्नायबांधिहै।।जिसकीप्रवर्तनाकीपरंपरायआम्नायमेहमचलेहै
ताकूंकहियेहैं।।तुमारेविषेंबडेबडेपंडितविद्यावानभयेतोकहाआ
श्चर्यवानभया दशमापूर्वकेपाटि नेवालेद्रव्यलिंगीसाधुचतुर्थेकाल

हुतरफ इंद्रतथालक्ष्मीसरस्वतीतथायक्षयक्षीतथानवग्रहक्षेत्र
पालआदिकीमूर्तिहोयहैं॥ औरवृषभआदिशार्दूलपरियंतर्ता
ताकेहोयहै॥ तथाताकेकर्णकांधेसेमिलितहोयताकादर्शन पू-
जनभक्षास्थादितुमकैसेकरोहो ॥यहतोबडाअद्भुतआश्चर्यरूपी
चलनहै॥यातेंयहभीतुमकूंउचितनाहीं॥बहुरिफोरिकहोगे हमतो
हमारीआम्नायकीरीतीकरेहैं तुह्मारा कत्याकैसेकरै॥ताकूं
है॥ भोभ्राताहो आम्नायतोश्रीमूलसंघविषेंश्रीकुंदकुंदाचार्यकीक
हीहै तामेंसरस्वतीगछहै॥ बलात्कारगणहै यहतोकहिहै॥
रइसमूलसंघकीआम्नायसिवाय तुमारिनाविन आम्नायऔरहैतो
दूसरिभई सोदूसरिआम्नायकारिकहांसाध्यहै॥
ननासोमिथ्यात्वहिहै॥ तदुक्तं नीतिसारकाव्यछंद ॥तस्मिन्श्री

तोवाकीमंदबुद्धिकीप्रशंसाकहांतककरिये ॥ जैसैकाहूजीवनैपू
र्वअजाणअवस्थामैंढूंढियेकेकहेतैंश्रीजिनबिंबकादर्शनपूजना
दिकार्यकेत्यागकीये पंचपरमेष्ठीकीसाखिनें ॥ बहुरिपीछेवाके
जाणपणाभयातबवहजिनमंदिरजायकरिदर्शनपूजनादिकक
रैतोपूर्वत्यागकाभंगहोय ॥ अरनकरैतोजाणपणाकी
सिद्धिनाहिं ॥ यातेंवहकहाकरैसोकहोगायानैंअन्यमततैंतोहठ
करनायोग्यहै ॥ परंतुघरमेंहीहठकरनासोबडाअनर्थहै ॥ बहुरि
जोतुमफेरिकहोगे ॥ हमलोयामैंसाभर्णकादूषणजाणजाणक
दापिनवंदै ॥ ताकूंकहियेहै ॥ तुमनेनेकमात्रकेसरतोसाभरणक
ही अरश्रीपार्श्वनाथकीप्रतिमाप्रत्यक्षाहिं
॥ तथाचोवीसिजिनबिंबअधोर्द्धप्रत्यक्षदीषैहैं ॥ तथाप्रतिमाकेच

था ॥ चेयालोजिहवाणेसावइअदिठभोयणंकुणइ ॥
आईठीभठोजिणसोसणेसमये ॥ १ ॥ इहांऐसालिखाहै जोजि
हांजिनमंदिरहोय अरतिहांभीविनदर्शनकरिश्रावगभोजनकरै
तोवाकुंजिनशासनमैश्रद्धामिथ्यादृष्टिकह्याहै ॥ यातैंभोअज्ञानी
भाइहो ॥ इहांतुमविचारो अबतुमारीसम्यक्तकहांहैं ॥ इहांतोशु
द्धमिथ्यातिहिभये अरजिनशासनमैभ्रष्टकहे ॥ यानैपूर्वेतुमाराह
ठछोरिशास्त्रोक्तचलनकाअज्ञानयुक्तहै ॥ बहुरिजोकहोगे पूर्वहम
नैत्यागदिन्हिसोकैसेअंगिकारकरै ॥ ताकाउत्तर ॥ पापकात्यागतो
कदाचितभीफेरिअंगिकारनकरना अरकरेहैसोपापीहै ॥ बहुरिअ
ज्ञानअवस्थामेंधर्मकार्यकूंपापरूपजाणिताकात्यागकिया ॥ अ
रपीछेजाकेशुद्धजाणपणाभयाजदिभीधर्मकार्यकात्यागहिराखै

हिनाकिऔरकुहिनासोकहो ॥ यहपूर्वोक्तकथनश्रीनेमिचंद्रा-
चार्यसिद्धांतिनेंश्रीगोमठसारकेविषैलिखाहै ॥ तदुक्तं ॥ इयेनाह
॥गाथा॥ सम्माइट्ठीजीवोउवइट्ठं॥पवयणंचसद्दहइ ॥ सद्दहदि
असब्भावंअजाणमाणोहिगुरुणियोगा॥ १॥ सत्तादोतंसम्मंद
रसिज्जंतंजदाणसद्दहहि॥सोचेवहवदिमिच्छाइट्ठीजीवातदा
पहुदि॥२॥ इतिगाथाद्वये ॥ इसगाथाकूंपूर्वोक्तअर्थतैंमिला-
लेणा ॥ यातैंपूर्वहट्ट छोरिकरित्रिलोकार्चितमहाभवसंकटकी
त्यारकस्वर्गमुक्तिकीसाधकअनेकजन्मकेपापकीविनाशकशांत
रूपजिनमूर्तिकादर्शन पूजन आदि विनयभक्तिसदैवकरना ॥या
कात्यागकदाचितभीनकरना॥ बहुरिजोविनदर्शनतैंभोजनकरै-
हैसोजिनागममेंनिःकेवलएकमिथ्यादृष्टिकह्याहै॥ तदुक्तंगा

नीबुद्धिकीमंदतातै तथाआगमकावियोगतैंजिनभाषिततत्व-
रूपीश्रद्धानकीया॥ भावार्थ ॥कुतत्वकूंसुतत्वरूपश्रद्धीतोभी-
जिनदेवनेंवाकूं सम्यक्दृष्टिहिकह्याहैं॥ भावार्थ ॥आज्ञावानहै
गातैबहुरिसोहिजीवकतैकिकालपीछैबुद्धिबलकरि तथाआग-
मअरआगमकेबेताकरि जाकेयथार्थजाणपणाहोयजा-
य॥ कुतत्वकुंतो कुतत्वजाणे॥ अर सुतत्वकुं सुतत्वजाणे
॥पीछेभीजो पूर्वोक्त अयथार्थ श्रद्धानकूं नछोडैहै॥जाण
ताथकाभीतोताकुं जिनभगवाननें मिथ्यादृष्टिही कह्याहै
॥ भावार्थ ॥ विनाजाण्या खोटाश्रद्धानवालातो
ह्या॥अरजाण्यापीछैताकुंनछोरैसोअपूठामिथ्यादृष्टीक-
ह्याहैं॥यातैंतुमकुंइहांविचारकरिकहिना॥तुमकूंसम्यक्तिक

मिथ्यात्वकेपंचभेदहैं॥सोतुमाराहदृहै सोहिएकांतमिथ्यात्वहैं॥
बहुरिसोहिक्रमतैंपांचूहिमिथ्यात्वमेंमिलेहैं॥यातेंस्याद्वादकाबाध
कहै॥नवंदिवेंमेंभीतोमिथ्यात्वनगया॥यातैंमिथ्यात्वतथाक्रोधमान
मायालोभसर्वहीजैसाहिरत्या॥तोसम्यक्तकहांरही॥बहुरिजोतुम-
कहोगे॥हमनेंपूर्वविनसमझेअजाणपणामेंत्यागकरिदिये॥सोअ
बकेसेंछोरेजाय त्यागभंगकामहापापहै॥यातेंहमारेंजोपूर्वश्रद्धावे
ठिसोवेंहि॥अबअन्यरूपहोनेंकीयेहीश्रद्धाहमारेंदृढहै॥कहिनेंवा-
लाकेतौंहीकहोहमारेंतोएकदृढहैसोहिहैं॥ ताकाउत्तर ॥भोश्रद्धा
नीजीवहो यहजिनधर्मकीरीतिनाहिहै॥यहकहिनातोमिथ्यादृष्टि
काहै॥तुमपक्षकरिअपनाअकल्याणबरजोरीतैंक्योंकरोहो॥जिन
धर्ममेंतोऐसेंकहिहै॥जोकिसीजीवनेंश्रद्धाकेअर्थअलत्वकाभीअ

तोछहुरसमैंतैंशक्तिमाफिकरसकूंछोरिभोजनकरना
॥फेरिघणींआई ॥ तबकेसरचर्चितप्रतिमाकादर्शनकात्यागकी
अरमस्तकचैत्यालयराषिवैंमैंअविनयका
॥तबैइसीक्षेत्रमैंतथापरक्षेत्रमैंएकमंदिरहोयतिहांजिनमूर्तिमैंके·
दूषणलगाया ताकादर्शनविनाहिनित्यकोईकरसकूंछोरीभो·
सोइहांतुमारेत्यागभंगभयाकिनाहिंसोकहो॥ जोदर्शन
तोपूर्वत्यागतोपाल्या॥ अरपीछैकाभंगभया ॥जोनहिंकरोगे·
तोपीछैकात्यागपालिकरिपूर्वत्यागकाभंगकीया ॥यहतोअतोव भ
॥यातैंजैसैसर्पछछूंदरीकूंपकरिकरिपिछतावेहै तैसे
॥बहुरितुमकहोगे केसरचर्चीप्रतिमासरागीहोयजाय यातैंस
॥ताकूंकहियेहैप्रि·

दर्शनआदिशुभोपयोगरूपीजिनधर्मकात्यागकरनातोहैनाहिं॥जो दर्शनपूजनतीर्थयात्राआदिकात्यागकरना। ॥तितोढूंढियाआदिअन्यमतिकीहै॥यातैंमुनिभी करिकरैहैं॥औरश्रावगभीपरिग्रहप्रमाणमैं॥तथादिग्व्रत देशव्रतमें तीर्थयात्रादर्शनपूजनआदिकात्यागनाहिंकरैहैं॥बहुरिमर्यादाशिवायक्षेत्रमैंभीजायहै॥धर्मकेअर्थत्यागकहिंभीनाहिंकह्याहैं॥ रिजिहांअसत्यकात्यागकिया अरधर्मकार्यमें तथापरोपकारमैंअसत्यभीबोलनाकह्याहै॥औरधर्मकेअर्थपूर्वत्यागकाभंगभीकरना। बहुरिपीछेप्रायश्चित्तलेयशुद्धहोणा ॥ऐसाभीकरनाकारणकैनिमित्ततैंविष्णुकुमारवतहै॥सोइहांहमपूछेहै॥पूर्वजोतुमारेयहप्रतिज्ञा हुतीसोजिनदर्शनविनाहमारेभोजनकात्यागहै॥बहुरिकहींनमिलै

सिकाछेदकीर्त्तनम् ॥ प्रमादोदेवतादत्तनैवेद्यग्रहणंतथा ॥ २ ॥ निरव
द्योपकरणंपरित्यागोवधोगिना ॥ दानभोगोपभोगादिप्रत्यूहकरणं
तथा ॥ ३ ॥ ज्ञानस्यप्रतिषेधश्चधर्मविघ्नकृतिस्तथा ॥ इत्येवमंतरा-
यस्यभवंत्याश्रवहेतवः ॥ ४ ॥ इत्यादिकवर्णनआयाहै ॥ यातेंजिना
गममेंतोऐसेकह्याहै ॥ अरतुह्मारापूर्वोक्तकहिनाहैसोविपर्ययरूप-
है ॥ सोकैसेहै ॥ वहुरिहमपूछे ॥ तुमविषैकेतेक साधर्मीदृढश्रद्धा
निभाइकेऐसात्यागहै ॥ जोजिनमंदिरमेंकेसरआदिगंधकरिचर्चि-
तजिनमूर्तिविराजैतिसकादर्शनवंदनापूजाकरैहीनाहि ॥ धोयांपीछे
दर्शनादिसर्वकरैहै सोइहांपूछियहै ॥ यहवर्णनकिसीजिनशास्त्र-
निमेंलिखाहै ॥ जाकाश्लोकगाथाआदिकहो
॥ तथात्यागनातोमिथ्यात्वकाअरपंचपापकाकह्याहै ॥

सोपूजाकहांहै॥य
येतैकही॥ताकूंनिषेधकरिविपरीतरूपकरनासोपूजाकहांहै॥य
हतोनिषेधाहिहैं॥पूजानाहिहै॥बहुरिचंदनादिगंधकीधारादेणा
जलधारावत्सोपूजापाठआदिविषैंकहालिखाहै सोभीतुमबताबो
लगावनातोपूर्वहमनैंकह्याहै॥बहुरिश्रीउमास्वामिनैंदशाध्याय-
सूत्रकियाहै॥जाकीसंस्कृतटीकाबहुतहै तामैंश्रीअमृतचंदसूरिकृ
ततत्वार्थसारनामासंस्कृतटीकाहै तिहांविघ्नकरणमंतरायस्य इससू
त्रकीटीकामैंलिखिहैं॥जोजिनपूजाकूंनिवारैहै ताकैअंतरायकर्मका
बंधहै॥ भावार्थ ॥जिनपूजाविषेपुवर्तीतिकूंनिंदकरिताका लोप
करिताकानिवारणकरनासोअंतरायकर्मकाबंधहै॥ तदुक्तं ॥श्रीअ
मृतचंद्रिणामुक्ति॥ श्लोक ॥तपस्वीगुरुचैत्यानापूजालोपप्रवर्त्तनं॥
अनाथदीनकृपणभिक्षादिप्रतिषेधनम्॥१॥ वंधवंधनिरोधेश्चना

यहैं ॥ यातैं भव्यशिरोमणीजीवनिनैं जिनमूर्त्तिआदिकाजलादि
चांमृतनवस्तु करिअभिषेक अर अष्टप्रकारी पूजाअर ताकास्तोत्रअर
नमोकारमंत्रआदिमंत्रकैजाप्यकूं भीनिकरिसदैवकरना ऐसैकह्या-
हैं ॥ तदुक्तं ॥ आराधनाकथाकोशे ॥ श्लोकः ॥ श्रीमज्जिनेंद्रचंद्रा-
णां पूजापापप्रणाशिनी ॥ स्वर्गमोक्षप्रदा प्रोक्ता प्रत्यक्षं परमागमे ॥
१ ॥ यः करोति सुधीर्भक्त्या पवित्रो धर्महेतवे ॥ स एकदर्शनेशुद्धो म-
हाभव्यो न संशयः ॥ २ ॥ यस्तस्या निंदकः पापी स निंदो जगति ध्रुवं
॥ दुःखदारिद्ररोगादि दुर्गति भाजनं भवेत् ॥ ३ ॥ स्नपनं पूजनं प्री-
त्या स्तवनं जपनं तथा ॥ जिननाम्नाकुलीनां च कुर्यात् भव्यमतल्लिका
॥ ४ ॥ यातैं पूजाका निषेधक अधोगति जाय है ॥ इहां कोई कहै ॥
हम तो पूजा निंदै नाहिं पूजा करै है ॥ ताका उत्तर ॥ पूजाविषैं पूर्वाचा-

द्रकीपूजाहैसोपापकीप्रणाशकहै ॥ अरस्वर्गमोक्षकीदाताप्रत्य
क्षपरमागमविषैंकहीहै ॥ बहुरिऐसीपूजाकूंजोज्ञानीजनपवित्र
होयभक्तिकरिधर्मकेहेतकरैहै ॥ सोहीएकसम्यक्दर्शनमैंबिशुद्धहै ॥
भावार्थ ॥ सोहिनिर्मलसम्यक्तहै ॥ अरसोहीमहाभव्यजीवहै ॥ या
मैंसंसयनाहिहै ॥ बहुरिइसजिनपूजाजोजलगंधादिअष्टद्रव्यातपू
जाकेनिंदकहै भावार्थ ॥ पूजाकूंनिषेधैहैं ॥ जोजलादिकास्नानमैं
आरंभहोयहै ॥ यातैंअभिषेकनकरना ॥ अरगंधकाविलेपनलगाव
नेमैंसरागीपणाकादूषणलगैहै ॥ यातेगंधनलगावनाजलधारावत्
दूरितैंधारहीदेणा ॥ इत्यादिताकानिषेधकरिताकीनिंदाकरैहै ॥ सो
पापीहै ॥ अरनिश्चयकरिपृथ्वीविषैंनिंदकहै ॥ बहुरिसोहीदुःखदा
रिद्ररोगादिकाअरदूरगतिकहिये नरकआदिअधोगतिकाधारीहो

सम्यक्तकाकारणहैं ॥ तदुक्तं ॥ तत्वार्थश्रद्धानंसम्यक्दर्शनं
तेवचनात् ॥ यातैएकश्रद्धानहीकार्यकारीहै ॥ इहांहमपूछैहै ॥
देवतुसंघभये तामें कोहूभी
जीवनैकेशरजिनप्रतिमाकेलगायकरितथातिनाकादर्शनपूजनतें
नर्कआदिअधोगतिपाई ॥ ऐसेंकिसीशास्त्रनिमेंलिखाहोयताकं
॥ तथवहबोल्याविनाकेसर लगानैवालातथाकेसरचर्चिवेका
तआदिकेदुःखपावै ऐसालिखाहोय तो
कहो ॥ ताकूं कहियेहै ॥ भोभ्रात यह तुमनै भलीपूंछी
वर्णनतोपूर्वकरिआयेहै ॥ श्रीवसुनंदीकृतजिनसंहिताके दो
यश्लोकनितें चर्चिवेकाअरनाहिंचर्चिवेकातथाऔरभीकहियेहै
॥ आराधनाकथाकोशशास्त्रमैं ऐसालिखाहै ॥ सोश्रीमज्जिनेंद्रचं

द्धानराखिना अरनव णिसके ताकाश्रद्धानछोरीदेना ॥सोश्रद्धा-
नीकीरीतिनाहिहै॥श्रद्धानीभाई तोश्रद्धानयुक्तहोयताकूंकहिना
सत्यहै॥जाकैश्रद्धाननाही सोश्रद्धानीकैसेकहिये॥यातेंश्रीउमा
स्वामिनेएक उत्कृष्टफलश्रद्धानवानकेंहीलिखाहै॥ आचरणकाफ
लमुख्यनलिखाहै॥ तदुक्तंगाथा ॥जंसकइतंकीरइ॥जंचणस
कइतंचसद्दहई॥सद्दहमाणोजीवोपावइअजरामरंठाणं॥१॥
यातेंआपणीशक्तिजिननीहोयसोतोआचरणकरना॥बहुरिजो-
आपणीशक्तिबाह्यआचरणकाश्रद्धानकरना॥यातेंश्रद्धानमानजी-
वहिअजरामरणस्थानजोमोक्षस्थानकूंपावेहै॥इहांविचारोमो
क्षगतिश्रद्धानवानकेंहिहोयहै॥आचरणवालातोजितनाकरेगाति
तनाहिफललहेगा यातेंश्रद्धानहीसत्यपदार्थहै॥बहुरिश्रद्धानही

उव्वतंदेवाकुणंतिविटिकेसरकुंकुमाणितस्सउवरम्मि ॥ २ ॥ या
तैंपूर्वोक्तप्रकारशास्त्रकूंदेखिकारिहृद्दछांरिशास्त्रोक्तश्रद्धानज्ञाना
चरणकरिना ॥ बहुरिफेरिकोईकहैं ॥ तुमनेकहिसोसत्यहै ॥ पर-
तुशास्त्रनिमैंतोजलपूजाविषेतौगंगाकाजलअरअक्षपूजामें मो
तीकेअक्षतअरपुष्पनिकीपूजामेंकल्पवृक्षकेपुष्पअरदीपकपूजा
मेंरत्नकेदीपआदिलिखाहै सोयहभीकरनानहीकरेहैं तोआज्ञाभं
गहोयहै ॥ यातेंगंगाजलआदिपूर्वोक्तद्रव्यविनाऔरसामान्यजल
तथाशालिकेतंदुलआदिकाहिकुंचहोढना ॥ शास्त्रोक्तहिमिलतव-
करना ॥ ताकाउत्तर ॥ हेभ्रातशास्त्रनिमैंतोसर्वहिप्रकारकीवस्त
कहिहै ॥ यातेंजैसीजाकूंमिलैतैसीपवित्रसारवस्तुस्पूजादिककर
ना ॥ अरश्रद्धानसर्वकाहीकरना ॥ ऐसैनाहि जोकरनात्ताकातोश्र-

दर्शनमेंज्ञानीतथाधर्मात्माकस्यालोपूजिनाकहांरत्या बहुरिव्रत
कथाकोशविषैंऐसालिखाहैं॥सोज्यांपुरुषानैंअर्हंतकेचंदनकालेप
कियानाहिंसोपुरुषजैसैंकाहुकामहिलमंदिरविनाधोल्याकेवलचूना
रहितईटकाहिहोयसाशोभैंनाहि तैसैंताकीशोभारहैहैं॥कदापिउ
ज्जलयशनाहिंपावैहैं॥ अरपरघरमैंगोवरआदिकष्टसूलायकरि
लिपताफिरैहैं॥ भावार्थ ॥दास्यकर्मादिककूंकरैहैं ऐसादोषहै
॥ तदुक्तं॥ श्लोक ॥नलिप्तश्चंदनेरर्हन्स्कथालयोसद्मनस्यवै॥
अरववर्गोरे स्पंतैःपरेषांविलिपिष्यते॥१॥ बहुरिनिर्वाणकांडविषें
श्रीगोमहस्वामिकुंवंदनाकरितिहांभीताकाविशेषणमेंकहिहैं जो
गोमहस्वामिकूंमैंवंदमिकैसेहै जाकेऊपरिदेवताकेशरकुसुमानि
कीवृष्टीकरैहै॥ तदुक्तं॥गाथा ॥गोमहदेवंवंदमिपंचसयंधणुहदेह

विरुद्धआज्ञाप्रमाणकरना अरस्वच्छंदवर्त्तयाहिवादनकरना॥
नवफेरिकोइकहैके॥इहांइतनालिखानोकोईकेसरचर्चैनां
कैविषेगुणनाहितोऔगुणभीनाहिहे चर्चोतथामतिचर्चो॥
उत्तर॥जोकेसरआदिगंधद्रव्यतेंचर्णकमलनाहिचर्चेतिसप्रतिमा
कादर्शनकरेसोअज्ञानीकह्याहे॥ तदुक्तं॥श्रीवसुनंदीजिनसं
तायां॥ श्लोक ॥अनर्चितंपदद्वंद्वंकुंकुमादिविलेपनैः॥बिंबं
पश्यतिजैनेंद्रंज्ञानहीनोसउच्यते॥१॥तथाकेशरचर्चितप्रतिमाके
चर्णसंयुक्तबिंबकादर्शनकरेहेसोबडाधर्मात्माहे॥ तदुक्तं॥श्री
वसुनंदीजिनसंहितायां॥ श्लोक ॥पश्यतोजिनबिंबस्यचर्चा
कुंमादिभिः॥पदपद्मद्वयंभव्येनद्वयंनैवधार्मिकम्॥१॥इहां
केशरलगेचर्णकीप्रतिमाकेदर्शनमेंअज्ञानपनाकह्या अरचर्चितके

मिच्छितं ॥१॥ इहां ऐसा है सो मुनि होय करि उत्कृष्ट सिंहवत् निर्भय
भया आचरण करै है ॥ अर बहुत परिकर्म जो अनशनादि क्रियाक-
रि युक्त है ॥ अर गुरुका भाव करि बडा पदस्थ है संघका स्वामि है ॥
सा होय फेरि भी जिनसूत्रतैं च्युत भया चलै है ॥ ते पापहि पावै है मि
थ्यात्वही प्राप्त करै है यातैं शास्त्रके वचनतैं च्युत करना सो स्वेच्छा-
चारीकी सी रीति है ॥ सो फलै नाहि है ॥ बहुरि भावका फल भी बा-
ह्य द्रव्यकी विशुद्धि विना लागै नाहि है ॥ यातें बाह्यद्रव्यकी विशु
द्धि भी आज्ञातैं ही होय है ॥ आज्ञा कालोपक स्वच्छंदकै नाहि होय है ॥ ब
हुरि केवल भावहि सों कार्य होय तो भरतेश्वरनैं द्रव्यदीक्षा लेना संभवै
गा नाहिं ॥ स्वेतांबरवत् कहि ना उपजेगा ॥ यातें बाह्यद्रव्यविशुद्धि है
सो भावविशुद्धिके अर्थि है ॥ तिसतैं भावविशुद्धिके अर्थ बाह्यद्रव्य-

डलविधानहै तामैंसर्वमैंपूर्वोक्तप्रकारहीवर्णनहैंसोभीदेखिलेणा
॥ इहांफेरिकोईकहै ॥इतनाइहांवादकाहेकुंकरना॥अपनाअप
नाभावहोयसोकरो॥फलतोभावनिकैआधीनहै॥ ताकाउत्तर ॥
तुमनैअपने२भावकैआधीनकरनाकह्यासोइहांयहअर्थनहोय
है॥ करिनातोश्रीगुरुकीआज्ञाप्रमाणनैहै॥अरभावअपनैतेहै॥
बहुरिऐसैनहोयतौभावहीकाआधिक्यलारख्या॥श्रीगुरुकेवच-
नीकाप्रमाणकहांरख्या॥यातेंश्रीगुरुकेवचनकीआज्ञालेंभावलगा-
यकरैसोफलदाताहै॥केवलभावतोस्वच्छंदवतहैं॥बहुरिस्वच्छं
दहैसोजिनसूत्रतेंबाह्यप्रवर्त्तनेवालामिथ्यादृष्टीहोयहै॥ तदुक्तं
॥ श्रीकुंदकुंदाचार्येणकथितसूत्रप्राभृते॥गाथा ॥उक्किठसिंह
चरियबहुपरियम्मोयगुरुयभारोयजोविरहईसछंदंपावंगच्छोदिहोदि

अर्थभक्तिकरिलगायहु ॥ तदुक्तं ॥ श्लोक ॥ दिवसाष्टकपर्यंतं-
प्रपूजय्यनिरंतरम् ॥ पूजाद्रव्यैर्जगत्सारैरष्टभेदैर्जलादिकैः ॥ १ ॥ न
चंदनसुगंध्यंबुस्यजोव्याधिहरास्फुटम् ॥ प्रत्यहंत्वत्पतेर्भक्त्याप्र
यच्छरोगहानय ॥ २ ॥ बहुरिगंधोदकभीजिनपदकेपूर्वगंधचर्चै-
गालवैपीछैजलतैंस्नानकरावै ॥ जबवहजलप्रक्षाल्यकागंधोद
कनामपावैगा ॥ केवलप्रक्षाल्यकाजलकातोनामगंधोदकहैना
हिं ॥ स्नानोदककहो ॥ तथाअभिषेकसमयगंधयुक्तजलकैकल
शातेंस्नवनकियेगंधोदकनामपावैहै ॥ पूर्वकलशकेजलाभिषेक
कूंतोकल्याजायनाहिं ॥ यातेंअपनाकल्याणकेअर्थिपुरुषानैं-
तथासत्यवादिनैशास्त्रोक्तश्रद्धानकरिनावृथाहिहठनकरना ॥
बहुरिजिनतनैजैनमतकैपूजाकैतथाप्रतिष्ठाकेशास्त्रहैं ॥ तथामें

पापकोकरिवेवालोपुरुषजिनेंद्रकेचर्णसूंमिल्योथकोगंधआपकेल
गावैहैतोताके पूर्वोक्तसर्वपातक तत्क्षणमैंछूटिजायहै ॥ यातेंपर
मपवित्रहैं॥ विनयसूंआपणेमस्तकआदिशरीरपैंधारण करना
॥ बहुरियह वस्तुबडेपुन्यतैंमिलैहै ॥ अभाग्यपुरुषांकूं योग्यना
हिंहै॥ बहुरिइनितैंजीवनिकेनानाव्याधिभीमिटेहैं॥ सोहिश्री
मानतुंगाचार्यनेकहिहै॥ तदुक्तं॥ श्लोक ॥उद्भूतभीषणजलो
दरभारभग्नाशोच्यांदशामुपगताश्च्युतजीविताशां ॥त्वत्पादपंक
जरजोमृतदिग्धदेहाःमर्त्याभवंतिमकरध्वजतुल्यदेहाः॥१॥बहुरिगं
धोदक कालगावनाआदिका वर्णनठौर २ प्रसिद्ध है यातें लिषियेहैं
मदनसुंदरीसूंमहामुनिनेंकही॥सिद्धचक्रकीपूजाकाचंदनअ
रगंधोदकअरपुष्पमालादिन २ प्रतीतेरापतिकेरोगकीशांतिके-

करि बहुरि यज्ञोपवीतनिका आदि संयुक्त होय करि पीछे पूजा करै सो लेप किये विना स्पर्शियत केसरकैसे होय॥ तदुक्तं॥ ॥श्लोक॥ ॥
नांघ्रीचंदनैस्वस्यशरीरेलेपमाचरेत्॥ यज्ञोपवी
युतम्॥१॥ जिनांघ्रीस्पर्शितामालानिर्मले कंठदेशके॥ ललाटेतिल
कंकार्येतेनैवचंदनेनच॥२॥ इहां कोई कहै ॥ चरणनिकै लगाइ ५७९
माहिली केसरका तिलक करणा सो तो निर्माल्य है यातैं योग्य नाहिं॥
ताका उत्तर॥ प्रभुके चरणकी रज तो सदैव भक्त पुरुषांनै आपनै शीस
आदिकै विषे धारण करणी योग्य है यातैं वाकै लगवेतैं बडे पाप कटै
हैं॥ तदुक्तं-पूजासारे॥ ॥श्लोक॥ ॥ब्रह्मघ्नोथवागोघ्नोवातस्करो
सर्वपापकृत्॥ जिनांघ्रीगंधसंपर्कान्मुक्तोभवतितत्क्षणे॥२॥ इहां ऐ
सा लिख्या है जो ब्रह्मघाती तथा गोघाती तथा तस्कर तथा और सर्व

इहांभीताकेचर्णनिकैहिलगावनाकह्याहैं॥बहुरिदुतीयपूजावि
धानमैंहिऐसैकह्याहै॥ तदुक्तं ॥पूजासारकाव्य ॥समृह्यभक्त्या
परयाविशुद्ध्याकर्पूरसंमिश्रितचंदनेन॥ जिनस्यदेवासुरपूजितस्य
सलेपनंचारुकरोमियुक्त्यै॥१॥उंह्रां ह्रः सर्वकर्मनविलेपनरहितपवि
त्रायनमः॥उद्वर्तनं इहांभीमुक्तिकेअर्थपूजकपुरुषांनेंजिनप्रतिमाके
चंदनादिकसुगंधद्रव्यकाविलेपनहीकह्याहैं॥ बहुरिभगवदेकसं
धिकृतजिनसंहिताविषैंभीगंधपूजाकाश्लोकमैंभीभगवानकेचर्ण
युग्मकेगंधकाविलेपनहीलगावनाकह्याहै॥ तदुक्तं ॥ऊँचंदनेनक
र्पूरमिश्रणसुगंधिनाव्यालिंपामोजिनस्यान्हौंनीलपाधीश्वरार्चितौ॥१
॥बहुरित्रिवर्णाचारविषैंऐसालिखाहै॥सोपूजकपुरुषजिनबिंबके
चर्णनिकैगंधलगावैसोनाकास्पर्शितगंधकाआपकेअंगकेतिलक

कह्याहैं॥ बहुरिश्रीआशाधरकृतप्रतिष्ठापाठकापूजावसरमें
पहीकह्याहैं॥ तदुक्तंकाव्यं ॥ काश्मीरकृष्णागरुगंधसाराकर्पूर
योरस्यविलेपनेन॥ निस्सर्गसौरभ्यगुणोल्वणानासंचर्चयाम्यंहि
युगंजनानां॥ इहांभीविलेपनहीलगावनाकह्याहै॥ बहुरिश्रीयोगीं
द्रदेवकृतश्रावगाचारकापूजाप्रकर्णमैंभीगंधकाचर्चनाहीकह्या
है॥ तदुक्तंप्राकृतदोधक ॥ जोजिणचंदनचच्चइयेइतिच॥ बहुरि
पूजासारनामाजिनसंहिताविषैंभीपूजावसरमैंगंधपूजामैंलें
पनहीकरनाकह्याहैं॥ तदुक्तं॥ पूजासारे ॥ काव्यछंद ॥ सांद्रैः
कर्पूरमिश्रैर्बहलपरिमलाकृष्टभृंगांगनानांमोदैःस्वर्गापवर्गफल
ममलमतंचंदनक्ष्मारुहाणां॥ नैकल्पंनौतिशैत्यंप्रथयतुभनलेव्या
प्तुवद्भिर्हिगंतानुगंधैसंबंधनीयंत्रिजगदधिपतेपादमापादयामि॥

रोहो॥ उक्तंच काव्यं ॥देवेंद्रनागेंद्रनरेंद्रवंद्यासंभि
तसारवर्णान्॥दुग्धादिसंस्पर्द्धगुणैर्जलौघैर्जिनेंद्रसिद्धान्तपतीन्य
जेहम्॥१॥ इत्यादिअष्टद्रव्यकापाठहै॥सोनरेंद्रसेनभट्टारिककृत
प्रतिष्ठापाठकीयहपूजाहै॥सोतिसहिपाठमैं पूजाऔरदूसरीकहि
है॥तामेभीगंधद्रव्यकोचढावनातौविलेपनकरिचढावनाकह्याहै॥
तदुक्तं काव्य ॥कास्मीरपंकहरिचंदनसारसांद्रनिस्पंदनाभिरुचि
तेनविलेपनेन॥अव्याजिसौरभितनोप्रतिमाजिनस्यसंचर्चया
वदुःखविनाशनाय॥१॥ इहांभीकेसरआदिकालेपह
है॥वसुरिप्रभाकरसेनकृतप्रतिष्ठापाठमें ऐसाहिकह्याहै॥ तदुक्तं ॥
घश्चंदनेननवकुंकुमयोर्जिनस्यकर्पूरिणासमनुलेपनिजेनदेहो॥ इ
त्यादि ॥इहांजिनदेहकैसर्वांगचंदनादिसुगंधद्रव्यकालेपनकरिना

हुरिभलाबावनचंदनकारसकरि श्रीजैनबिंबजोप्रतिमाकेचर्णयुग
लकेऊपरिबहुरिंनृफलेपकरैहै सोसुगंधगंधकरियुक्तशरीरकोंधा
रिबहुरिदिव्यांगनाजोदेवांगनादिअप्सराकरिआवृतहोयदेवलोक
मेंसागरांलनिरंतरवसेहै बहुरिमुक्तावलिपूजाविषैभी
केचर्णनिकोंविलेपनहिकह्याहै॥ तदुक्तंकाव्य ॥सद्गंधसारघन
सारविलेपनैश्चगंधागतालिकुलजाततरुप्रकांडे॥उद्यापनायजि
नपादसरोजयुग्मंमुक्तावलिव्रतपरस्ययजंतिभक्त्या॥१॥ बहुरि
श्रीसिद्धचक्रकीपूजाकाविधानमैंश्रीसिद्धचक्रकाउद्वर्तनकेसरकर्पू
रअरसुगंधचंदनकारसतेंविलेपनलगावनाकह्याहै॥ तदुक्तं श्री
पालचरित्रे॥ ॥श्लोक॥ ॥मिश्रकुंकुमकर्पूरसुगंधीचंदनद्रवैः॥हे
मादिभाजनेसिद्धचक्रमुद्धृत्यभक्तितः॥१॥ बहुरितुमनित्यपूजाक

माश्रयणंकरोति ॥ यहतोमूलहै ॥ बहुरियाकीटीकाऐसैहै ॥ तदुक्तं
॥ टीकावा० ॥ जिनपतेवचःयद्वत् यद्दशंभवतापहारी सः शीतलमापित
द्वत् जिनवचनवत् अर्हनभवामिइनिर्हेतोः मयार्पितंकर्पूरचंदनंस
न् तस्यश्रीजिनस्यपादपंकजंचरणकमलंसंसम्यक् आश्रयणंकरो
ति अनेननअनेनचंदनंप्रक्षिप्यतेटीप्पकांदीयते ॥१॥ इतिटीका ॥ इहां
भीचरणनिकेंटीपिकीहीदेना तथाछापनालिखाहै ॥ बहुरिफेरि
भीसःनो धर्मकीर्तिकृतनंदीश्वरस्यजिनबिंबकी पूजाविषैंभीजि
नमूर्तिकेचर्णयुगलपैंगंधद्रव्यकालेपहीलगावनाकह्याहै ॥ तदुक्तं
काव्यं ॥ कर्पूरकुंकुमरसेनसःचंदनेनयेजैनपादयुगलंपरिलेपयंति
॥ तिष्ठंतितेभविजनाःसःस्रग्गंधगंधादिव्यांगनापरिवृतासततंवस
॥२॥ इहांऐसेकह्याहैं ॥ जोभव्यजीवकर्पूरकेंशरकारसकरिव-

तैअन्यरूपकहिनासोअयोग्यहैं॥ बहुरिफेरिभीहट्टहैतोऔर
रूनिहुं॥ उक्तंच ॥ भावसंगाहनामग्रंथे॥ गाथा ॥चंदनसुगंध
लेऊजिनवरचलणेसकुणजोभविऊ॥ लहइतणुविकिरियं
सहायसुपधयंविमलं॥१॥ इहांऐसाकह्याहैजोभव्यजीवचंद
नकासुगंधलेपश्रीजिनचर्णनिविषैंकरैहै॥
नर्मलशरीरस्वर्गमेंपावैहै॥ इहांहमपूंछेहैं ॥सोन्वर्चयामिका
अर्थकुंयुक्तिकारितुमनेंअन्यरूपकिया तोइहांलेपशब्दकाकहा-
॥यातेंअसत्यकीदोरियोरीहीजानना॥ बहुरिपद्मनंदीस्वा-
मीनेंभीपद्मनंदीपचीसीविषेंपूजाप्रकर्णमें ऐसैंही कहीहै॥ तदु
क्तंकाव्यं॥ यद्दद्वचोजिनपतेभवतापहारीनाहंसुशीतलमपीहभ-
वामितदूत्॥ कर्पूरचंदनमितं

तात्मकहै॥ तदुक्तं ॥स्याद्वादनायकमनेनचतुष्टयार्हं ॥यातेंचर्च्चया
मिकैपूजागर्भितबहुधाअर्थहै॥सोकहतिहै॥ ॥श्लोक॥ ॥
वनेचादौचर्च्चयामिइतिवदेत्॥ऐसेचर्च्चयामिपदकेलेपमें अरसे
वर्जेहै॥बहुरिहेमीनाममालामैंभीचंदनादिकैतिलकतथाटिपि
कादितैपूजाकानामकह्याहै॥तहांचर्च्चयामिकाभीएकहीअर्थलि
ख्याहै॥ ॥तदुक्तं॥ ॥हेमकोषे॥ ॥चंदनादितिलकटिप्पिकादीं
तैंपूजाकरैताकानाम चर्चिक्यंसमालभंचर्चिस्यात्॥
चर्च्चयामिकाअर्थपूजाविषैंतिलकविलेपनआदिहीजानना॥
रिपूजानामका तथाचर्च्चयामिका तथाअर्चयामिकाअर्थभीशोभा
यमान तथा आभूषिततथासंयुक्तआदिअर्थहोयहै॥जाकूं
सद्द्रव्यकरिआभूषितकरना ताकानामपूजाहै॥ औरअपनीबुं

द्रव्यकाविलेपनलगावनाकह्याहै सोकिंचितइहांलिखियेहैं॥ ॥ तदुक्तं ॥श्रीवसुनंदीकृतप्रतिष्ठापाठे॥ ॥श्लोकः॥ ॥कर्पूरैलालवंगादिद्रव्यमिश्रितचंदनैः॥सौगंधवासिताशेषदिग्मुखैरर्चयेज्जिनम्॥१॥इहांभीकपूरइलायची लवंग बहुरि आदिशब्दतैंके द्रव्यकरिमिश्रितज्योचंदनादिसुगंधद्रव्यताकीसुगंधकरिसमस्त दशासुगंधितहोय॥ऐसासुगंधद्रव्यकरिजिनमूर्तिकूंचर्चनी ॥चर्चयामिकाअर्थतोपूजाहिहै॥लगावनानाहिहै॥यातैंहमदूर हतैंपूजैंहिहैं॥ ताकाउत्तर ॥ भोहहमाहोहो विनाशास्त्रमनो लैनासोजैनीकीरीतिहैनाहीं॥यहतोशास्त्रबाह्यकीरी तेहैं॥यातैंसर्वमतमैंशास्त्रकैवाक्यानुसाररीतिहैं॥तुमनेचर्चयामि कांतकरिकह्यासोजिनवचनतोस्याद्वादअनेका

त तथा शैवोक्तरीतिमिलती

है ताकूंकैसेतजिये॥ देवपूजाभिषेक तथा

शास्त्र गुरुआदितीर्थयात्रा प्रतिष्ठा उपवीतिका तथा आ

न एकसो आठक्रिया आदिनाभाविधिकै विधानमैं घणीहीरीतिअ

न्यमतसैं मिलतहै॥ सोकैसेनिषेधहैं॥ याते आचार्यनिकै

रं श्रद्धाज्ञानाचरणपालिना सोही सारहै॥ बहुरि प्रतिमाकी प्र

।छे पूजनीकहोय॥ सोसंघहितथाप्रतिष्ठाचार्यप्रतिमाकै-

देसुगंधद्रव्यकाप्रतिमाकैललाटविषैंतिलककरैतो

न कैकेसरकालगानेकानिषेधकरणाबृथाहैं॥ याकावर्णनआगैं

स्तारतैंहोयगा॥ यानैवृथाहढकरणाएकांतपक्षकाकारणहै॥ औ

रघणेहीशास्त्रमैंतथापूजापाठमैंजिनमूर्तिकेचरणकमलकैंचदनादि

पक्कतस्तेनसलेपंसंस्थितंतदा ॥ कार्यसिद्धिर्भवेत्येवंप्राणिनांव्रत-
शालिनम् ॥८॥ तदासौवस्त्रपालेनभूभुजापरयामुदा ॥ नानावस्त्रा
स्रवर्णाद्यैर्पूजितोलेपकारकः ॥९॥ इत्यादिकवर्णनहै सोइहांक
होकिंचितकेसरचंदनादिककेलगावनेकीकहावातहै ॥ बहुरिजि मूर्
र्तिकैजलगंधपुष्पकास्पर्शभीनहोयतोवहमूर्तिअपूज्यरहीजान-
ना ॥ ताकूंपूज्यनहीजानना ॥ इहांफेरिकोईकहै ॥ श्रीजिनमूर्ति
केलेपकत्यातोस्वेतांबरआगीरचैहै ताकानिषेधक्यूंकरंना यह-
भीतहूतहीहै ॥ यातेतुमभीनित्यआंगीरचवोकरो ॥ ताकाउत्तर ॥
स्वेतांबरोक्तकथनउनहीकेमतमैहै ॥ यहतोश्रीदिगंबरोक्तकथनहै
॥ सोउनकीसभावताकैसैंहोय ॥ तथासमानताकाभयकरिवचन-
बांधकीयेजायनाहीं ऐसैंतोस्वेतांबरोक्तरीति तथा वैष्णवोक्तरी-

कत्तैंपूजिकरिआनिहर्षितभया॥ ऐसैंआराधनाकथा
विषैंकह्याहै॥ तदुक्तं॥ ॥श्लोक॥ ॥अहिछत्रपुरेराजा
विचक्षणः॥ श्रीमज्जैनमतेभक्तोवसुमत्याभिधाप्रिया॥१॥
वसुपालेनकारितंभुवनोत्तमम्॥ लसत्सहस्रकूटश्रीजिनेंद्रभवने
शुभे॥२॥श्रीमत्पार्श्वजिनेंद्रस्यप्रतिमापापनाशिनी॥
कदातस्याभूपतेर्वचनेनच॥३॥दिनेलेपंदधत्युच्चैर्लेपकाराकला-
न्विताः॥ मांसादिसेवनास्तेतुततोराज्ञोसलेपकः॥४॥पतत्येवाशि-
तोसौघंकदर्थ्यंतोखिलाभृशम्॥एवंचकतिचिद्वारैःखेदाखिन्नोनृ
पादिके॥५॥तदेकेनपरिज्ञात्वालेपकारेणधीमताः॥ देवता
दिव्यांजिनेंद्रप्रतिमांहिताम्॥६॥कार्यसिद्धिर्भवेद्याव
निश्चलम्॥अवग्रहंसमादायमांसादिमुनिपार्श्वतः॥७॥ तस्याले

पनाकराया ॥ श्रीपार्श्वनाथकासहस्त्रकूटनामामंदिरविषैंश्रीपा
र्श्वनाथजीकामूलबिंबकेलेपचढावनेकीआज्ञाकरी ॥ बहुरितब
चित्रकारराजाकीआज्ञातैंतिसजिनमूर्तिकेलेपकिया ॥ सोचित्र
कारमांसभक्षीहुतातातैं लेपरात्रीविषैरह्यानाहीं ॥ तिसबिंबतैं
सीघ्रहीछूटीकरि पृथ्वीविषैंपडालगारह्यानाहीं तबफेरिदूसरे
दिनलेपचढाया फेरिरात्रीमैंगिरगया ॥ ऐसेकेतीकवार श्रीपा
नाथकीप्रतिमाकेचित्रकारनेलेपकिया सोरात्रिमैंछूट्या ॥ तबरा
जाआदिसर्वखेदखिन्नभये ॥ बहुरितबएकचित्रकारनेंश्री
कीदिव्यप्रतिमाकौंलेपचढानेकाकार्यकीसिद्धिनहोय तबलगमां
सादिकभक्षणकात्यागहै ॥ ऐसालेपपीछेतिसप्रतिमाकेलेपकी
या सोठहिरगया तब वहराजातिसचित्रकारकूं वस्त्राभरणादि

दितम् ॥ सांगोपांगंयथायुक्त्यापूजनीयंप्रतिष्ठितम् ॥ २ ॥ यातैं प्रतिष्ठीप्रतिमापूज्यहै ॥ सोप्रतिष्ठाचंदनकेसरआदिकगंधद्रव्य कूंघसिकरिजिनप्रतिमाकैलगायेंविनाकदापिहोयनाहीं यहनि-यमहै ॥ यातेंजिसकैलगावनेतैंजिनबिंबमैंपूज्यपदआवै तिसका निषेधकैसैंकरना ॥ अरुजोकरेहैसोआज्ञाबाह्यहै ॥ बहुरि इहां कहोगेकेयहतो प्रतिष्ठाकेसमयकीरीतिहै ॥ पीछैतोथोयडारैहैंस देवतारहैनाहींहै ॥ ताकूंकहियेहै नित्यपूजाविषैतथानैमित्तपूजा विषैं अभिषेकतथामहाभिषेकहोयतांहाभीपंचामृतकाअभिषे-कविषैंअंतमेंजिनमूर्तिकैकेसरआदिकगंधद्रव्यकाउवटणाहोय-है जाकेकेसरलगानेमैंकहादूषणहै ॥ बहुरिसोभीधुपजायऐसाक होगेतो एकअहिछत्रपुरकाराजावसुपालनें आपनेबचनकरिअ-

मेवनलेत्वस्यमीनः कमंतेमेवभुवंतर्दा ॥तेभव्यानामभिमतफलापारिजाताभवंति॥१॥ अथवार्ताकीभाषा ॥काव्यछंद ॥

पश्चापपचिन्मूरतजांहीं॥ तातेएकतिश्रालापनाहिंपहुंचेतुमतोंहीं॥ यातेंजडरूपवस्तुचैतन्यकूंनपहुंचेहै बहुरिजोकेसरआदिगंधद्रव्यकालगावनाहींनिषेधहै ॥ऐसाकहोगेतोशिल्पकारकीकीनीप्रतिमातोपूज्यहोयगा॥ अरप्रतिष्ठितप्रतिमाअपूज्यहो॥ यातेंऐसाहैनाहिं शास्त्रनिमेंतोअप्रतिष्ठितप्रतिमापूज्यहैनाहिं प्रतिष्ठाभयेंहीपूज्यहै॥ तदुक्तं ॥प्रतिष्ठापाठे॥ श्लोकः जिनेंद्राणांप्रतीमानापंचेकृतप्रतिष्ठयत्॥जिनभाषितमंत्रेणवंदनीयातदाभवेत्॥१॥ यद्दिंवंलक्षणैर्युक्तंशिल्पिशास्त्रानिव-

धुऊडदनामाधान्यकूं देखितेंही पात्रादिककूं फोडिकरि भागिजा
य तहांऊभैभीरहैनाहीं तैसैहीतुमाराकहनाभया ॥ सोकेंसर
लग्यतेंहीप्रतिमाकीप्रभुताजातिरहै ॥ अरधोवतेंहीपीछीदेशि
आवै ॥ बहुरिकेसरआदिकके लगिवेतें ऐसाहिहोयतो प्रतिमाकी
हीणशक्तिभई ॥ अरकेसरकीअधिकशक्तिभई ॥ बहुरिऐसीहि
णपदकीप्रतिमातें पापभी कटैनाहीं ॥ तो तुमारा दर्शनपूजना
दिककावृथाहीश्रमभया ॥ बहुरि एकऔरभी सुनोप्रतिमातोज
डस्वरूपीहै ॥ अरप्रभुकानिजद्रव्यचैतन्यरूपीहै ॥ सोकेसरका
चर्चिवेकरिप्रभूसरागीकेसेहोयहैं ॥ जडकैकेसरलगै चैतन्यकूं
दूषणलगैऐसामाननाभीवृथाभ्रमरूपहैं ॥ तदुक्तं ॥ वादिरा
जोक्तंएकीभावेमूल ॥ काव्यं वृत्तिर्वाचामपरसहशीनत्वमन्येन

कूं आज्ञावाल्यअरत्र्प्रविनईकैसैकहोहो॥वहतो
कहै॥बहुरिकेंसरकैलगिवैतैप्रतिमा
हीदीषैहै॥यातैंपूज्यपदनाहिंहै॥केंसरआदिगंधद्रव्यकूंधोये
हिपूज्यपदहैं॥ताकूंकहियेहै॥श्रीगुरुकेवाक्यनमानिमनोक्तच-
लनकरनाभीतोआज्ञाभंगपनाभया॥बहुरिजिनमूर्तिकूंप्रत्यक्षदे
रिवकरितांकूंनमस्कारभीनकरना॥तिससिवायअन्यकह्याअविन
यहै॥बहुरिकेंसरआदिगंधद्रव्यकूंधोयपूजनासोकेंसरकेलगिवे-
धोवेतेंप्रभुताजावेआवै तबयहतोबालककारिवलुनावतवातहै॥
बहुरिजैसेंकुदेवकामठमंदिरमेंकोइकुतमाखूतथाजरदानीलकाव-
स्वलेजायतोदेवताकालेजभागीजायकेवल पत्थरकीमूर्तिरहिजा-
य यातेंयाकानामछोतकहैहै॥तथारंगास्वामिकेवैष्णव वैरागीसा

लिखाहै किजोकुंकुमादिसुगंधद्रव्यकेलेपकरिवर्जितजिनबिंबके-
वर्णहै॥ ऐसीप्रतिमाकाजोदर्शनकरैहै सोज्ञानहीनपुरुषहै॥ बहु-
रिकुंकुमादिकेलेपकरिचर्च्चितजिनमूर्त्तिकेपदहैं ताकादर्शनकरैहै॥
सोज्ञानीहै॥ बडाधर्मात्माहै तिससिवायअन्यनाहिं ऐसा लिखा-
है॥ तदुक्तं॥ श्रीवसुनंदीजिनसंहितायां ॥श्लोक॥ अनार्चित-
पदद्वंद्वंकुंकुमादिविलेपनैः॥ बिंबपश्यतिजैनेंद्रंज्ञानहीनःसउच्य
ते ॥१॥ पश्यतोजिनबिंबस्यचर्च्चितंकुंकुमादिभिः॥ पादपद्मद्वयं-
भव्यैस्तद्वयंनैवधार्मिकैः॥२॥ इतिवचनात् ॥सोइहांतोऐसाक-
ह्याहैं॥ बहुरिकेतेकिअज्ञानिकुंकुमादिचर्च्चितपदकीप्रतिमाकूंवं
दिवेकात्यागकरैहैं सोआज्ञाबाह्यहैं॥ बहुरिसोजिनमूर्त्तिकाअर-
जिनशास्त्रकेवचनीकाअविनईहैं॥ नबफेरिकोईबोल्या ॥ ता-

है॥यातैंआज्ञाकापालिनासोबडाविनयहै अरधर्महै॥ तबफे-
रिबोला ॥चंदनलगायकरिपीछेपूजाकरणीसोकहांकहिहै ता
काउत्तर ॥श्रीउमास्वामिकृतश्रावगाचार्यमें कहिहै॥ तदुक्तं ॥
प्रभातेघनसारस्यपूजाकुर्याज्जिनेशिनां॥ इतिवचनात् ॥श्रीजि
नभगवानकीप्रभातमें घनसारज्योंकर्पूरसूंपूजाकरणी॥ भावार्थ
चंदनादीकर्पूरघसिताकेलगावना॥ तथाच॥श्रीचंदनेनविनानैवपू
जाकुर्यात्कदाचनः॥ इतिवचनात् ॥चंदनकेलेपविनाकदाचित्
भीपूजानकरणी ॥बहुरिइहांकर्पूरचंदनादीकूंजलधारावत् मा-
नोगेतोअरताकेपदकेविलेपनकाअर्थनहिंमानोगेतो पूर्वोक्तविलेप
नपदकाअर्थकूंकेसेनहिंमानोगे॥यातैंविलेपनहीआवेगा॥बहु-
रिफेरिभीहठहैतो॥औरसुनो ॥एकजिनसंहिताग्रंथहै तहां

हैं॥ केसरकूंधोयकरिपूजनीककरीपूजैहैं ताकूंकहियेहै॥ जि
नमतमैंहद्दकरिनासोएकांतपक्षकादूषणआवैगा॥ बहुरितवस
म्यक्तकानाशहोयगा॥ तबतुमाराश्रद्धानिपणाभीनरहैगा॥ या
तैंऐसैंकोईमूलशास्त्रविषैंनालिखानाहिहैं॥ सोचंदनादिककेले
पकीप्रतिमाअपूज्यहैं॥ सोकहो॥ अपनेमनतैंहितोकहीनजा-
य॥ बहुरितवफेरिबोला ॥ ऐसेनहींतोकेंसरचंदनकालगायेंवि
नाप्रतिमाजीकूंपूजेंवंदनैंमैंतोदोषनाहीहै॥ हमारेभावऐसाहि
हैं तुमारेभाववैसाहिहैं॥ ताकूंकहियेहै॥ यहआज्ञानाहिहैं॥-
सोचंदनादीकेचरचेबिनापूजाकरनी॥ प्रथमचंदनप्रतिमाजिकें-
चरणनिकेंस्नानपूर्वकलगायपीछेंपूजाकरणी॥ यहआचार्य्यनि-
कीअज्ञाहै॥ बहुरिआज्ञाकालोपवैंसिवाइअन्यकहाबडादूषण-

वर्जितं ॥ नशोभतेयतस्तस्मात्कुर्यादृष्टिप्रकाशकं ॥ १ ॥ अर्थना
शंविरोधंचतिर्यग्दृष्टेभयंनदा ॥ अधस्तात्पुत्रनाशंचभार्यामरण
मूर्द्धदृक् ॥ २ ॥ शोकमुद्वेगसंतापंसदाकुर्याधनक्षयम् ॥
भाग्यपुत्रार्थशांतिर्वृद्धिप्रदानकम् ॥ ३ ॥ सदोषानचकर्त्तव्याय
तस्यादशुभावहाः ॥ कुर्याद्रौद्रीप्रभोनाशंकृशांगी
॥ ४ ॥ साक्षिमांगीक्षयंकुर्यात्विलरीदुःखदायिनी ॥ विनेत्रानेत्र
विध्वंशीहीनवक्त्रात्वभोगिनी ॥ ५ ॥ व्याधिंमहोदरीकुर्याद्दृ
द्रोगंत्हृदयेकृशा ॥ अंगहीनासुतंहन्याशुष्कजंघानरेंद्रहा ॥ ६
॥ पादहीनाजनंहन्यात्कटिहीनाचवाहनं ॥ ज्ञात्वेनंपूजयेज्जैनी
प्रतिमादोषवर्जितम् ॥ ७ ॥ बहुरिऐसाहीवसुनंदिश्रावकाचारमें कह्या
हैं ॥ जोकेशरचर्चितप्रतिमासदोषीकहै यातैंहमवंदेपूजैंनहीं

दापिनमिलैहैं ॥ सदैवविभुक्षिलतारहैहैं ॥ बहुरिबडापेटकीप्र-
तिमाकूंपूजैताकूंरोगव्याधिकरैहैं ॥ बहुरिजाकाहृदयस्थलकृश
होयऐसीप्रतिमापूजकपुरुषांकेहृद्रोगकूंकरैहैं ॥ सो
शास्त्रमैंलिखाहैं ॥ बहुरिअंगहीनप्रतिमापुत्रकूंहणैहै ॥ २
दुर्बलीजंघाकीप्रतिमाराजपदकूंनाशैहैं ॥ बहुरि
जनकाहियेकुटुंबादिजनकूंहणैहैं ॥ बहुरिका
दिकवाहनकूंहणैहैं ॥ ऐसैपूर्वोक्तप्रकारजिनमूर्तिकेविषैदूषण
कूंटालिकरिजिनप्रतिमापूजनी यातेंजिनप्रतिमाजिनसाररवी-
जिनागममैंकहीहै तोभी पूर्वोक्तदूषणमैसूंकोईदूषणलगै तोपू-
जनीकनाहींहैं ॥ यातेंदूषणबर्जितप्रतिमापूजनी ॥ ऐसैग्रं
थविषैलिखाहै ॥ नदुक्तंश्लोक ॥ लक्षणैरपिसंयुक्तंबिंबंदृष्टिवि-

शोक उद्वेगसंतापकूं करैहै ॥ अरताकाधनकूंसदाक्षय करैहै ॥ ब
।शांतदृष्टिहोयसोप्रतिमापूजकके सौभाग्यकेअरपु-
त्रके अर शांतिवृद्धिकेदानके अर्थहै ॥ यानेंसदोषीकप्री
यानेंकरेतौअशुभनाहोयहै॥बहुरिजोजिनबिंबकूंरौद्रीरूपकरैहै
ताकेप्रभुताकानाशहोयहै॥ अरजोजिनमूर्तिकूं कृशांगीजोदुर्बलीकरै
है पुष्टनाहिंकरैहै तापूजककाद्रव्यकोक्षयहोयहै॥बहुरिजोसंक्षितांगी-
प्रतिमापूजककाक्षयकरैहै॥बहुरिजोछिद्रयुक्तप्रतिमा पूजककूंदुष-
दायनीहोयहै॥बहुरिनेत्रविनाप्रतिमानेत्रकीनाशकहोयहै॥इहांश्वेतांबर
वतनेत्रनजानना ॥ नेत्रकासंपूर्णचिन्हविनाप्रतिमाकूं पूजे ताके
नेत्रफुटैहै॥बहुरिमुखकरिहीणजिनमूर्तिकूं पूजैताकूं अभोग
कीप्राप्तिरहै॥ भावार्थ ॥ ताकेभोजनादिकभोगसामग्रीश्रेष्ठक

स्त्रविषे जिनप्रतिमाविषें दूषणलिखेहैं सोदूषणटालिप्र
करणी बहुरिजामैंकाएकभीदूषणलगेतोसो प्रतिमापूजनीक
नाहीहे॥ ऐसैकह्याहै ॥बहुरिशिल्पकूंनमानोगेतोजिन प्रति
ष्ठापाठविषेंभीजिनप्रतिमाकानिरूपणहैं ताहांभीसदोषीकप्र
तिमाकूं पूजनवर्ज्याहैं सोलिखियेहैं॥जोजिनबिंबशुभलक्षण
करिसंयुक्त अरदृष्टिकरिहीनहैं तो नशोभेहै॥यानेंदृष्टीप्रकाश
करनी॥ भावार्थ ॥ताकीनेत्रोन्मीलनक्रिया प्रतिष्ठाशास्त्रोक्तवि
धितैंकरनी॥ बहुरिजामैंभीजाकानेत्रकीवांक जकूं
पुरुषकाअर्थनाशअरविरोध बहुरिभयइन कूंकरैहैं॥
प्रतिमाकीनीचिदृष्टीहोयतोपूजककापुत्रनाशकरैहै॥
बिंबकी उर्ध्वदृष्टीहोयतोपूजककीस्त्रीकामरणकरैहै॥ अरताके

रकेसरकेलगानेमैप्रतिमासरागीहोयजायहैं ॥ वीतरागतानाकीमिट·
जायहै अपूज्यरहिजायहै यातेकेसरचंदनलगावनाकह्यालिखाहै ॥ ता
काउत्तर ॥ प्रथमतोजिनबिंबकेचरणकमलकेकेसरचंदनाा
वर्णनपूर्वोक्तश्लोकविषैंहीश्रीउमास्वामिनेकह्याहै सोटोडरमलकेवच
नींकुंमानिकरिउमास्वामिकेवचनमिथ्याकह्येजायनहीं ॥ बहुरिइसी·
ग्रंथविषैंआगेविस्तारकरिश्रीवसुनंदीभीकहैगा तहांतेजानना बहुरितु
मनेकहि वणारसीनेदोहाकह्यासोकेशरकेलगावनेतेंदूषणकोनिमि
त्तकह्याहै ॥ जिनप्रतिमाजिनसारखी जिनागममेंकहीहै ॥ ताभीतामेंके
ईदूषणपडेतोवंदनीकनाहीहै ॥ सोयाकेदूषणऔरहै केसरकालगाव
नेकानाहीहै तबकेसरकोईपूछि हमतोकेसरकादूषणजानेहै ॥ तुम·
नेऔरकोनसेदूषणकह्येसोकहो ॥ नाकूंकहियेहै ॥ शिल्पशा·

बहुरि और अधिक कलशनितैं स्नानका वर्णनन्नो मित्तते करै है महापुण्यका कारणभूत है ॥ बहुरि जिनमूर्त्तिके चरणकमल ऊपरि चंदन कपूर अगरु केसर आदि सुगंध द्रव्यकूं जलमैं मिलाय घसि करि ताका विलेपन करि शोभित करै है ॥ भावार्थ ॥ ताके चरणकमलकै चंदनादि द्रव्य लगावै है सो दूसरी लेपन पूजा है ॥ इहां कोई कहै ॥ यह अर्थ कैसे लिखा यतो कहिं नान सभवै ॥ बहुरि टोडरमल्ल कृत श्रावकाचार विषैं तो जिनबिंबके केसर चंदनादी का लगावना निषेध्या है ॥ बहुरि वणारसिदास कृत विलास विषैं ऐसे है ॥ दोहा ॥ जिनप्रतिमा जिन सारसी कही जिनागम मांहि ॥ ह दूषण लगे वंदनीक सो नाहि ॥ १ ॥ और केतेक श्रद्धानी भाई केशर चर्चित प्रतिमाकुं वंदे पूजे भी नाहि है ॥ ताकी केशर धोय करि वंदे पूजे है ॥

भलीपूजाकरनी सो कौनसीविधिहै जिनमूर्तिका एक
नेकैजलादितेंस्नानकरावना

मपूजाहै ॥१॥ भावार्थ ॥एककलशतथानवकलशतेंस्नानजि
नबिंबकातोनित्यपूजाविषेकह्याहैं ॥ बहुरिजोजिनमूर्तिकानि
त्यप्रतिएककलशतैंभीस्नाननहीकरेहै तो ताकै नित्यप्रति कल
ह कालऔरकुलकाविनाश तथा पुरकानाशआदिजानना ऐसे
हीनतासदैवरहैहै सोजिनसंहिताकादशमापरिच्छेद विषेकह्या
है॥ तदुक्तं ॥श्रीजिनसंहितायांभगवदेकसंधिविरचित॥ ॥
श्लोक॥ ॥ नित्यपूजाविधानेतु त्रिजगत्स्वामिनःप्रभोः॥कलशे
नैककेनापिस्नापननविगृह्यते॥१॥ विद्ध्याकलहं कालश्चिन-
स्छेदंसमाचरेत् ॥ कुलंविनाशयेद्भिन्नः पुराणंनाशयेत्पुरम् ॥२

जिनागमकी आपना विभवका बलकरिके विविधा जो अष्टप्रका
तथा इकवीसप्रकार आदि नानाप्रकार करि पूजा करै है सो निश्च
यतैं पूजाविधानकूं जानना ॥ इहां कोई पूंछे ॥ अष्टप्रकारकै
तो प्रसिद्ध है अर इकवीसप्रकारकी आदि बहुप्रकारकी कहीं नाहीं
सो कैसैं है ॥ ताका उत्तर ॥ श्रीउमास्वामीनै श्रावगाचार किया
है तामैं पूजाप्रकरण है तिहां लिखा हैं ॥ तदुक्तं ॥ काव्यम् ॥ स्ना
नैर्विलेपनविभूषितपुष्पवासदीपः प्रधूपफलतंदुलपत्रपूगैः ॥ नैः
वेद्यवारिवसनैश्चमरातपत्रवादित्रगीतनृतस्वस्तिककोषदूर्वा ॥
॥ १ ॥ इत्येकविंशतिविधे जिनराजपूजा चान्यतप्रियं तदहि भा
ववसेन योज्यम् ॥ इहां ऐसे कह्या है श्रीजिनराजकी पूजाकी इकि
वीसविधिनैं तथा इससिवाइ और भी आपना भावकै

ॐनमःसिद्धेभ्यः॥ ॥अथमनोमतिखंडनालिख्यते॥ ॥

हा॥ ॥बंदूंमेंअरिहंतपद नमूसिद्धसिवराय॥
धुके चरणनमूंसुखदाय॥१॥बंदूंश्रीजिनवानिकूं बंदूं
नधर्म॥जिनप्रतिमाजिनभुवनिकूं नमूंहरणवसुकर्म॥२॥मं
गलइहिविधिकरतही होतविघ्नसबनासि॥सुखसंपतिसहु
मिलतहै होतसुबुद्धिप्रकासि॥३॥ आगेप्रथमहीपूजाविधा
नकास्वरूपलिखेहैं॥ ॥गाथा॥ जिणसिद्धसूरि
जंसुयस्सविहवेणकिरईविविधपूज्जाणवियाणतपूजनविहाणं
॥ टीका ॥जिनसिद्धसूर्यूपाध्यायसाधूनांयनश्रुतस्यविभवब
लेनक्रियतेविवधापूजासाविजानिहितंपूजनाविधानं॥ अर्थ॥
जोअरहंतसिद्धआचार्यउपाध्यायसाधुकी बहुरिश्रुतकाहिये-

प्रस्तावना.

सज्जन सम्यग् ज्ञानी जैनी दिगंबरी आमनायका भाइयोंसें लघुता पूर्वक कहताहूं कि पूर्व परंपरायसें केवलीके बचन अनुसार गणधरादिक आचार्य मुनिधर्म दोय प्रका प्ररूपना करीहै नामे ग्रहस्तका धर्म दान पूजा मंदिर प्रतिष्ठादि आचार्यके हुकुम प्रमाण करना ऐसा उपदेश भोगी ग्रहस्तीकूं करना कह्याहै मुनीकूं सर्वता प्रकार भोगादिक - करना बरज्याहै. भावार्थ जिसका जैसा दर्जा उसकूं वैसा करना जोगहै इस पंचमा काल में जैनी दिगंबरी आमनायमें केताक ग्रहस्ती भोगी पूर्व आचार्यका बचनाकूं नहीं मा नकरके पूजन विधानादिक आपनी मनकल्पनासें यद्वा तद्वा कल्पित करेहै बहुरि कोई भद्रश्रावग पूर्व आचार्य के बचन अनुसार पूजाविधान दीप धूप कपूरादिक करैहै. तासें मनो मति बैर बिरोध करैहै वाकी निवृत्ती इस पुस्तकके पढणें वाचणेसें होयगी. वास्ते इस पुस्तककूं बांचना पढना समझना समजावना उपदेस देना जोगहै इति ॥ ॥

मंदिर.
श्रीजिनेंद्र पूजाविधान.
पूजनसामग्री
पूजक.
सभा.

अथमनोमतिखंडनप्रारंभः